ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ॐ खम् ब्रह्म।।

जो आदित्य पुरुष (ईश्वर) है, वह मैं हूँ। ओम् सर्वव्यापक ब्रह्म है।।

स्वामी शरण कृत

वेद गीतायन

चारो वेदों से चुने हुए गीतात्मक सूक्त

प्रकाशक :

पालीवाल प्रकाशन

पालीवाल भवन, 117/एच-1/02, पाण्डु नगर,
जे. के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

वेबसाइट - **vedayan.simplesite.com**

मो. 9839105629, 8687849004, 7985402016

मूल्य : तीन सौ रुपये मात्र

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ॐ खम् ब्रह्म।।

जो आदित्य पुरुष (ईश्वर) है, वह मैं हूँ। ओम् सर्वव्यापक ब्रह्म है।।

पुस्तक	:	**वेद गीतायन**
लेखक	:	स्वामी शरण
सर्वाधिकार	:	लेखकाधीन
संस्करण	:	प्रथम, 2020 ई. (मकर संक्रान्ति, 2076 वि., 5121 युगाब्द)
मूल्य	:	रु.300/—
प्रकाशक	:	पालीवाल प्रकाशन
मुद्रक	:	पालीवाल प्रकाशन

पालीवाल भवन, 117/एच-1/02, पाण्डु नगर,
जे. के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

गायत्री साहित्य केन्द्र

पालीवाल भवन, 117/एच-1/02, पाण्डु नगर,
जे. के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

वेबसाइट - vedayan.simplesite.com

मो. **9839105629, 8687849004, 7985402016**

VED GEETAYAN
BY SWAMI SHARAN

मूल्य : तीन सौ रुपये मात्र

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ॐ खम् ब्रह्म॥

जो आदित्य पुरुष (ईश्वर) है, वह मैं हूँ। ओम् सर्वव्यापक ब्रह्म है॥

विषय-सूची

1. निवेदन 6

ऋग्वेद

2. ऋग्वेद, प्रथम मण्डल 10
3. ऋग्वेद, द्वितीय मण्डल 27
4. ऋग्वेद, पञ्चम मण्डल 32
5. ऋग्वेद, षष्ठ मण्डल 39
6. ऋग्वेद, सप्तम मण्डल 41
7. ऋग्वेद, अष्टम मण्डल 41
8. ऋग्वेद, नवम मण्डल 48
9. ऋग्वेद, दशम मण्डल 56

सामवेद

10. सामवेद, प्रथमो अध्यायः 68
11. सामवेद, चतुर्थो अध्यायः 69
12. सामवेद, पञ्चमो अध्यायः 71
13. सामवेद, द्वादशो अध्यायः 71
14. सामवेद, त्रयोदशो अध्यायः 73
15. सामवेद, चतुर्दशो अध्यायः 78
16. सामवेद, पञ्चदशो अध्यायः 78
17. सामवेद, षोडशो अध्यायः 79
18. सामवेद, अष्टादशो अध्यायः 81
19. सामवेद, एकोनविंशो अध्यायः 81
20. सामवेद, त्रयोविंशो अध्यायः 82
21. सामवेद, पञ्चविंशो अध्यायः 83
22. सामवेद, षड्विंशो अध्यायः 85

23. सामवेद, सप्तविंशो अध्यायः 87

अथर्ववेद

24. अथर्ववेद, प्रथम काण्ड 88
25. अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड 95
26. अथर्ववेद, तृतीय काण्ड 113
27. अथर्ववेद, चतुर्थ काण्ड 124
28. अथर्ववेद, पञ्चम काण्ड 129
29. अथर्ववेद, षष्ठ काण्ड 130
30. अथर्ववेद, सप्तमो काण्ड 131
31. अथर्ववेद, नवम काण्ड 133
32. अथर्ववेद, दशमो काण्ड 135
33. अथर्ववेद, एकादशो काण्ड 146
34. अथर्ववेद, त्रयोदशो काण्ड 150
35. अथर्ववेद, सप्तदशो काण्ड 151
36. अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड 158
37. अथर्ववेद, एकोनविंशो काण्ड 166
38. अथर्ववेद, विंशो काण्ड 169

यजुर्वेद

39. यजुर्वेद, प्रथमो अध्यायः 188
40. यजुर्वेद, द्वितीयो अध्यायः 189
41. यजुर्वेद, तृतीयो अध्यायः 189
42. यजुर्वेद, चतुर्थो अध्यायः 191
43. यजुर्वेद, पञ्चमो अध्यायः 192
44. यजुर्वेद, षष्ठो अध्यायः 194
45. यजुर्वेद, सप्तमो अध्यायः 195
46. यजुर्वेद, अष्टमो अध्यायः 201
47. यजुर्वेद, नवमो अध्यायः 204
48. यजुर्वेद, दशमो अध्यायः 207

49. यजुर्वेद, एकादशो अध्यायः 209
50. यजुर्वेद, द्वादशो अध्यायः 210
51. यजुर्वेद, त्रयोदशो अध्यायः 210
52. यजुर्वेद, चतुर्दशो अध्यायः 214
53. यजुर्वेद, पञ्चदशो अध्यायः 221
54. यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः 226
55. यजुर्वेद, सप्तदशो अध्यायः 233
56. यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः 234
57. यजुर्वेद, एकोनविंशो अध्यायः 242
58. यजुर्वेद, विंशो अध्यायः 245
59. यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः 246
60. यजुर्वेद, द्वाविंशो अध्यायः 257
61. यजुर्वेद, त्रयोविंशो अध्यायः 262
62. यजुर्वेद, पञ्चविंशो अध्यायः 290
63. यजुर्वेद, षड्विंशो अध्यायः 293
64. यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः 295
65. यजुर्वेद, एकत्रिंशो अध्यायः 306
66. यजुर्वेद, द्वात्रिंशो अध्यायः 306
67. यजुर्वेद, चतुस्त्रिंशो अध्यायः 307
68. यजुर्वेद, पञ्चत्रिंशो अध्यायः 309
69. यजुर्वेद, सप्तत्रिंशो अध्यायः 310
70. यजुर्वेद, एकोनचत्वारिंशो अध्यायः 312

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्,

ॐ खम् ब्रह्म ॥

जो आदित्य पुरुष (ईश्वर) है, वह मैं हूँ।

ओम् सर्वव्यापक ब्रह्म है ॥

निवेदन

वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ तथा भारतीय धर्म-संस्कृति का मूल आधार है। वेद में अनेक सरस गेय गीतात्मक सूक्त हैं जो आधुनिक वातावरण में गायन के लिए रोचक और उपयोगी हो सकते हैं। हम वेदायन पुस्तक में इन्द्र सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, शिवसंकल्प सूक्त प्रस्तुत कर चुके हैं जो पर्याप्त लोकप्रिय भी हुए हैं। इसी लिए अब हम चारो वेदों से इन लयात्मक, सरस वेद-गीतों का चयन कर वेद-गीतायन पुस्तक प्रस्तुत कर रहे हैं।

वेद ही हमारा राष्ट्रीय ग्रन्थ है। अतः हमारा राष्ट्रगान भी वेद-सूक्त ही होना चाहिए, यह भावना हम सबकी है जो स्वाभाविक भी है। वैदिक राष्ट्रगान के रूप में इस पुस्तक में स्वराज्य सूक्त (ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 80) प्रस्तुत किया गया है। इसमें 16 मन्त्र हैं। यही स्वराज्य सूक्त सामवेद, अध्याय 4, सूक्त 7 में भी है। उसमें पाँच मन्त्र हैं।

इसका पाठक स्वागत करेंगे, ऐसी आशा हम सभी को है।

स्वामी शरण

चतुर्वेद भाष्यकार

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ॐ खम् ब्रह्म ॥

जो आदित्य पुरुष (ईश्वर) है, वह मैं हूँ। ओम् सर्वव्यापक ब्रह्म है॥

वैदिक राष्ट्रगान

स्वराज्य सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 80)

इत्था हि सोम इत् मदे, ब्रह्मा चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन् ओजसा, पृथिव्या निः शशा अहिम्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 1 ॥

सः त्वा अमदत् वृषा मदः, सोमः श्येनाभृतः सुतः।
येन वृत्रम् निः अद्भ्यः, जघन्थ वज्रिन् ओजसा।
अर्चन अनु स्वराज्यम्॥ 2 ॥

प्रेहि अभीहि धृष्णुहि, न ते वज्रो नि यंसते।
इन्द्र नृम्णम् हि ते शवो, हनो वृत्रम् जय आ अपो।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 3 ॥

निः इन्द्र भूम्या अधि, वृत्रम् जघन्थ निः दिवः।
सृजा मरुत्वतीः अव, जीवधन्या इमा अपो।
अर्चन् अनु स्वराज्यम॥ 4 ॥

इन्द्रो वृत्रस्य दोधतः, सानुम् वज्रेण हीडितः।
अभिक्रम्य अव जिघ्नते, अपः सर्माय चोदयन्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 5 ॥

अधि सानौ नि जिघ्नते, वज्रेण शतपर्वणा।
मन्दान इन्द्रो अन्धसः,सखिभ्यो गातुम् इच्छति।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 6 ॥

इन्द्र तुभ्यम् इत् अद्रिवो, अनुत्तम् वज्रिन् वीर्यम्।
यत् ह त्यम् मायिनम् मृगम्, तमु त्वत् मायया अवधीः।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 7 ॥

वि ते वज्रासो अस्थिरन्, नवतिम् नाव्या अनु।
महत् ते इन्द्र वीर्यम्, बाह्वोः ते बलम् हितम्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 8 ॥

सहस्रम् साकम् अर्चत्, परि ष्टोभत विंशतिः।
शता एनम् अनु अनोनवुः, इन्द्राय ब्रह्म उद्यतम्।
अर्चन अनु स्वराज्यम्॥ 9 ॥

इन्द्रो वृत्रस्य तविषीम्, निः अहन् सहसा सहः।
महत् तत् अस्य पौंस्यम्, वृत्रम् जघन्वान् असृजत्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 10 ॥

इमे चित् तव मन्यवे, वेपेते भियसा मही।
यत् इन्द्र वज्रिन् ओजसा, वृत्रम् मरुत्वान् अवधीः।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 11॥

न वेपसा न तन्यता, इन्द्रम् वृत्रो वि बीभयत्।
अभि एनम् वज्र आयसः, सहस्त्र-भृष्टिः आयत्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 12॥

यत् वृत्रम् तव च अशनिम्, वज्रेण समयोधयः।
अहिम् इन्द्र जिघांसतो, दिवि ते बद्बधे शवो।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 13॥

अभिष्टने ते अद्रिवो, यत् स्था जगत् च रेजते।
त्वष्टा चित् तव मन्यव, इन्द्र वेविज्यते भिया।
अर्चन् अनु स्व-राज्यम्॥ 14॥

नहि नु यात् अधीमसि, इन्द्रम् को विर्या परः।
तस्मिन् नृम्णम् उत क्रतुम्, देवा ओजांसि सम् दधुः।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 15॥

याम् अथर्वा मनुः पिता, दध्यङ् धियम् अत्नत।
तस्मिन् ब्रह्माणि पूर्वथा, इन्द्र उक्था सम् अग्मत्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 16॥

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ॐ खम् ब्रह्म॥
जो आदित्य पुरुष (ईश्वर) है, वह मैं हूँ। ओम् सर्वव्यापक ब्रह्म है॥

ॐ

ऋग्वेद

प्रथम मण्डल

अप्रतिष्कुतः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 7)

सः नो वृषन् अमुम् चरुम्, सत्रादावन् अपा वृधि।
अस्मभ्यम् अप्रतिष्कुतः॥ 6॥

वृषा यूथा इव वंसगः, कृष्टीः इयर्ति ओजसा।
ईशानो अप्रतिष्कुतः॥ 8॥

दाशुषे सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 8)

एवा हि अस्य सूनृता, विरप्शी गोमती मही।
पक्वा शाखा न दाशुषे॥ 8॥

एवा हि ते विभूतय, ऊतय इन्द्र मावते।
सद्यः चित् सन्ति दाशुषे॥ 9॥

पिब सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 16)

सः इमम् नः स्तोमम् आ गहि, उप इदम् सवनम् सुतम्।
गौरो न तृषितः पिब॥5॥

इमे सोमास इन्दवः, सुतासो अधि बर्हिषि।
तान् इन्द्र सहसे पिब॥6॥

अयम् ते स्तोमो अग्रियो, हृदिस्पृक् अस्तु शन्तमः।
अथा सोमम् सुतम् पिब॥7॥

मरुद्भिः अग्ने आ गहि सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 19)

प्रति त्यम् चारुम् अध्वरम्, गोपीथाय प्र हूयसे।
मरुद्भिः अग्ने आ गहि॥1॥

नहि देवः न मर्त्यः, महः तव क्रतुम् परः।
मरुद्भिः अग्ने आ गहि॥2॥

ये महः रजसः विदुः,विश्वे देवासो अद्रुहः।
मरुद्भि अग्ने आ गहि॥3॥

ये उग्रा अर्कम् आनृचुः, अनाधृष्टासः ओजसा।
मरुद्भि अग्ने आ गहि॥4॥

ये शुभ्राः घोरवर्पसः, सुक्षत्रासः रिशादसः।
मरुद्भि अग्ने आ गहि॥5॥

ये नाकस्य अधि रोचने, दिवि देवासः आसते।
मरुद्भि अग्ने आ गहि॥6॥

ये ईङ्खयन्ति पर्वतान्, तिरः समुद्रम् अर्णपम्।
मरुद्भि अग्ने आ गहि॥7॥

आ ये तन्वन्ति रश्मिभिः, तिरः समुद्रम् ओजसा।
मरुद्भि अग्ने आ गहि॥8॥

अभि त्वा पूर्वपीतये, सृजामि रोम्यम मधु।
मरुद्भि अग्ने आ गहि॥9॥

पितरम् च दृशेयम् मातरम् च सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 24)

कस्य नूनम् कतमस्य आमृतानाम्,
मनामहे चारु देवस्य नाम।

को नो मह्यै अदितये पुनः दात्,
पितरम् च दृशेयम् मातरम् च॥1॥

अग्नेः वयम् प्रथमस्य अमृतानाम्,
मनामहे चारु देवस्य नाम।
स नो मह्या अदितये पुनः दात्,
पितरम् च दृशेयम् मातरम् च॥2॥

अर्चन् अनु स्वराज्यम् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 80)

इत्था हि सोम इत् मदे, ब्रह्मा चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन् ओजसा, पृथिव्या निः शशा अहिम्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥1॥

सः त्वा अमदत् वृषा मदः, सोमः श्येनाभृतः सुतः।
येन वृत्रम् निः अद्भ्यः, जघन्थ वज्रिन् ओजसा।
अर्चन अनु स्वराज्यम्॥2॥

प्रेहि अभीहि धृष्णुहि, न ते वज्रो नि यंसते।
इन्द्र नृम्णम् हि ते शवो, हनो वृत्रम् जय आ अपो।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥3॥

निः इन्द्र भूम्या अधि, वृत्रम् जघन्थ निः दिवः।
सृजा मरुत्वतीः अव, जीवधन्या इमा अपो।
अर्चन् अनु स्वराज्यम॥4॥

इन्द्रो वृत्रस्य दोधतः, सानुम् वज्रेण हीडितः।
अभिक्रम्य अव जिघ्नते, अपः सर्माय चोदयन्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥5॥

अधि सानौ नि जिघ्नते, वज्रेण शतपर्वणा।
मन्दान इन्द्रो अन्धसः,सखिभ्यो गातुम् इच्छति।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥6॥

इन्द्र तुभ्यम् इत् अद्रिवो, अनुत्तम् वज्रिन् वीर्यम्।
यत् ह त्यम् मायिनम् मृगम्, तमु त्वत् मायया अवधीः।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥7॥

वि ते वज्रासो अस्थिरन्, नवतिम् नाव्या अनु।
महत् ते इन्द्र वीर्यम्, बाह्वोः ते बलम् हितम्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥8॥

सहस्रम् साकम् अर्चत्, परि ष्टोभत विंशतिः।
शता एनम् अनु अनोनवुः, इन्द्राय ब्रह्म उद्यतम्।
अर्चन अनु स्वराज्यम्॥9॥

इन्द्रो वृत्रस्य तविषीम्, निः अहन् सहसा सहः।
महत् तत् अस्य पौंस्यम्, वृत्रम् जघन्वान् असृजत्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 10॥

इमे चित् तव मन्यवे, वेपेते भियसा मही।
यत् इन्द्र वज्रिन् ओजसा, वृत्रम् मरुत्वान् अवधीः।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 11॥

न वेपसा न तन्यता, इन्द्रम् वृत्रो वि बीभयत्।
अभि एनम् वज्र आयसः, सहस्र-भृष्टिः आयत्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 12॥

यत् वृत्रम् तव च अशनिम्, वज्रेण समयोधयः।
अहिम् इन्द्र जिघांसतो, दिवि ते बद्बधे शवो।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 13॥

अभिष्टने ते अद्रिवो, यत् स्था जगत् च रेजते।
त्वष्टा चित् तव मन्यव, इन्द्र वेविज्यते भिया।
अर्चन् अनु स्व-राज्यम्॥ 14॥

नहि नु यात् अधीमसि, इन्द्रम् को विर्या परः।
तस्मिन् नृम्णम् उत क्रतुम्, देवा ओजांसि सम् दधुः।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 15॥

याम् अथर्वा मनुः पिता, दध्यङ् धियम् अत्नत।
तस्मिन् ब्रह्माणि पूर्वथा, इन्द्र उक्था सम् अग्मत्।
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 16॥

योज आ नु इन्द्र ते हरी सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 82)

उप उ षु शृणुही गिरो, मघवन् मा अतथा इव।
यदा न सूनृतावतः, करः इत् अर्थयास इत्।
योज आ नु इन्द्र ते हरी॥ 1॥

अक्षन् अमीमदन्त हि, अव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो, विप्रा नविष्ठया मती।
योज आ नु इन्द्र ते हरी ॥ 2॥

सु-संदृशम् त्वा वयम्, मघवन् वन्दिषीमहि।
प्र नूनम् पूर्ण-बन्धुरः, स्तुतो याहि वशान् अनु।
योज आ नु इन्द्र ते हरी॥ 3॥

सः घा तम् वृषणम् रथम्, अधि तिष्ठाति गोविदम्।
यः पात्रम् हारियोजनम्, पूर्णम् इन्द्र चिकेतति।
योज आ नु इन्द्र ते हरी॥ 4॥

युक्तः ते अस्तु दक्षिण, उत सव्यः शतक्रतो।
तेन जायाम् उप प्रियाम्, मन्दानो याहि अन्धसो,
योज आ नु इन्द्र ते हरी॥5॥

युनज्मि ते ब्रह्मणा केशिना,
हरी उप प्र याहि दधिषे गभस्त्योः।
उत् त्वा सुतासो रभसा अमन्दिषुः पूषण्वान्
वज्रिन् सम् ऊम पत्नया अमदः,
योज आ नु इन्द्र ते हरी।॥6॥

इन्द्रो अङ्ग सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 84)

यः एक इत् विदयते, वसु मर्ताय दाशुषे।
ईशानो अप्रतिष्कुतः इन्द्रो अङ्ग॥7॥

कदा मर्तम् अराधसम्, पदा क्षुम्पम् इव स्फुरत्।
कदा नः शुश्रवत् गिरः इन्द्रो अङ्ग।8।

यः चित् हि त्वा बहुभ्यः, आ सुतावान् आविवासति।
उग्रम् तत् पत्यते शवः इन्द्रो अङ्ग।9॥

वस्वीः अनु स्वराज्यम् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 84)

स्वादोः इत्था विषूवतो, मध्वोः पिबन्ति गौर्यः।
या इन्द्रेण सयावरीः, वृष्णा मदन्ति शोभथे,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥10॥

ताः अस्य पृशनायुवः, सोमम् श्रीणन्ति पृश्नयः।
प्रियाः इन्द्रस्य धेनवो, वज्रम् हिन्वन्ति सायकम्,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥11॥

ताः अस्य नमसा सहः, सपर्यन्ति प्रचेतसः।
व्रतानि अस्य सश्चिरे, पुरूणि पूर्वचित्तये,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥12॥

अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 94)

इमम् स्तोमम् अर्हते जातवेदसे,
रथम्-इव सम् महेमा मनीषया।
भद्रा हि नः प्रमतिः अस्य संसदि,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥1॥

यस्मै त्वम् आयजसे स साधति,
अनर्वा क्षेति दधते सुवीर्यम्।
स तूताव नैनम् अश्नोति अंहतिः,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥2॥

शकेम त्वा समिधम् साधया धियः,
त्वे देवा हविः अदन्ति आहुतम्।
त्वम् आदित्यान् आ वह तान् हि उश्मसि,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥3।

भराम इध्मम् कृणवामा हवींषि,
ते चितयन्तः पर्वणा पर्वणा वयम्।
जीवातवे प्रतरम् साधया धियो,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥4॥

विशाम् गोपा अस्य चरन्ति जन्तवो
द्विपत् च यत् उत चतुष्पत अक्तुभिः।
चित्रः प्रकेत उषसो महान् असि,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥5॥

त्वम् अध्वर्युः उत होता असि,
पूर्व्यः प्रशास्ता पोता जनुषा पुरोहितः।
विश्वा विद्वान् आर्त्विज्या धीर पुष्यसि,

अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥6॥

यो विश्वतः सुप्रतीकः सदृङ् असि,
दूरे चित् सन् तडित्-इव अति रोचसे।
रात्रिः चित् अन्धो अति देव पश्यस्य,
अग्ने सख्य मा रिषाम वयम् तव॥7॥

पुर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो,
अस्माकम् शंसो अभ्यस्तु दुढ्यः।
तत् आ जानीत उत पुष्यत वचो,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥8॥

वधैः दुः-शंसान् अप दूढ्यो जहि,
दूरे वा ये अन्ति वा के चित् अत्रिणः।
अथा यज्ञाय गृणते सुगम् कृधि
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥9॥

यत् अयुक्था अरुषा रोहिता रथे
वातजूता वृषभस्य-इव ते रवः।
आत इन्वसि वनिनो धूमकेतुना,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥10॥

अध स्वनात् उत बिभ्युः पतत्रिणो,
द्रप्सा यत् ते यवसादो वि अस्थिरन्।
सुगम् तत् ते तावकेभ्यो रथेभ्यो,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥ 11॥

अयम् मित्रस्य वरुणस्य धायसे,
अवयाताम् मरुताम् हेडो अद्भुतः।
मृडा सु नो भूतु एषाम् मनः पुनः,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥ 12॥

देवो देवानाम् असि मित्रो अद्भुतो,
वसुः वसुनाम् असि चारुः अध्वरे।
शर्मन स्याम तव सप्रथः-तमे,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥ 13॥

तत् ते भद्रम् यत् सम्-इद्धः स्वे दमे,
सोम- आहुतो जरमे मृडयत्तमः।
दधासि रत्नम् द्रविणम् च दाशुषे,
अग्ने सख्ये मा रिषामा वयम् तव॥ 14॥

मरुत्वन्तम् सख्याय हवामहे सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 101)

प्र मन्दिने पितुमत् अर्चत आ वचो,
यः कृष्णगर्भा निः अहन् ऋजिश्वना।
अवस्यवो वृषणम् वज्रदक्षिणम्,
मरुत्वन्तम् सख्याय हवामहे॥ 1॥

यो व्यंसम् जाहृषाणेन मन्युना,
यः सम्बरम् यो अहन् पिप्रुम् अव्रतम्।
इन्द्रो यः शुष्णम् अशुषम् नि अवृणक्,
मरुत्वन्तम् सख्याय हवामहे॥ 2॥

यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यम् महत्,
यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः।
यस्य इन्द्रस्य सिन्धवः सश्चति व्रतम्,
मरुत्वन्तम् सख्याय हवामहे॥ 3॥

यो अश्वानाम् यो गवाम् गोपतिः,
वशी य आरितः कर्मणि-कर्मणि स्थिरः।
वीडोः चित् इन्द्रो यो असुन्वतो वधो,
मरुत्वन्तम् सख्याय हवामहे॥ 4॥

यो विश्वस्य जगतः प्राणतः पतिः
यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत्।
इन्द्रो यो दस्यून् अधरान् अव-अतिरत्
मरुत्वन्तम् सख्याय हवामहे॥ 5॥

यः शूरेभिः हव्यो यो च भीरुभिः
यो धावद्भिः हूयते यः च जिग्युभिः।
इन्द्रम् यम् विश्वा भुवना अभि सम्-दधुः,
मरुत्वन्तम् सख्याय हवामहे॥ 6॥

रुद्राणाम् एति प्रदिशा विचक्षणो
रुद्रेभिः योषा तनुते पृथु ज्रयः।
इन्द्रम् मनीषा अभि अर्चति श्रुतम्
मरुत्वन्तम् सख्याय हवामहे॥ 7॥

वित्तम् मे अस्य रोदसी सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 1, सूक्त 105)

चन्द्रमा अप्सु अन्तः आ, सुपर्णो धावते दिवि।
न वो हिरण्यनेमयः, पदम् विन्दन्ति विद्युतो,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 1॥

अर्थम् इत् वै उ अर्थिन, आ जाया युवते पतिम्।
तुञ्जाते वृष्ण्यम् पयः, परिदाय रसम् दुहे,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 2॥

मो षु देवा अदः स्वः, अव पादि दिवः परि।
मा सोमस्य शंभुव, शूने भूम कदा चन,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 3॥

यज्ञम् पृच्छामि अवमम्, स तद् दूतो वि वोचति।
क्व ऋतम् पूर्व्यम् गतम्, कः तत् बिभर्ति नूतनो,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 4॥

अमी ये देवा स्थन त्रिषु, आ रोचने दिवः।
कत् वः ऋतम् कत् अनृतम्, क्व प्रत्ना वः आहुतिः।
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 5॥

कत् व ऋतस्य धर्णसि, कत् वरुणस्य चक्षणम्।
कत् अर्यम्णो महः पथा, अति कामेम दुढ्यो,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 6॥

अहम् सो अस्मि यः पुरा, सुते वदामि कानि चित्।
तम् मा व्यन्ति आध्यो वृको, न तृष्णजम् मृगम्,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 7॥

सम् मा तपन्ति अभितः,
सपत्नीः-इव पर्शवः।
मूषो न शिश्ना वि अदन्ति,
मा आध्यः स्तोतारम् ते शतक्रतो,
वित्तम् ने अस्य रोदसी॥ 8॥

अमी ये सप्त रश्मयः, तत्र मे नाभिः आतता।
त्रितः तत् वेद आप्तयः, स जामित्वाम रेभति,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 9॥

अमी ये पञ्च उक्षणो, मध्ये तस्थुः महो दिवः।
देवत्रा नु प्रवाच्यम्, सध्रीचीना नि वावृतुः,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 10॥

सुपर्णा एत आसते, मध्य आरोधने दिवः।
ते सेधन्ति पथो वृकम्, तरन्तम् यह्वती अपो,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 11॥

नव्यम् तत् उक्थयम् हितम्, देवासः सुप्रवाचनम्।
ऋतम् अर्षन्ति सिन्धवः, सत्यम् तातान सूर्यो,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 12॥

अग्ने तव त्यत् उक्थयम्, देवेषु अस्ति आप्यम्।
स नो सत्तो मनुष्वत्, आ देवान् यक्षि विदुष्टरो,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 13॥

सत्तो होता मनुष्वत्, आ देवान् अच्छा विदुष्टरः।
अग्निम् हव्या सुषूदति, देवो देवेषु मेधिरो,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥14॥

ब्रह्मा कृणोति वरुणो, गातुविदम् तम् ईमहे।
वि ऊर्णोति हृदा मतिम्, नव्यो जायताम् ऋतम्,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 15॥

असौ यः पन्था आदितयो, दिवि प्रवाच्यम् कृतः।
नस देवा अतिक्रमे, तम् मर्तासो न पश्यथ,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 16॥

त्रितः कूपे अवहितो, देवान हवते ऊतये।
तत् शुश्राव बृहस्पतिः, कृण्वन् अंहूरणात् उरु,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 17॥

अरुणो मा सकृद् वृकः, पथा यन्तम् ददर्श हि।
उत् जिहीते निचाय्या, तष्टेव पृष्ट्यामयी,
वित्तम् मे अस्य रोदसी॥ 18॥

ॐ

द्वितीय मण्डल

इन्द्रः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 2, सूक्त 12)

(203) सूक्त 12

यो जातः एव प्रथमो मनस्वान्,
देवः देवान् क्रतुना परि अभूषत्।
यस्य शुष्मात् रोदसी अभ्यसेताम्,
नृम्णस्य मह्ना, सः जनासः इन्द्रः ॥ 01 ॥

यः पृथिवीम् व्यथमानाम् अदृंहत्,
यः पर्वतान् प्रकुपितान् अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षम् विममे वरीयो,
यो द्याम् अस्तभ्नात्, सः जनास इन्द्रः ॥ 02 ॥

यो हत्वा अहिम् अरिणात् सप्त सिन्धून्,
यो गाः उदाजत् अपधा बलस्य।
यो अश्मनोः अन्तः अग्निम् जजान,
सम् वृक् समत्सु, सः जनास इन्द्रः ॥ 03 ॥

येन इमा विश्वा च्यवना कृतानि,
यो दासम् वर्णम् अधरम् गुहा अकः।

श्वघ्नी इव यो जिगीवान् लक्षम् आदद्,
अर्यः पुष्टानि, सः जनास इन्द्रः ॥ 04 ॥

यम् स्मा पृच्छन्ति कुह सः इति घोरम्,
उत ईम् आहुः न एषो अस्ति इति एनम्।
सो अर्यः पुष्टीः विज इव आ मिनाति,
श्रत् अस्मै धत्त, सः जनासः इन्द्रः ॥ 05।

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य,
यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो यो अविता सुशिप्रः,
सुतसोमस्य, सः जनासः इन्द्रः ॥ 06 ॥

यस्य अश्वासः प्रदिशि यस्य गावो,
यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यम् यः उषसम् जजान,
यो अपाम् नेता, स जनास इन्द्रः ॥ 07 ॥

यम् क्रन्दसी संयती विह्वयेते,
परे अवरः उभया अमित्राः।
समानम् चिद् रथम् आतस्थिवांसा।
नाना हवेते, सः जनास इन्द्रः ॥ 08 ॥

यस्मात् न ऋते विजयन्ते जनासो,
यम् युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानम् बभूव,
यो अच्युतच्युत्, सः जनास इन्द्रः। 09 ॥

यः शश्वतो महि एनो दधानान्,
अमन्यमानान् शर्वा जघान।
यः शर्धते न अनुददाति शृध्याम्।
यो दस्योः हन्ता, सः जनासः इन्द्रः ॥ 10 ॥

यः शम्बरम् पर्वतेषु क्षियन्तम्,
चत्वरिंश्याम् शरदि अनु अविन्दत्।
ओजायमानम् यो अहिम् जघान,
दानुम् शयानम्, सः जनास इन्द्रः ॥ 11 ॥

यः सप्तरश्मिः वृषभः तुविष्मान्,
अव असृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून।
यो रौहिणम् अस्फुरद् वज्रबाहुः,
द्याम् आ रोहन्तम्, सः जनास इन्द्रः ॥ 12 ॥

द्यावा चिद् अस्मै पृथिवी नमेते,
शुष्मात् चिद् अस्य पर्वता भयन्ते।
यः सोमपाः निचितो वज्रबाहुः,

यो वज्रहस्तः, सः जनास इन्द्रः ॥ 13 ॥

यः सुन्वन्तम् अवति यः पचन्तम्,
यः शंसन्तम् यः शशमानम् ऊती।
यस्य ब्रह्म वर्धनम् यस्य सोमो,
यस्य इदम् राधः, सः जनास इन्द्रः ॥ 14 ॥

यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद्,
वाजम् ददर्षि स किल असि सत्यः
वयम् ते इन्द्र, विश्वह प्रियासः,
सुवीरासो विदथम् आ वदेम ॥ 15 ॥

सत्यम् इन्द्रम् सत्यः इन्दुः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 2, सूक्त 22)

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरम्,
तुविशुष्मः तृपत् सोमम् अपिबत्,
विष्णुना सुतम् यथा अवशत्।
सः ईम् ममाद महि,
कर्म कर्तवे महाम् उरुम्,
सः एनम् सश्चत् देवः देवम्,
सत्यम् इन्द्रम् सत्यः इन्दुः ॥ 1 ॥

अध त्विषीमान् अभि ओजसा,
क्रिविम् युधा अभवत्,
आ रोदसी अपृणत्,
अस्य मज्मना प्र वावृधे।
अधत्त अन्यम् जठरे प्र ईम् अरिच्यत,
सः एनम् सश्चत् देवो देवम्,
सत्यम् इन्द्रम् सत्यः इन्दुः ।2॥

साकम् जातः क्रतुना,
साकम् ओजसा ववक्षिथ,
साकम् वृद्धो वीर्यैः,
सासहिः मृधो विचर्षणिः।
दाता राधः स्तुवते काम्यम् वसु,
सः एनम् सश्चत् देवो देवम्,
सत्यम् इन्द्रम् सत्यः इन्दुः ।3॥

ॐ

पञ्चम मण्डल

इषम् स्तोतृभ्य आ भर सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 5, सूक्त 6)

अग्निम् तम् मन्ये यो वसुः, अस्तम् यम् यन्ति धेनवः।
अस्तम् अर्वन्तः आशवो, अस्तम् नित्यासो वजिन,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर॥1॥

सो अग्निः यो वसुः गृणे, सम् यम् आयन्ति धेनवः।
सम् अर्वन्तो रघुद्रुवः, सम् सुजातासः सूरयः,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर॥2॥

अग्निः हि वाजिनम् विशे, ददाति विश्वचर्षणिः।
अग्नी राये स्वाभुवम्, सः प्रीतो याति वार्यम्,
इषम् स्तोतृभ्यः आ भर॥3॥

आ ते अग्ने इधीमहि, द्युमन्तम् देव अजरम्।
यत् ह स्या ते पनीयसी, समित् दीदयति द्यविः,
इषम् स्तोतृभ्यः आ भर॥4॥

आ ते अग्ने ऋचा हविः, शुक्रस्य शोचिषः पते।
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते, हव्यवाट् तुभ्यम् हूयते,

इषम् स्तोतृभ्यः आ भर ॥ 5 ॥

प्रो त्ये अग्नयो अग्निषु, विश्वम् पुष्यन्ति वार्यम्।
ते हिन्विरे ते इन्विरे, ते इषण्यन्ति आनुषक्,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर ॥ 6 ॥

त्व त्ये अग्ने अचर्यो, महि व्राधन्त वाजिनः।
ये पत्वभिः शफानाम्, व्रजा भुरन्त गोनाम्,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर ॥ 7 ॥

नवा नो अग्ने आ भर, स्तोतृभ्यः सुक्षितीः इषः।
ते स्याम य आनृचुः, त्वा-दूतासो दमे-दम,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर ॥ 8 ॥

उभे सुश्चन्द्र सर्पिषः, दर्वी श्रीणीषे आसनि।
उतो नः उत्पुपूर्याः, उक्थेषु शवसः पते,
इषम् स्तोतृभ्यः आ भर ॥ 9 ॥

एवाँ अग्निम् अजुर्यमुः, गीर्भिः यज्ञेभिः आनुषक्।
दधत् अस्मे सुवीर्यम्, उत त्यत् आश्वश्व्यम्,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर ॥ 10 ॥

तव अहम् अस्मि सख्ये न्योका सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 5, सूक्त 44)

यो जागार तम् ऋचः कामयन्ते,
यो जागार तम् उ सामानि यन्ति।
यो जागार तम् अयम् सोमः आह,
तव अहम् अस्मि सख्ये न्योकाः ॥ 14 ॥

अग्निः जागार तम् ऋचः कामयन्ते,
अग्निः जागार तम् उ सामानि यन्ति।
अग्निः जागार तम् अयम् सोमः आह,
तव अहम् अस्मि सख्ये न्योकाः ॥ 15 ॥

माध्वी मम श्रुतम् हवम् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 5, सूक्त 75)

प्रति प्रियतमम् रथम्, वृषणम् वसुवाहनम्।
स्तोता वाम् अश्विनौ ऋषि, स्तोमेन प्रति भूषति,
माध्वी मम श्रुतम् हवम् ॥ 1 ॥

अति आयातम् अश्विना, तिरो विश्वाः अहम् सना।
दस्रा हिरण्यवर्तनी, सुषुम्णा सिन्धुवाहसा,
माध्वी मम श्रुतम् हवम् ॥ 2 ॥

आ नो रत्नानि बिभ्रतौ, अश्विना गच्छतम् युवम्।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी, जुषाणा वाजिनी-वसू,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥3॥

सुस्टु भो वाम् वृषण्वसू, रथे वाणीची आहिता।
उत वाम् ककुहः मृगः, पृक्षः कृणोति वापुषः,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥4॥

बोधित् मनसा रथ्या, इषिरा हवन श्रुता।
विभिः च्यवानम् अश्विना, नि याथः अद्वयाविनम्,
माध्वी मम् श्रुतम् हवम्॥5॥

आ वाम् नरा मनोयुजः, अश्वासः प्रुषितप्सवः।
वयः बहन्तु पीतये, सह सुम्नेभिः अश्विना,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥6॥

अश्विनौ आ इह गच्छतम्, नासत्या मा वि वेनतम्।
तिरः चित् अर्यया परि, वर्तिः यातम् अदाम्या,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥7॥

अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या, जरितारम् शुभः पती।
अवस्युम् अश्विना युवम्, गृणन्तम् उप भूषथः,
माध्वी मम् श्रुतम् हवम्॥8॥

अभूत् उषाः रुशत्-पशुः, आ अग्नि अधायि ऋत्वियः।
अयोजि वाम् वृषण्वसू, रथः दस्रौ अमर्त्यः,
माध्वी मम श्रुतम् हवम् ॥9॥

सुजाते अश्वसूनृते सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 5, सूक्त 79)

महे नो अद्य बोधय, उषो राये दिवित्मती।
यथा चित् नो अबोधय, सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥1॥

या सुनीथे शौचद्रथे, व्यौच्छो दुहितः दिवः।
सा व्युच्छ सहीयसि, सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥2॥

सा नो अद्य आ भरत्-वसुः, वि उच्छा दुहितः दिवः।
यः वि औच्छः सहीयसि, सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥3॥

अभि ये त्वा विभावरि, स्तोमैः गृणन्ति वह्नयः।
मघैः मघोनि सुश्रियः, दामन् वन्तः सुरातयः,
सुजाते अश्वसूनृते॥4॥

यत् चित् हि ते गणाः, इमे छदयन्ति मघत्तये।
परि चित् वष्टयः दधुः, ददतः राधः अह्रयम्,
सुजाते अश्वसूनृते॥ 5॥

आ एषु धाः वीरवत्, यशः उषः मघोनि सूरिषु।
ये नः राधांसि अह्रया, मघवानः अरासत,
सुजाते अश्वसूनृते॥ 6॥

तेभ्यः द्युम्नम् बृहत्, यशः उषः मघोनि आ वह।
ये नः राधांसि अश्व्या, गव्या भजन्त सूरयः,
सुजाते अश्वसूनृते॥ 7॥

उत नः गोमतीः इषः, आ वहा दुहितः दिवः।
साकम् सूर्यस्य रश्मिभिः, सुक्रैः शोचद्भिः अर्चिभिः,
सुजाते अश्वसूनृते। 8॥

वि उच्छ दुहितः दिवः, मा चिरम् तनुथाः अपः।
न इत् त्वा स्तेनम् यथा, रिपुम् तपाति सूरः अर्चिषा,
सुजाते अश्वसूनृते।॥ 9॥

एतावत् वा इत् उषः त्वम्, भूयः वा दातुम् अर्हसि।
या स्तोतृभ्यः विभावरि, उच्छन्ती न प्रमीयसे,
सुजाते अश्वसूनृते। 10॥

सुव सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 5, सूक्त 82)

(446) सूक्त 82

4297. अद्य आ नो देव सवितः,
प्रजावत् सावीः सौभगम्।
परा दुःष्वप्न्यम् सुव॥ 4॥ 5-82-4

4298. विश्वानि देव सवितः,
दुःइतानि परा सुव।
यत् भद्रम् तत् नः आ सुव॥ 5॥

सविता सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 5, सूक्त 82)

4301. यः इमे उभे अहनी,
पुरः एति अप्रयुच्छन्।
स्वाधीः देवः सविता॥ 8॥

4302. यः इमा विश्वा जातानि,
आश्रवयति श्लोकेन।
प्र च सुवाति सविता॥ 9॥

इति पञ्चम मण्डल

ॐ

षष्ठ मण्डल

जनयन्त देवाः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 6, सूक्त 7)

मूर्धानम् दिवो अरतिम् पृथिव्याः,
वैश्वानरम् ऋते आ जातम् अग्निम्।
कविम् सम्राजम् अतिथिम् जनानाम्,
आसन् आ पात्रम् जनयन्त देवाः॥ 1॥

नाभिम् यज्ञानाम् सदनम् रयीणाम्,
महाम् आहावम् अभि सम् नवन्त।
वैश्वानरम् रथ्यम् अध्वराणाम्,
यज्ञस्य केतुम् जनयन्त देवाः॥ 2॥

अयम् सः सोमः इन्द्र ते सुतः पिब सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 6, सूक्त 43)

यस्य त्यत् शम्बरम् मदे, दिवोदासाय रन्धयः।
अयम् सः सोमः इन्द्र ते सुतः पिब॥ 1।

यस्य तीव्रसुतम् मदम्,मध्यम् अन्तम् च रक्षसे।
अयम् सः सोमः इन्द्र ते सुतः पिब॥ 2॥

यस्य गाः अन्तः अश्मनः, मदे दृह्डाः अवासृजः।
अयम् सः सोमः इन्द्र ते सुतः पिब॥ 3॥

यस्य मन्दानः अन्धसः, माघोनम् दधिषे सवः।
अयम् सः सोमः इन्द्र ते सुतः पिब॥ 4॥

अस्ति स्वधापते मदः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 6, सूक्त 44)

यो रयिवो रयिन्तमो, यो द्युम्नैः द्युम्नवत्तमः।
सोमः सुतः सः इन्द्र ते, अस्ति स्वधापते मदः॥ 1॥

यः शग्मः तुविशग्म ते, रायः दामा मतीनाम्।
सोमः सुतः सः इन्द्र ते, अस्ति स्वधापते मदः॥ 2॥

येन वृद्धः न शवसा, तुरः न स्वाभिः ऊतिभिः।
सोमः सुतः सः इन्द्र ते, अस्ति स्वधापते मदः॥ 3॥

इति षष्ठ मण्डल

ॐ

सप्तम मण्डल

वसो सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 7, सूक्त 31)

त्वम् नः इन्द्र वाजयुः, त्वम् गव्युः शतक्रतो।
त्वम् हिरण्ययुः वसो ॥ 3 ॥

वयम् इन्द्र त्वायवो, अभि प्र णोनुमो वृषन्।
विद्धी तु अस्य नो वसो ॥ 4 ॥

इति सप्तम मण्डल

ॐ

अष्टम मण्डल

अन्ति सत् भूतु वाम् अवः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 73)

उदीराथाम् ऋतायते, युञ्जाथाम् अश्विना रथम्।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 1 ॥

निमिषः चित् जवीयसा, रथेन आ यातम् अश्विना।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 2 ॥

उप स्तृणीतम् अत्रये, हिमेन घर्मम् अश्विना।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 3 ॥

कुह स्थः कुह जग्मथुः, कुह श्येना इव पेतथुः।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 4 ॥

यत् अद्य कर्हि कर्हि चित्, शुश्रुयातम् इमम् हवम्।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 5 ॥

अश्विना याम-हूतमा, नेदिष्ठम् यामि आप्यम्।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 6 ॥

अवन्तम् अत्रये गृहम्, कृणुतम् युवम् अश्विना।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 7 ॥

वरेथे अग्निम् आतपः, वदते वल्गु अत्रये।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 8 ॥

प्र सप्तवध्रिः आशसा, धाराम् अग्नेः अशायत।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 9 ॥

इह आ गतम् वृषण्वसू, शृणुतम् मे इमम् हवम्।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 10 ॥

किम् इदम् वाम् पुराणवत्, जरतोः इव शस्यते।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 11 ॥

समानम् वाम् सजात्यम्, समानः बन्धुः अश्विना॥
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 12 ॥

यः वाम् रजांसि अश्विना, रथः वियाति रोदसी।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 13 ॥

आ नः गव्येभिः अश्वयैः, सहस्रैः उप गच्छतम्।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 14 ॥

मा नः गव्येभिः अश्व्यैः, सहस्रेभिः अति ख्यतम्।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 15 ॥

अरुणाप्सुः उषाः अभूत्, अकः ज्योतिः ऋतवरी।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 16 ॥

अश्विना सु विचाकशत्, वृक्षम् परशुमान् इव।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 17 ॥

पुरम् न धृष्णो आ रुज, कृष्णया बाधितः विशा।
अन्ति सत् भूतु वाम् अवः ॥ 18 ॥

पिब इत् अस्य त्वम् ईशिषे सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 82)

यः इन्द्र चमसेषु आ, सोमः चमूषु ते सुतः।
पिब इत् अस्य त्वम् ईशिषे ॥ 7 ॥

यः अप्सु चन्द्रमाः इव, सोमः चमूषु ददृशे।
पिब इत् अस्य त्वम् ईशिषे ॥ 8 ॥

यम् ते श्येनः पदा आ, अभरत् तिरः रजांसि अस्पृतम्।
पिब इत् अस्य त्वम् ईशिषे ॥ 9 ॥

गिरः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 84)

अध आ त्वम् हि नः करो, विश्वा अस्मभ्यम् सुक्षितीः।
वाजद्रविणसो गिरः ॥ 6 ॥

कस्य नूनम् परीणसि, धियो जिन्वसि दम्पते।
गोषाता यस्य ते गिरः ॥ 7 ॥

यत् इन्द्र मृडयासि नः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 93)

भद्रम् भद्रम् नः आ भर, इषम् ऊर्जम् शतक्रतो।
यत् इन्द्र मृडयासि नः ॥ 28 ॥

सः नः विश्वानि आ भर, सुवितानि शतक्रतो।
यत् इन्द्र मृडयासि नः ॥ 29 ॥

त्वाम् इत् वृत्रहन्तम, सुतावन्तः हवामहे।
यत् इन्द्र मृडयासि नः ॥ 30 ॥

उप नो हरिभिः सुतम् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 93)

उप नो हरिभिः सुतम्, याहि मदानाम् पते।
उप नो हरिभिः सुतम् ॥ 31 ॥

द्विता यो वृत्रहन्तमो, विदे इन्द्रः शतक्रतुः।
उप नो हरिभिः सुतम् ॥ 32 ॥

त्वम् हि वृत्रहन् एषाम्, पाता सोमानाम् असि।
उप नो हरिभिः सुतम् ॥ 33 ॥

पतिः दिवः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 98)

आ इन्द्र नो गधि प्रिय, सत्राजित् अगोह्य।
गिरिः न विश्वतः, पृथुः पतिः दिवः ॥ 4 ॥

अभि हि सत्य सोमपाः, उभे बभूथ रोदसी।
इन्द्र असि सुन्वतोष, वृधः पतिः दिवः ॥ 5 ॥

त्वम् हि शश्वतीनाम्, इन्द्र दर्त्ता पुराम् असि।
हन्ता दस्योः मनोः, वृधः पतिः दिवः ॥ 6 ॥

अग्निम् समुद्रवाससम् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 102)

और्वभृगुवत् शुचिम्, अप्नवानवत् आ हुवे।
अग्निम् समुद्रवाससम् ॥ 4 ॥

हुवे वातस्वनम् कविम्, पर्जन्यक्रन्द्यम् सहः।
अग्निम् समुद्रवाससम् ॥ 5 ॥

आ सवम् सवितुः यथा, भगस्यइव भुजिम् हुवे।
अग्निम् समुद्रवाससम् ॥ 6 ॥

अग्नये सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 103)

यः विश्वा दयते वसु, होता मन्द्रः जनानाम्।
मधोः न पात्रा प्रथमानि अस्मै, प्र स्तोमाः यन्ति अग्नये ॥ 6 ॥

अश्वम् न गीर्भिः रथ्यम्, सुदानवः मर्मृज्यन्ते देवयवः।
उभे तोके तनये दस्म, विश्पते पर्षि राधः मघोनाम् ॥ 7 ॥

प्र मंहिष्ठाय गायत, ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे।
उपस्तुतासो अग्नये ॥ 8 ॥

स्वध्वरः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 8, सूक्त 103)

मा नः हृणीताम् अतिथिः,
वसुः अग्निः पुरुप्रशस्तः एषः।
यः सुहोता स्वध्वरः ॥ 12 ॥

मो ते रिषन् ये अच्छोक्तिभिः,
वसो अग्ने केभिः चित् एवैः।
कीरिः चित् हि त्वाम् ईट्टे दूत्याय,
रातहव्यः स्वध्वरः ॥ 13 ॥

इति अष्टम मण्डल

ॐ

नवम मण्डल

अथा नो वस्यसः कृधि सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 4)

सन आ च सोम जेषि, च पवमान महि श्रवः।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 1 ॥

सन आ ज्योतिः सन आ स्वः, विश्वा च सोम सौभगा।
अथा नः वस्यसः कृधि ॥ 2 ॥

सन आ दक्षम् उत क्रतुम्, अप सो मृधः जहि।
अथा नः वस्यसः कृधि ॥ 3 ॥

पवीतारः पुनीतन, सोमम् इन्द्राय पातवे।
अथा नः वस्यसः कृधि ॥ 4 ॥

त्वम् सूर्ये नः आ भज, तव क्रत्वा तव ऊतिभिः।
अथा नः वस्यसः कृधि ॥ 5 ॥

तव क्रत्वा तव ऊतिभिः, ज्योक् पश्येम सूर्यम्।
अथा नः वस्यसः कृधि ॥ 6 ॥

अभि अर्ष स्वायुध, सोम द्विबर्हसम् रयिम्।
अथा नः वस्यसः कृधि॥ 7॥

अभि अर्ष अनपच्युतः, रयिम् समत्सु ससहिः।
अथा नः वस्यसः कृधि॥ 8॥

त्वाम् यज्ञैः अवीवृधन्, पवमान विधर्मणि।
अथा नः वस्यसः कृधि॥ 9॥

रयिम् नः चित्रम् अश्विनम्, इन्दो विश्वायुम् आ भर।
अथा नो वस्यसः कृधि॥ 10॥

देववीतये सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 13)

पवमानम् अवस्यवो, विप्रम् अभि प्र गायत।
सुष्वाणम् देववीतये॥ 2॥

पवन्ते वाजसातये, सोमाः सहस्त्रपाजसः।
गृणाना देववीतये॥ 3॥

मदेषु सर्वधा असि सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 18)

परि सुवानो गिरिष्ठाः, पवित्रे सोमो अक्षाः।
मदेषु सर्वधा असि॥ 1॥

त्वम् विप्रः त्वम् कविः, मधु प्र जातम् अन्धसः।
मदेषु सर्वधा असि॥ 2॥

तव विश्वे सजोषसो, देवासः पीतिम् आशत।
मदेषु सर्वधा असि॥ 3॥

आ यः विश्वानि वार्या, वसूनि हस्तयोः दधे।
मदेषु सर्वधाः असि॥ 4॥

यः इमे रोदसी मही, सम् मातरा इव दोहते।
मदेषु सर्वधाः असि॥ 5॥

परि यः रोदसी उभे, सद्यः वाजेभिः अर्षति।
मदेषु सर्वधा असि॥ 6॥

स शुष्मी कलशेषु, आ पुनानः अचिक्रदत्।
मदेषु सर्वधाः असि॥ 7॥

धावति सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 28)

एषः वाजी हितो नृभिः, विश्ववित् मनसः पतिः।
अव्यो वारम् वि धावति॥ 1॥

एषः पवित्रे अक्षरत्, सोमो देवेभ्यः सुतः।
विश्वा धामानि आविशन्॥ 2॥

एषः देवः शुभायते, अधि योनौ अमर्त्यः।
वृत्रहा देववीतमः॥ 3॥

एषः वृषा कनिक्रदत्, दशभिः जामिभिः यतः।
अभि द्रोणानि धावति॥ 4॥

उक्थ्यम् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 29)

सप्तिम् मृजन्ति वेधसो, गृणन्तः कारवो गिरा।
ज्योतिः जज्ञानम् उक्थ्यम्॥ 2॥

सुषहा सोम तानि ते, पुनानाय प्रभूवसो।
वर्धा समुद्रम् उक्थ्य॥ 3॥

भरत् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 48)

अतः त्वा रयिम् अभि, राजानम् सुक्रतो दिवः।
सुपर्णो अव्यथी भरत्॥ 3॥

विश्वस्मै इत् स्वर्दृशे, साधारणम् रजस्तुरम्।
गोपाम् ऋतस्य वि भरत्॥ 4॥

तरत् सः मन्दी धावति सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 58)

तरत् सः मन्दी धावति, धारा सुतस्य अन्धसः।
तरत् सः मन्दी धावति॥ 1॥

उस्रा वेद वसूनाम्, मर्तस्य देवी अवसः।
तरत् सः मन्दी धावति॥ 2॥

ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योः, आ सहस्राणि दद्महे।
तरत् सः मन्दी धावति॥ 3॥

आ ययोः त्रिंशतम् तना, सहस्राणि च दद्महे।
तरत् सः मन्दी धावति॥ 4॥

पान्तम् आ पुरुस्पृहम् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 65)

आ ते दक्षम् मयोभुवम्, वह्निम् अद्य आ वृणीमहे।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम्॥ 28॥

आ मन्द्रम् आ वरेण्यम् आ, विप्रम् आ मनीषिणम्।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम्॥ 29॥

आ रयिम् आ सुचेतुनम्, आ सुक्रतो तनूषु आ।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम्॥ 30॥

वृषा सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 86)

अभिक्रन्दन् कलशम् वाज्यर्षति,
पतिः दिवः शतधारो विचक्षणः।
हरिः मित्रस्य सदनेषु सीदति,
मर्मृजानो अविभिः सिन्धुभिः वृषा॥ 11॥

अग्रे सिन्धूनाम् पवमानो अर्षति,
अग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छति।
अग्रे वाजस्य भजते महाधनम्,
स्वायुधः सोतृभिः पूयते वृषा॥ 12॥

नः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 97)

सम् उ प्रियो मृज्यते सानो अव्ये,
यशस्तरो यशसाम् क्षैतो अस्मे।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ 3॥

प्र गायता अभ्यर्चाम देवान्,
सोमम् हिनोत महते धनाय।
स्वादुः पवाते अति वारम्,
अव्यम् आ सीदाति कलशम् देवयुः नः॥ 4॥

इन्दुः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 97)

अक्रान् समुद्रः प्रथमे विधर्मन्,
जनयन् प्रजा भुवनस्य राजा।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये,
बृहत् सोमो वावृधे सुवान इन्दुः॥ 40॥

महत् तत् सोमो महिषः चकारः,
अपाम् यत् गर्भो अवृणीत देवान्।
अदधात् इन्द्रे पवमानः ओजो,
अजनयत् सूर्ये ज्योतिः इन्दुः॥ 41॥

न योनिम् आसदम् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 101)

आ जामिः अत्के अव्यत, भुजे न पुत्रः ओण्योः।
सरत् जारो न योषणाम्, वरो न योनिम् आसदम्॥ 14॥

स वीरो दक्षसाधनो, वि यः तस्तम्भ रोदसी।
हरिः पवित्रे अव्यत, वेधा न योनिम् आसदम्॥ 15॥

यत् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 102)

जज्ञानम् सप्त मातरो, वेधाम् आशासत श्रिये।
अयम् ध्रुवो रयीणाम् चिकेत यत्॥ 4॥

अस्य व्रते सजोषसः, विश्वे देवासः अद्रुहः।
स्पार्हाः भवन्ति रन्तयः जुषन्त यत्॥ 5॥

अर्षसि सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 9, सूक्त 107)

मृज्यमानः सुहस्त्य,
समुद्रे वाचम् इन्वसि।
रयिम् पिशङ्गम् बहुलम्,

पुरुस्पृहम् पवमान अभि अर्षसि॥ 21॥

मृजानो वारे पवमानो,
अव्यये वृषा अव चक्रदो वने।
देवानाम् सोम पवमान,
निष्कृतम् गोभिः अञ्जानो अर्षसि॥ 22॥

इति नवम मण्डल

ॐ

दशम मण्डल

विवक्षसे सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 21)

आ अग्निम् न स्ववृक्तिभिः,
होतारम् त्वा वृणीमहे।
यज्ञाय स्तीर्ण-बर्हिषे,
वि वो मदे शीरम्,
पावकशोचिषम् विवक्षसे॥ 1॥

त्वाम् उ ते स्वाभुवः,
शुम्भन्ति अश्वराधसः।
वेति त्वाम् उप सेचनी,

वि वः मदे ऋजीतिः,
अग्ने आहुतिः विवक्षसे ॥ 2 ॥

त्वे धर्माणः आसते,
जुहूभिः सिञ्चतीः इव।
कृष्णा रूपाणि अर्जुना,
वि वः मदे विश्वाः अधि,
श्रियः धिषे विवक्षसे ॥ 3 ॥

यम् अग्ने मन्यसे रयिम्,
सहसावन् अमर्त्य।
तम् आ नः वाजसातये,
वि वः मदे यज्ञेषु,
चित्रम् आ भर विवक्षसे ॥ 4 ॥

अग्निः जातः अथर्वणा,
विदत् विश्वानि काव्या।
भुवत् दूतः विवस्वतः,
वि वः मदे प्रियः,
यमस्य काम्यः विवक्षसे ॥ 5 ॥

त्वाम् यज्ञेषु ईडते,
अग्ने प्रयति अध्वरे।

त्वम् वसूनि काम्या,
वि वः मदे विश्वा,
दधासि दाशुषे विवक्षसे ॥ 6 ॥

त्वाम् यज्ञेषु ऋत्विजम्,
चारुम् अग्ने नि सेदिरे।
घृतप्रतीकम् मनुषः,
वि वः मदे शुक्रम्,
चेतिष्ठम् अक्षभिः विवक्षसे ॥ 7 ॥

अग्ने शुक्रेण शोचिषा,
उरु प्रथयसे बृहत्।
अभि-क्रन्दन् वृषयसे,
वि वः मदे गर्भम् दधामि,
जामिषु विवक्षसे ॥ 8 ॥

अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 47)

जगृम्भा ते दक्षिणम् इन्द्र हस्तम्,
वसूयवो वसुपते वसूनाम्।
विद्मा हि त्वा गोपतिम् शूर गोनाम्,
अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः ॥ 1 ॥

स्वायुधम् स्ववसम् सुनीथम,
चतुः समुद्रम् धरुणम् रयीणाम्।
चर्कृत्यम् शंस्यम् भूरिवारम्,
अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः ॥ 2 ॥

सुब्रह्माणम् देववन्तम् बृहन्तम्,
उरुम् गभीरम् पृथुबुध्नम् इन्द्र।
श्रुतषिम् उग्रम् अभिमातिसहम्,
अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः ॥ 3 ॥

सनद्वाजम् विप्रवीरम् तरुत्रम्,
धनस्पृतम् शूशुवांसम् सुदक्षम्।
दस्युहनम् पूः भिदम् इन्द्र सत्यम्,
अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः ॥ 4 ॥

अश्वावन्तम् रथिनम् वीरवन्तम्,
सहस्त्रिणम् शतिनम् वाजम् इन्द्र।
भद्रव्रातम् विप्रवीरम् स्वर्षाम्,
अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः ॥ 5 ॥

प्र सप्तगम् ऋतधीतिम् सुमेधाम्
वृहस्पतिम् मतिः अच्छ जिगाति।
यः आङ्गिरसः नमसा उपसद्यः

अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः ॥ 6 ॥

वनीवानः मम दूतासः इन्द्रम्,
स्तोमाः चरन्ति सुमतीः इयानाः।
हृदिस्पृशः मनसा वच्यमानाः,
अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः ॥ 7 ॥

यत् त्वा यामि दद्धि तत् नः इन्द्र,
बृहन्तम् क्षयम् असमम् जनानाम्।
अभि तत् द्यावापृथिवी गृणीताम्,
अस्मभ्यम् चित्रम् वृषणम् रयिम् दाः ॥ 8 ॥

पुरुष सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 90)

तम् यज्ञम् बर्हिषि प्र औक्षन्, पुरुषम् जातम् अग्रतः।
तेन देवा अयजन्त, साध्या ऋषयः च ये ॥ 07 ॥

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः, सम्भृतम् पृषद् आज्यम्।
पशून् तान् चक्रे वायव्यान्, आरण्या ग्राम्याः च ये। 2 ॥

हिरण्यगर्भः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 121)

हिरण्यगर्भः सम् अवर्त्तत अग्रे,
भूतस्य जातः पतिः एकः आसीत्।
स दाधार पृथिवीम् द्याम् उत इमाम्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।। 01 ।।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व,
उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः।
यस्य छाया अमृतम् यस्य मृत्युः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।।। 02 ।।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वा,
एक इत् राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदः चतुष्पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।। 03 ।।

यस्य इमे हिमवन्तो महित्वा,
यस्य समुद्रम् रसया सह आहुः।
यस्य इमाः प्रदिशो यस्य बाहू,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ।। 04 ।।

येन द्यौः उग्रा पृथिवी च दृढा,
येन स्वः स्तभितम् येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।। 05 ।।

यम् क्रन्दसी अवसा तस्तभाने,
अभि ऐक्षेताम् मनसा रेजमाने।
यत्र अधि सूर उदितो विभाति,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।।। 06 ।।

आपः ह यत् बृहतीः विश्वम् आयन्,
गर्भम् दधानाः जनयन्तीः अग्निम्।
ततो देवानाम् सम् अवर्तत असुः एकः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम।। 07 ।।

यः चित् आपः महिना पर्यपश्यत्
दक्षम् दधानाः जनयन्तीः यज्ञम्।
यः देवेषु अधि देवः एकः आसीत्
कस्मै देवाय हविषा विधेम।। 08 ।।

मा नो हिंसीत् जनिता यः पृथिव्या,
यो वा दिवम् सत्यधर्मा जजान।
यः च अपः चन्द्राः बृहती जजान,

कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 09 ॥

प्रियाणि सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 123)

ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात्,
प्रत्यङ् चित्रा बिभ्रत् अस्य आयुधानि।
वसानो अत्कम् सुरभिम् दृशे कम्,
स्वाः ण नाम जनत प्रियाणि ॥ 7 ॥

द्रप्सः समुद्रम् अभि यत् जिगाति,
पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन्।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानः,
तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि ॥ 8 ॥

अति द्विषः सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 126)

न तम् अंहो न दुरितम्,
देवासो अष्ट मर्त्यम्।
सजोषसो यम् अर्यमा मित्रो,
नयन्ति वरुणो अति द्विषः ॥ 1 ॥

तत् हि वयम् वृणीमहे,

वरुण मित्र अर्यमन्।
येन निः अंहसः यूयय् पाथ,
नेथ च मर्त्यम् अति द्विषः ॥ 2 ॥

ते नूनम् नः अयम् ऊतये,
वरुणः मित्रः अर्यमा।
नयिष्ठाः उ नः नेषणि पर्षिष्ठाः
उ नः पर्षणि अति द्विषः ॥ 3 ॥

यूयम् विश्वम् परि पाथ,
वरुणः मित्रः अर्यमा।
युष्काम् शर्मणि प्रिये स्याम,
सुप्रनीतयः अति द्विषः ॥ 4 ॥

आदित्यासः अति स्त्रिधः,
वरुणः मित्रः अर्यमा।
उग्रम् मरुद्भिः रुद्रम् हुवेम इन्द्रम्,
अग्निम् स्वस्तये अति द्विषः ॥ 5 ॥

नेतारः ऊ सु नः तिरः,
वरुणः मित्रः अर्यमा।
अति विश्वानि दुरिता राजानः,
चर्षणीनाम् अति द्विषः ॥ 6 ॥

शुनम् अस्मभ्यम् ऊतये,
वरुणः मित्रः अर्यमा।
शर्म यच्छन्तु सप्रथः आदित्यासः
यत् ईमहे अति द्विषः॥ 7॥

ज्याकाः अधि धन्वसु सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 133)

प्रो सु अस्मै पुरोरथम्, इन्द्राय शूषम् अर्चत।
अभीके चित् उ लोककृत्, सङ्गे समत्सु वृत्रहा।
अस्माकम् बोधि चोदिता, नभन्ताम् अन्यकेषाम्,
ज्याकाः अधि धन्वसु॥ 1॥

त्वम् सिन्धून् अवासृजो, अधराचो अहन् अहिम्।
अशत्रुः इन्द्र जज्ञिषे, विश्वम् पुष्यसि वार्यम्।
तम् त्वा परि ष्वजामहे, नभन्ताम् अन्यकेषाम्,
ज्याकाः अधि धन्वसु॥ 2॥

वि षु विश्वा अरातयो, अर्यो नशन्त नो धियः।
अस्ता असि शत्रवे वधम्, यो नः इन्द्र जिघांसति।
या ते रातिः ददिः वसु, नभन्ताम् अन्यकेषाम्,
ज्याकाः अधि धन्वसु॥ 3॥
यः नः इन्द्र अभितः जनः, वृकयुः आदिदेशति।

अधः पदम् तम् ईम् कृधि, विबाधः असि ससहिः,
नभन्ताम् अन्यकेषाम्, ज्याकाः अधि धन्वसु॥ 4॥

यः नः इन्द्र अभिदासति, स-नाभिः यः चः निष्ट्यः।
अव तस्य बलम् तिर, मही इव द्यौः अद त्मना,
नभन्ताम् अन्यकेषाम्, ज्याकाः अधि धन्वसु॥ 5॥

वयम् इन्द्र त्वायवो, सखित्वम् आ रभामहे।
ऋतस्य नः पथा नयाति, विश्वानि दुरिता,
नभन्ताम् अन्य केषाम्, ज्याका अधि धन्वसु॥ 6॥।

भद्रा जनित्री अजीजनत् सूक्त

(ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 134)

उभे यत् इन्द्र रोदसी, आ पप्राथ उषा इव।
महान्तम् त्वा महीनाम्, सम्राजम् चर्षणीनाम्।
देवी जनित्री अजीजनत्, भद्रा जनित्री अजीजनत्॥ 1॥

अव स्म दुर्हणायतो, मर्त्तस्य तनुहि स्थिरम्।
अधस्पदम् तम् ईम् कृधि, यो अस्मान् आ दिदेशति।
देवी जनित्री अजीजनत्, भद्रा जनित्री अजीजनत्॥ 2॥

अव त्याः बृहतीः इषः, विश्वचन्द्राः अमित्रहन्।
शचीभिः शक्र धूनुहि, इन्द्र विश्वाभिः ऊतिभिः,
देवी जनित्री अजीजनत्, भद्रा जनित्री अजीजनत्॥ 3॥

अव यत् त्वम् शतक्रतो, इन्द्र विश्वानि धूनुषे।
रयिम् न सुन्वते सचा, सहस्त्रिणीभिः ऊतिभिः
देवी जनित्री अजीजनत्, भद्रा जनित्री अजीजनत्॥ 4॥

अव स्वेदाः इव अभितः, विष्वक् पतन्तु द्यवः।
दूर्वायाः इव तन्तवः, वि अस्मत् एतु दुर्मतिः,
देवी जनित्री अजीजनत्, भद्रा जनित्री अजीजत्॥ 5॥

दीर्घम् हि अङ्कुशम्, यथा शक्तिम् बिभर्षि मन्तुमः।
पूर्वेण मघवन् पदा, अजो वयाम् यथा यमो।
देवी जनित्री अजीजनत्, भद्रा जनित्री अजीजनत्॥ 6॥

नकि देवा मिनीमसि, नकिः आ योपयामसि,
मन्त्रश्रुत्यम् चरामसि।
पक्षेभिः अपिकक्षेभिः, अत्र अभि सम् रभामहे॥ 7॥

इति दशमम् मण्डलम्

ॐ

सामवेद

अथ प्रथमो अध्यायः

स्त्रिधः सूक्त

(सामवेद, प्रथमो अध्यायः, सूक्त 11)

अग्ने यजिष्ठो अध्वरे,
देवान् देवयते यज।
होता मन्द्रो वि राजसि अति स्त्रिधः॥ 4॥

जज्ञाना सप्त मातृभिः,
मेधाम् आशासत श्रिये।
अयम् ध्रुवो रयीणाम् चिकेतत् आ॥ 5॥

उत स्या नो दिवा मतिः,
अदितिः ऊत्या आगमत्।
सा शन्ताता मयः करत् अप स्त्रिधः॥ 6॥

ॐ

अथ चतुर्थो अध्यायः

एन्द्रम् पर्वम् काण्डम् वा

वैदिक राष्ट्रगान

अर्चन् अनु स्वराज्यम् सूक्त

(सामवेद, चतुर्थो अध्यायः, सूक्त 7)

स्वादोः इत्था विषूवतो, मधोः पिबन्ति गौर्यः।
या इन्द्रेण सयावरीः, वृष्णा मदन्ति शोभथा,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥ 01॥

इत्था हि सोम इत् मदो, ब्रह्म चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन् ओजसा, पृथिव्या निःशशा अहिम्,
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 02॥

इन्द्रो मदाय वावृधे, शवसे वृत्रहा नृभिः।
तम् इत् महत्सु आजिषु, ऊतिम् अर्भे हवामहे।
सः वाजेषु प्र नो अविषत्, अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 03॥

इन्द्र तुभ्यम् इत् अद्रिवो, अनुत्तम् वज्रिन् वीर्यम्।
यत् ह त्यम् मायिनम् मृगम्, तव त्यत् मायया अवधीः,
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 04॥

प्रेहि अभीहि धृष्णुहि, न ते वज्रो नि यंसते।
इन्द्र नृम्णम् हि ते शवो, हनो वृत्रम् जयाः अपो,
अर्चन् अनु स्वराज्यम्॥ 05॥

अक्षन् अमीमदन्त हि, अव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो, विप्रा नविष्ठया मती,
योजा नु इन्द्र ते हरी ॥ 7॥

उप उ षु शृणुही गिरो, मघवन् मा अतथा इव।
कदा नः सूनृतावतः, करः इत् अर्थयासः इत्,
योजा नु इन्द्र ते हरी॥ 8॥

इन्द्रः सूक्त

(सामवेद, चतुर्थो अध्यायः, सूक्त 10)

उप प्रक्षे मधुमति, क्षियन्तः पुष्येम रयिम्,
धीमहे ते इन्द्रः॥ 8॥

अर्चन्ति अर्कम् मरुतः, स्वर्का आ स्तोभति,
श्रुतो युवा सः इन्द्रः॥ 9॥

ॐ

अथ पञ्चमो अध्यायः

पावमानम् पर्वम् काण्डम् वा

अपः सूक्त

(सामवेद, पञ्चमो अध्यायः, सूक्त 3)

अया पवस्व धारया, यया सूर्यम् अरोचयः।
हिन्वानो मानुषीः अपः॥ 7॥

सः पवस्व यः आविथ, इन्द्रम् वृत्राय हन्तवे।
वव्रिवांसम् महीः अपः॥ 8॥

ॐ

अथ द्वादशो अध्यायः

वस्वीः अनु स्वराज्यम् सूक्त

(सामवेद, द्वादशो अध्यायः, सूक्त 15)

स्वादोः इत्था विषूवतो, मधोः पिबन्ति गौर्यः।
याः इन्द्रेण सयावरीः, वृष्णा मदन्ति शोभथा,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥ 1॥

ताः अस्य पृशनायुवः, सोमम् श्रीणन्ति पृश्नयः।
प्रियाः इन्द्रस्य धेनवो, वज्रम् हिन्वन्ति सायकम्,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥ 2॥

ताः अस्य नमसा सहः, सपर्यन्ति प्रचेतसः।
व्रतानि अस्य सश्चिरे, पुरूणि पूर्वचित्तये,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥ 3॥

इषम् स्तोतृभ्यः आ भर सूक्त

(सामवेद, द्वादशो अध्यायः, सूक्त 21)

आ ते अग्ने इधीमहि, द्युमन्तम् देव अजरन्।
यत् ह स्या ते पनीयसी, समिद् दीदयति द्यवि,
इषम् स्तोतृभ्यः आ भर॥ 1॥
आ ते अग्ने ऋचा हविः, शुक्रस्य ज्योतिषस्पते।
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते, हव्यवाट् तुभ्यम् हूयते,
इषम् स्तोतृभ्यः आ भर॥ 2।

आ उभे सुश्चन्द्र विश्पते, दर्वी श्रीणीषे आसनि।
उतो नः उत्पुपूर्याः, उक्थेषु शवसस्पते,
इषम् स्तोतृभ्यः आ भर॥ 3॥

ॐ

अथ त्रयोदशो अध्यायः

अथा नो वस्यसः कृधि सूक्त

(सामवेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 4)

सन आ च सोम जेषि, च पवमान महि श्रवः।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 1 ॥

सन आ ज्योतिः सना स्वः, विश्वा च सोम सौभगा।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 2 ॥

सन आ दक्षम् उत क्रतुम्, अप सोम मृधः जहि।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 3 ॥

पवीतारः पुनीतन, सोमम् इन्द्राय पातवे।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 4 ॥

त्वम् सूर्ये नः आ भज, तव क्रत्वा तव ऊतिभिः।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 5 ॥

तव क्रत्वा तव ऊतिभिः, ज्योक् पश्येम सूर्यम्।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 6 ॥

अभ्यर्ष स्वायुध, सोम द्विबर्हसम् रयिम्।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 7 ॥

अभ्यर्ष अनपच्युतो, वाजिन् समत्सु सासहिः।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 8 ॥

त्वाम् यज्ञैः अवीवृधन्, पवमान विधर्मणि।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 9 ॥

रयिम् नः चित्रम् अश्विनम्, इन्दो विश्वायुम् आ भर।
अथा नो वस्यसः कृधि ॥ 10 ॥

तरत् सः मन्दी धावति सूक्त

(सामवेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 5)

तरत् सः मन्दी धावति, धारा सुतस्य अन्धसः।
तरत् सः मन्दी धावति ॥ 1 ॥

उस्रा वेद वसूनाम्, मर्तस्य देवी अवसः।
तरत् सः मन्दी धावति ॥ 2 ॥

ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योः, आ सहस्राणि दद्महे।
तरत् सः मन्दी धावति ॥ 3 ॥

आ ययोः त्रिंशतम् तना, सहस्राणि च दद्महे।
तरत् सः मन्दी धावति॥ 4॥

वसु स्पार्हम् तत् आ भर सूक्त

(सामवेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 9)

भिन्धि विश्वा अप द्विषः, परि बाधो जही मृधः।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर॥ 1॥

यस्य ते विश्वम् आनुषक्, भूरेः दत्तस्य वेदति।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर॥ 2॥

यत् वीडौ इन्द्र यत् स्थिरे, यत् पर्शाने पराभृतम्।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर। 3॥

इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् सूक्त

(सामवेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 10)

यज्ञस्य हि स्थः ऋत्विजा, सस्नी वाजेषु कर्मसु।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्॥ 1॥

तोशासा रथयावाना, वृत्रहणा अपराजिता।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्॥ 2॥

इदम् वाम् मदिरम् मधु, अधुक्षन् अद्रिभिः नरः।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्॥ 3॥

अर्षसि सूक्त

(सामवेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 12)

मृज्यमानः सुहस्त्या, समुद्रे वाचम् इन्वसि।
रयिम् पिशङ्गम् बहुलम्, पुरुस्पृहम् पवमान अभि अर्षसि॥1

पुनानो वारे पवमानो, अव्यये वृषो अचिक्रदत् वने।
देवानाम् सोम पवमान निष्कृतम्, गोभिः अञ्जानो अर्षसि॥2

भद्रा जनित्री अजीजनत् सूक्त

(सामवेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 16)

उभे यत् इन्द्र रोदसी, आ पप्राथ उषा इव।
महान्तम् त्वा महीनाम्, सम्राजम् चर्षणीनाम्।
देवी जनित्री अजीजनत्, भद्रा जनित्री अजीजनत्॥ 1॥

दीर्घम् हि अङ्कुशम्, यथा शक्तिम् बिभर्षि मन्तुमः।
पूर्वेण मघवन् पदा, वयाम् अजो यथा यमः।
देवी जनित्री अजीजनत्, भद्रा जनित्री अजीजनत्॥ 2॥

अव स्म दुर्हृणायतो, मर्त्तस्य तनुहि स्थिरम्।
अधस्पदम् तम् ईम् कृधि, यो अस्मान् अभिदासति।
देवी जनित्री अजीजनत्, भद्रा जनित्री अजीजनत्॥ 3॥

मदेषु सर्वधा असि सूक्त

(सामवेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 17)

परि स्वानो गिरिष्ठाः, पवित्रे सोमो अक्षरत्।
मदेषु सर्वधा असि॥ 1॥

त्वम् विप्रः त्वम् कविः, मधु प्र जातम् अन्धसः।
मदेषु सर्वधा असि॥ 2॥

त्वे विश्वे सजोषसो, देवासः पीतिम् आशत।
मदेषु सर्वधा असि॥ 3॥

इन्द्रः सूक्त

(सामवेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 24)

अर्चन्ति अर्कम् मरुतः स्वर्का,
आ स्तोभति श्रुतो युवा सः इन्द्रः॥ 2॥

उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः,
पुष्येम रयिम् धीमहे ते इन्द्रः॥ 3॥

ॐ

अथ चतुर्दशो अध्यायः

पान्तम् आ पुरुस्पृहम् सूक्त

(सामवेद, चतुर्दशो अध्यायः, सूक्त 2)

आ ते दक्षम् मयोभुवम्, वह्निम् अद्य आ वृणीमहे।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम्॥ 10॥

आ मन्द्रम् आ वरेण्यम् आ, विप्रम् आ मनीषिणम्।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम्॥ 11॥

आ रयिम् आ सुचेतुनम्, आ सुक्रतो तनूषु आ।
पान्तम् आ पुरुस्पृहम्॥ 12॥

ॐ

अथ पञ्चदशो अध्यायः

देववीतये सूक्त

(सामवेद, पञ्चदशो अध्यायः, सूक्त 3)

पवमानम् अवस्यवो, विप्रम् अभि प्र गायत।
सुष्वाणम् देववीतये॥ 2॥

पवन्ते वाजसातये, सोमाः सहस्रपाजसः।
गृणाना देववीतये॥ 3॥

देववीतये सूक्त

(सामवेद, पञ्चदशो अध्यायः, सूक्त 19)

आ इन्द्र नो गधि प्रिय, सत्राजित् अगोह्य।
गिरिः न विश्वतः पृथुः पतिः दिवः॥ 1॥

अभि हि सत्य सोमपाः, उभे बभूथ रोदसी।
इन्द्र असि सुन्वतो वृधः पतिः दिवः॥ 2॥
त्वम् हि शश्वतीनाम्, इन्द्र धर्त्ता पुराम् असि।
हन्ता दस्योः मनोः वृधः पतिः दिवः॥ 3॥

ॐ

अथ षोडशो अध्यायः

येषाम् इन्द्रो युवा सखा सूक्त

(सामवेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 21)

आ घा ये अग्निम् इन्धते, स्तृणन्ति बर्हिः आनुषक्।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा॥ 1॥

बृहन् इत् इध्म एषाम्, भूरि शस्त्रम् पृथुः स्वरुः।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा॥ 2॥

अयुद्ध इत् युधा वृतम्, शूरः आजति सत्वभिः।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा॥ 3॥

इन्द्रो अङ्ग सूक्त

(सामवेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 22)

यः एक इत् विदयते, वसु मर्ताय दाशुषे।
ईशानोः अप्रतिष्कुतः इन्द्रो अङ्ग॥ 1॥

यः चित् हि त्वा बहुभ्यः, आ सुतावान् आविवासति।
उग्रम् तत् पत्यते शवः इन्द्रो अङ्ग॥ 2॥

कदा मर्तम् अराधसम्, पदा क्षुम्पम् इव स्फुरत्।
कदा नः शुश्रवत् गिरः इन्द्रो अङ्ग॥ 3॥

ॐ

अथ अष्टादशो अध्यायः

योनिम् आसदम् सूक्त

(सामवेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 3)

आ जामिः अत्के अव्यत, भुजे न पुत्रः ओण्योः।
सरत् जारो न योषणाम्, वरो न योनिम् आसदम्॥ 2॥

स वीरो दक्षसाधनो, वि यः तस्तम्भ रोदसी।
हरिः पवित्रे अव्यत, वेधा न योनिम् आसदम्॥ 3॥

ॐ

अथ एकोनविंशो अध्यायः

सत्यः इन्दुः सत्यम् इन्द्रम् सूक्त

(सामवेद, एकोनविंशो अध्यायः, सूक्त 20)

त्रिकद्रुकेषु महिषो, यवाशिरम् तुविशुष्मः,
तृम्पत् सोमम् अपिबत्, विष्णुना सुतम् यथावशम्।
सः ईम् ममाद महि कर्म, कर्तवे महाम् उरुम्,
सः एनम् सश्चत् देवो देवम्, सत्यः इन्दुः सत्यम् इन्द्रम्1

साकम् जातः क्रतुना, साकम् ओजसा ववक्षिथ,
साकम् वृद्धो वीर्यैः, सासहिः मृधो विचर्षणिः।

दाता राध स्तुवते काम्यम्, वसु प्रचेतन सः एनम्,
सश्चत् देवो देवम्, सत्यः इन्दुः सत्यम् इन्द्रम्॥ 2॥

अध त्विषीमान् अभि ओजसा, कृविम् युधा अभवत्,
आ रोदसी अपृणत्, अस्य मज्मना प्र वावृधे।
अधत्त अन्यम् जठरे, प्र ईम् अरिच्यत प्र चेतय,
सः एनम् सश्चत् देवो देवम् सत्यः इन्दुः सत्यम् इन्द्रम् ß

ॐ

अथ त्रयोविंशो अध्यायः

अप्रतिष्कुतः सूक्त

(सामवेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 2)

स नो वृषन् अमुम् चरुम्, सत्रादावन् अपा वृधि।
अस्मभ्यम् अप्रतिष्कुतः॥ 2॥

वृषा यूथा इव वंसगः, कृष्टीः इयर्ति ओजसा।
ईशानो अप्रतिष्कुतः॥ 3॥

बलम् सूक्त

(सामवेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 9)

वि अन्तरिक्षम् अतिरन्, मदे सोमस्य रोचना।

इन्द्रो यत् अभिनत् बलम्॥ 2॥

उत् गाः आजत् अङ्गिगरोभ्यः, आविष्कृण्वन् गुहा सतीः।
अर्वाञ्चम् नुनुदे बलम्॥ 3॥

ॐ

अथ पञ्चविंशो अध्यायः

इषम् स्तोतृभ्य आ भर सूक्त

(सामवेद, पञ्चविंशो अध्यायः, सूक्त 10)

अग्निम् तम् मन्ये यो वसुः, अस्तम् यम् यन्ति धेनवः।
अस्तम् अर्वन्त आशवो, अस्तम् नित्यासो वाजिन,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर॥ 1॥

अग्निः हि वाजिनम् विशे, ददाति विश्वचर्षणिः।
अग्नी राये स्वाभुवम्, स प्रीतो याति वार्यम्,
इषम् स्तोतृभ्यः आ भर॥ 2।

सो अग्निः यो वसुः गृणे, सम् यम् आयन्ति धेनवः।
सम् अर्वन्तो रघुद्रुवः, सम् सुजातासः सूरय,
इषम् स्तोतृभ्य आ भर॥ 3।

सुजाते अश्वसूनृते सूक्त

(सामवेद, पञ्चविंशो अध्यायः, सूक्त 11)

महे नो अद्य बोधय, उषो राये दिवित्मती।
यथा चित् नो अबोधयः, सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥ 1॥

या सुनीथे शौचद्रथे, व्यौच्छो दुहितः दिवः।
सा व्युच्छ सहीयसि, सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥ 2॥

सा नो अद्य आ भरत् वसुः, व्युच्छा दुहितः दिवः।
यः व्यौच्छः सहीयसि, सत्यश्रवसि वाय्ये,
सुजाते अश्वसूनृते॥ 3॥

माध्वी मम श्रुतम् हवम् सूक्त

(सामवेद, पञ्चविंशो अध्यायः, सूक्त 12)

प्रति प्रियतमम् रथम्, वृषणम् वसुवाहनम्।
स्तोता वाम् अश्विनौ ऋषि, स्तोमेभिः भूषति प्रति,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥ 1॥

अति आयातम् अश्विना, तिरो विश्वाः अहम् सना।
दस्रा हिरण्यवर्तनी, सुषुम्णा सिन्धुवाहसा,

माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥ 2॥

आ नो रत्नानि बिभ्रतौ, अश्विना गच्छतम् युवम्।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी, जुषाणा वाजिनी वसू,
माध्वी मम श्रुतम् हवम्॥ 3॥

ॐ

अथ षड्विंशो अध्यायः

उप नो हरिभिः सुतम् सूक्त

(सामवेद, षड्विंशो अध्यायः, सूक्त 10)

उप नो हरिभिः सुतम्, याहि मदानाम् पते।
उप नो हरिभिः सुतम्॥ 1॥

द्विता यो वृत्रहन्तमो, विदे इन्द्रः शतक्रतुः।
उप नो हरिभिः सुतम्॥ 2॥

त्वम् हि वृत्रहन् एषाम्, पाता सोमानाम् असि।
उप नो हरिभिः सुतम्॥ 3॥

ज्याकाः अधि धन्वसु सूक्त

(सामवेद, षड्विंशो अध्यायः, सूक्त 14)

प्रो सु अस्मै पुरो रथम्, इन्द्राय शूषम् अर्चत।
अभीके चित् उ लोककृत्, सङ्गे समत्सु वृत्रहा।
अस्माकम् बोधि चोदिता, नभन्ताम् अन्यकेषाम्,
ज्याकाः अधि धन्वसु॥ 1॥

त्वम् सिन्धून् अवासृजो, अधराचो अहन् अहिम्।
अशत्रुः इन्द्र जज्ञिषे, विश्वम् पुष्यसि वार्यम्।
तम् त्वा परि ष्वजामहे, नभन्ताम् अन्यकेषाम्,
ज्याकाः अधि धन्वसु॥ 2।

वि षु विश्वा अरातयो, अर्यो नशन्त नो धियः।
अस्ता असि शत्रवे वधम्, यो नः इन्द्र जिघांसति।
या ते रातिः ददिः वसु, नभन्ताम् अन्यकेषाम्,
ज्याकाः अधि धन्वसु॥ 3॥

दिवम् यय दिवावसो सूक्त

(सामवेद, षड्विंशो अध्यायः, सूक्त 16)

आ इन्द्र याहि हरिभिः, उप कण्वस्य सुष्टुतिम्।
दिवो अमुष्य शासतो, दिवम् यय दिवावसो॥ 1॥

अत्र आ वि नेमिः एषाम्, उराम् न धूनुते वृकः।
दिवो अमुष्य शासतो, दिवम् यय दिवावसो ॥ 2 ॥

आ त्वा ग्रावा वदन्, इह सोमी घोषेण वक्षतु।
दिवो अमुष्य शासतो, दिवम् यय दिवावसो ॥ 3 ॥

ॐ

अथ सप्तविंशो अध्यायः

दिवम् यय दिवावसो सूक्त

(सामवेद, सप्तविंशो अध्यायः, सूक्त 13)

ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात्,
प्रत्यङ् चित्रा बिभ्रत् अस्य आयुधानि।
वसानो अत्कम् सुरभिम् दृशे कम्,
स्वाः ण नाम जनत प्रियाणि ॥ 2 ॥

द्रप्सः समुद्रम् अभि यत् जिगाति,
पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन्।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानः,
तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि ॥ 3 ॥

ॐ

अथर्ववेद

प्रथम काण्ड

एव अस्तु मयि श्रुतम् सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 1)

पुनः एहि वाचस्पते, देवेन मनसा सह।
वसोः पते नि रमय मयि, एव अस्तु मयि श्रुतम् ॥ 2 ॥

इह एव अभि वि तनु, उभे आर्त्नी इव ज्यया।
वाचः पतिः नि यच्छतु मयि, एव अस्तु मयि श्रुतम् ॥ 3 ॥

बहिः ते अस्तु बाल् इति सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 3)

विद्मा शरस्य पितरम्, पर्जन्यम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्,
बहिः ते अस्तु बाल् इति ॥1 ॥

विद्मा शरस्य पितरम्, मित्रम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्,
बहिः ते अस्तु बाल् इति ॥ 2 ॥

विद्मा शरस्य पितरम्, वरुणम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्,
बहिः ते अस्तु बाल् इति॥3॥

विद्मा शरस्य पितरम्, चन्द्रम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्,
बहिः ते अस्तु बाल् इति॥4॥

विद्मा शरस्य पितरम्, सूर्यम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्,
बहिः ते अस्तु बाल् इति॥5॥

यत् आन्त्रेषु गवीन्योः, यत् वस्तौ अधि संश्रुतम्।
एव ते मूत्रम् मुच्यताम्, बहिः बाल् इति सर्वकम्॥6॥

प्र ते भिनद्मि मेहनम्, वर्त्रम् वेशन्त्याः इव।
एव ते मूत्रम् मुच्यताम्, बहिः बाल् इति सर्वकम्॥7॥

विसितम् ते वस्ति बिलम्, समुद्रस्य उदधे इव।
एव ते मूत्रम् मुच्यताम्, बहिः बाल् इति सर्वकम्॥8॥

यथा इषुका परा-अपतत्, अवसृष्टा अधि धन्वनः।
एव ते मूत्रम् मुच्यताम्, बहिः बाल् इति सर्वकम्॥9॥

उत्तमम् नाकम् अधि रोहय इमम् सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 3)

अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिः अस्तु,
सूर्यः अग्निः उत वा हिरण्यम्।
सपत्नाः अस्मत् अधरे भवन्तु,
उत्तमम् नाकम् अधि रोहय इमम्॥2॥

येन इन्द्राय समभरः पयांसि,
उत्तमेन ब्रह्मणा जातवेदः।
तेन त्वम् अग्ने इह वर्धय इमम्,
सजातानाम् श्रैष्ठ्ये आ धेहि एनम्॥3॥

आ एषाम् यज्ञम् उत वर्चः ददे अहम्,
रायः पोषम् उत चित्तानि अग्ने।
सपत्नाः अस्मत् अधरे भवन्तु,
उत्तमम् नाकम् अधि रोहय इमम्॥4॥

अव जरायु पद्यताम् सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 11)

न-इव मांसे न पीवसि,
न-इव मज्जसु आहतम्।
अव एतु पृश्नि शेवलम् शुने जरायु,

अत्तवे अव जरायु पद्यताम् ॥ 4 ॥

वि ते भिनद्मि मेहनम्,
वि योनिम् वि गवीनिके।
वि मातरम् च पुत्रम् च वि कुमारम्,
जरायणा अव जरायु पद्यताम् ॥ 5 ॥

यथा वातो यथा मनो,
यथा पतन्ति पक्षिणः।
एव आ त्वम् दशमास्य साकम्,
जरायुणा पत अव जरायु पद्यताम् ॥ 6 ॥

धनम् सम् स्त्रावयामर्सि सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 15)

ये नदीनाम् सम्-स्त्रवन्ति, उत्सासः सदम् अक्षिताः।
तेभिः मे सर्वैः सम्-स्त्रावैः, धनम् सम् स्त्रावयामसि ॥ 3 ॥

ये सर्पिषः सम्-स्त्रवन्ति, क्षीरस्य च उदकस्य च।
तेभिः मे सर्वैः सम्-स्त्रावैः, धनम् सम् स्त्रावयामसि ॥ 4 ॥

अभिदासतः सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 10)

वि नः इन्द्र मृधः जहि, नीचा यच्छ पृतन्यतः।
अधमम् गमय तमः यः, अस्मान् अभि-दासति ॥ 2 ॥

वि रक्षः वि मृधः जहि, वि वृत्रस्य हनू रुज।
वि मन्युम् इन्द्र वृत्रहन्, अमित्रस्य अभिदासतः ॥ 3 ॥

दध्मसि सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 5 सूक्त 1)

अनु सूर्यम् उत् अयताम्, हृत्-द्योतः हरिमा च ते।
गो रोहितस्य वर्णेन, तेन त्वा परि दध्मसि ॥ 1 ॥

परि त्वा रोहितैः वर्णैः, दीर्घायु-त्वाय दध्मसि।
यथा अयम् अरपाः, असत् अथो अहरितः भुवत् ॥ 2 ॥

या रोहिणीः देवत्याः, गावः याः उत रोहिणीः।
रूपम्-रूपम् वयः-वयः, ताभिः त्वा परि दध्मसि ॥ 3 ॥

सुकेषु ते हरिमाणम्, रोपणाकासु दध्मसि।
अथो हारिद्रवेषु ते, हरिमाणम् नि दध्मसि ॥ 4 ॥

परि वृङ्गधि तक्मन् सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 5 सूक्त 4)

यत् अग्निः अपो अदहत् प्रविश्य,
यत्र अकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि।
तत्र ते आहुः परमम् जनित्रम्,
सः नः सम्-वि द्वान् परि वृङ्गधि तक्मन्॥ 1॥

यदि अर्चिः यदि वा असि शोचिः,
शकल्येषि यदि वा ते जनित्रम्।
हूडुः नाम असि हरितस्य देव,
सः नः सम्-विद्वान् परि वृङ्गधि तक्मन्॥ 2॥

यदि शोकः यदि वा अभि-शोकः,
यदि वा राज्ञः वरुणस्य असि पुत्रः।
हूडुः नाम असि हरितस्य देव,
सः नः सम्-विद्वान् परि वृङ्गधि तक्मन्॥ 3॥

नमः शीताय तक्मने,
नमो रूपाय शोचिषे कृणोमि।
यो अन्येद्युः उभयद्युः अभि एति,
तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने॥ 4॥

अघायवः सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 5 सूक्त 6)

विषूची एतु कृन्तती, पिनाकम् इव बिभ्रती।
विष्वक् पुनः-भुवाः मनः, असम्-ऋद्धाः अघायवः॥ 2॥

न बहवः सम् अशकन्, न अर्भकाः अभि दधृषुः।
वेणोः अद्गाः इव अभितः, असमृद्धाः अघायवः॥ 3॥

ताः नः आपः शम् स्योनाः भवन्तु सूक्त

(अथर्ववेद, प्रथम काण्ड, अनुवाक - 6 सूक्त 5)

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकाः,
यासु जातः सविता यासु अग्निः।
याः अग्निम् गर्भम् दधिरे सुवर्णाः,
ताः नः आपः शम् स्योनाः भवन्तु॥ 1॥

यासाम् राजा वरुणः याति,
मध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानाम्।
या अग्निम् गर्भम् दधिरे सु-वर्णाः,
ताः नः आपः शम् स्योनाः भवन्तु॥ 2॥

यासाम् देवाः दिवि कृण्वन्ति,
भक्षम् याः अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।

याः अग्निम् गर्भम् दधिरे सु-वर्णाः,
ताः नः आपः शम् स्योनाः भवन्तु ॥ 3 ॥

शिवेन मा चक्षुषा पश्यत आपः,
शिवया तन्वा उप स्पृशत त्वचम् मे ।
घृत-श्चुतः शुचयः याः पावकाः,
ताः नः आपः शम् स्योनाः भवन्तु ॥ 4 ॥

इति प्रथम काण्ड

ॐ

द्वितीय काण्ड

तत् उ रोगम् अनीनशत् सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 3)

नीचैः खनन्ति असुराः,
अरुस्राणम् इदम् महत् ।
तत् आस्रावस्य भेषजम्,
तत् उ रोगम् अनीनशत् । 3 ॥

उपजीकाः उत् भरन्ति,
समुद्रात् अधि भेषजम् ।
तत् आ-स्रावस्य भेषजम्

तत् उ रोगम् अशीशमत् ॥ 4 ॥

अरुस्राणम् इदम् महत्,
पृथिव्याः अधि उत्-भृतम् ।
तत् आ-स्रावस्य भेषजम्,
तत् उ रोगम् अनीनशत् ॥ 5 ॥

शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 10)

क्षेत्रियात् त्वा निः ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ 1 ॥

शम् ते अग्निः सह अद्भिः अस्तु,
शम् सोमः सह ओषधीभिः ।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्,
निः ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम ॥ 2 ॥

शम् ते वातो अन्तरिक्षे वयो धात्,
शम् ते भवन्तु प्रदिशः चतस्त्रः,
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्,
निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्॥ 3॥

इमा या देवीः प्रदिशः चतस्त्रो,
वातपत्नीः अभि सूर्यो विचष्टे।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्,
निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्॥ 4॥

तासु त्वा अन्तः जरसि अदधामि,
प्र यक्ष्म एतु निर्ऋतिः पराचैः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्,
निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम॥ 5॥

अमुक्था यक्ष्मात् दुरितात्,
अवद्यात् द्रुहः पाशात्,
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्,
निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्॥ 6॥

अहा अरातिम् अविदः स्योनम्,
अपि अभूः भद्रे सुकृतस्य लोके।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात,
निर्ऋत्या जामिशंसात्,
द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्॥ 7॥

सूर्यम् ऋतम् तमसो ग्राह्या अधि,
देवा मुञ्चन्तो असृजन् निरेणसः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात्,
निर्ऋत्या जामिशंसात्,
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्॥ 8॥

अति समम् क्राम सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 11)

दूष्या दूषिः असि, हेत्या हेतिः असि,
मेन्या मेनिः असि।
आप्नुहि श्रेयांसम्, अति समम् क्राम॥ 1॥

स्रक्त्यो असि प्रतिसरो असि, प्रति अभिचरणो असि।
आप्नुहि श्रेयांसम्, अति समम् क्राम॥ 2॥

प्रति तम् अभि चर, यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्म्।
आप्नुहि श्रेयांसम् अति समम् क्राम्॥ 3॥

सूरिः असि, वर्चोधा असि, तनूपानो असि।
आप्नुहि श्रेयांसम्, अति समम् क्राम्॥ 4॥

शुक्रो असि भ्राजो असि, स्वः असि ज्योतिः असि।
आप्नुहि श्रेयांसम्, अति समम् क्राम्॥ 5॥

यो अस्माकम् मन इदम् हिनस्ति सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 12)

इदम् देवाः शृणुत ये यज्ञिया स्था,
भरद्वाजो मह्यम् उक्थानि शंसति।

पाशे स बद्धो दुरिते नि युज्यताम्,
यो अस्माकम् मन इदम् हिनस्ति॥ 2॥

इदम् इन्द्र शृणुहि सोमप,
यत् त्वा हृदा शोचता जोहवीमि।
वृश्चामि तम् कुलिशेनेव वृक्षम्,
यो अस्माकम् मन इदम् हिनस्ति॥ 3॥

एवा मे प्राण मा बिभेः सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 15)

यथा द्यौः च पृथिवी च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ 1॥

यथा अहः च रात्री च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ 2॥

यथा सूर्यः च चन्द्रः च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ 3॥

यथा ब्रह्म च क्षत्रम् च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः॥ 4॥

यथा सत्यम च अनृतम् च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 5 ॥

यथा भूतम् च भव्यम् च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 6 ॥

स्वाहा सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 16)

प्राणापानौ मृत्योः, मा पातम् स्वाहा ॥ 1 ॥

द्यावापृथिवी उपश्रुत्या, मा पातम् स्वाहा ॥ 2 ॥

सूर्य चक्षुषा, मा पहि स्वाहा ॥ 3 ॥

अग्ने वैश्वानर विश्वैः मा देवैः, पाहि स्वाहा ॥ 4 ॥

विश्वम्भर विश्वेन, मा भरसा पाहि स्वाहा ॥ 5 ॥

मे दाः स्वाहा सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 17)

ओजो असि ओजो मे दाः स्वाहा ॥ 1 ॥

सहो असि सहो मे दाः स्वाहा ॥ 2 ॥

बलम् असि बलम् मे दाः स्वाहा ॥ 3 ॥

आयुः असि आयुः मे दाः स्वाहा ॥ 4 ॥

श्रोत्रम् असि श्रोतम् मे दाः स्वाहा ॥ 5 ॥

चक्षुः असि चक्षुः मे दाः स्वाहा ॥ 6 ॥

परिपाणम् असि परिपाणम् मे दाः स्वाहा ॥ 7 ॥

मे दाः स्वाहा सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 18)

भ्रातृव्य-क्षयणम् असि,
भ्रातृव्य-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 1 ॥

सपत्न-क्षयणम् असि,
सपत्न-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 2 ॥

अराय-क्षयणम् असि,
अराय-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 3 ॥

पिशाच-क्षयणम् असि,
पिशाच-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 4 ॥

सदान्वा-क्षयणम् असि,
सदान्वा-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 5 ॥

यम् वयम् द्विष्मः सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 19)

अग्ने यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप,
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

अग्ने यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

अग्ने यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च,
यो अस्मान यत् ते द्वेष्टि, तम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

अग्ने यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

अग्ने यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु ।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

यम् वयम् द्विष्मः सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 20)

वायो यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप,
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

वायो यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर ।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

वायो यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च ।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

वायो यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच ।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

वायो यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु ।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

यम् वयम् द्विष्मः सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 21)

सूर्य यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप ।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

सूर्य यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

सूर्य यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

सूर्य यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

सूर्य यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

यम् वयम् द्विष्मः सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 22)

चन्द्र यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

चन्द्र यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

चन्द्र यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

चन्द्र यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

चन्द्र यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

यम् वयम् द्विष्मः सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 23)

आपो यत् वः तपः, तेन तम् प्रति तपत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

आपो यत् वो हरः, तेन तम् प्रति हरत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

आपो यत् वो अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्चत।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

आपो यत् वः शोचिः, तेन तम् प्रति शोचत।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

आपो यत् वः तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणुत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

तम् अत्त, स्वा मासानि अत्त सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 24)

शेरभक शेरभ पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मासानि अत्त॥ 1॥

शेवृधक शेवृध पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मासानि अत्त॥ 2॥

म्रोक अनुम्रोक पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मासानि अत्त॥ 3॥

सर्प अनुपसर्प पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मासानि अत्त॥ 4॥

जूर्णि पुनः वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मासानि अत्त॥ 5॥

उपब्धे पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मासानि अत्त॥ 6॥

अर्जुनि पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मासानि अत्त॥ 7॥

भरुजि पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्राहैत्
तम् अत्त, स्वा मासानि अत्त॥ 8॥

अरसान् कृणु ओषधे सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 5 सूक्त 27)

न इत् शत्रुः प्राशम् जयाति, सहमाना अभिभूः असि।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।।1।।

सुपर्णः त्वा अनु अविन्दत्, सूकरः त्वा अखनत् नसा।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।।2।

इन्द्रो ह चक्रे त्वा बाहौ, असुरेभ्य स्तरीतवे।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।3।।

पाटाम् इन्द्रो वि आश्नात, असुरेभ्य स्तरीतवे।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।4।।

तया अहम् शत्रून साक्ष, इन्द्रम् सालावृकान् इव।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।5।।

रुद्र जलाषभेषज, नीलशिखण्ड कर्मकृत्।
प्राशम् प्रतिप्राशो जहि, अरसान् कृणु ओषधे।6।।

जम्भयामसि सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 5 सूक्त 31)

इन्द्रस्य या मही दृषत्,
क्रिमेः विश्वस्य तर्हणी,।
तया पिनष्मि सम् क्रिमीन्,
दृषदा खल्वान् इव।। 1।।

दृष्टम् अदृष्टम् अतृहम्,
अथो कुरूरुम् अतृहम्।
अल्गण्डून् सर्वान् शलुनान क्रिमीन्,
वचसा जम्भयामसि।। 2।।

अल्गण्डून हन्मि महता वधेन,
दूना अदूना अरसा अभूवन्।
शिष्ठान् अशिष्ठान नि तिरामि वाचा,
यथा क्रिमीणाम् नकिः उच्छिषातै।। 3।।

अन्वान्त्र्यम् शीर्षण्यम्,
अथो पार्ष्टेयम् क्रिमीन्।
अवस्कवम् व्यध्वरम् क्रिमीन्,
वचसा जम्भयामसि।। 4।।

ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेषु,
ओषधीषु पशुषु अप्सु अन्तः।
ये अस्माकम् तन्वम् आविविशुः,
सर्वम् तत् हन्मि जनिम क्रिमीणाम्॥ 5॥

वि वृहामि ते सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 6 सूक्त 33)

अक्षीभ्याम ते नासिकाभ्याम्, कर्णाभ्याम् छुबुकात् अधि।
यक्ष्मम् शीर्षण्यम् मस्तिष्कात्, जिह्वाया वि वृहामि ते॥ 1॥

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः, कीकसाभ्यो अनूक्यात।
यक्ष्मम् दोषण्यम् अंसाभ्याम्, बाहुभ्याम् वि वृहामि ते॥ 2॥

हृदयात् ते परि क्लोम्नो, हलीक्षणात् पार्श्वभ्याम्।
यक्ष्मम् मतस्नाभ्याम् प्लीह्नो, यक्नः ते वि वृहामसि॥ 3॥

आन्त्रेभ्यः ते गुदाभ्यो, वनिष्ठोः उदरात अधि।
यक्ष्मम् कुक्षिभ्याम् प्लाशेः, नाभ्या वि वृहामि ते ॥ 4॥

उरुभ्याम् ते अष्ठीवद्भ्याम्, पार्ष्णिभ्याम् प्रपदाभ्याम्।
यक्ष्मम् भसद्यम् श्रोणिभ्याम्,
भासदम् भंससो वि वृहामि ते॥ 5॥

अस्थिभ्यः ते मज्जभ्यः, स्नावभ्यो धमनिभ्यः।
नखेभ्यो वि वृहामि ते॥ 6॥

अङ्गे अङ्गे लोम्नी लोम्नी, यः ते पर्वणि।
यक्ष्मम् त्वचस्यम् ते, वयम् कश्यपस्य वीबर्हेण,
विष्वञ्चम् वि वृहामसि॥ 7॥

प्रतिकाम्यः सूक्त

(अथर्ववेद, द्वितीय काण्ड, अनुवाक - 6 सूक्त 36)

भगस्य नावम् आ रोह, पूर्णाम् अनुपदस्वतीम्।
तया उप प्रतारय, यो वरः प्रतिकाम्यः॥ 5॥

आ क्रन्दय धनपते, वरम् आनसम् कृणु।
सर्वम् प्रदक्षिणम् कृणु, यो परः प्रतिकाम्यः॥ 6॥

द्वितीयम् काण्डम् समाप्तम्

ॐ

तृतीय काण्ड

जजान् सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 5)

ये धीवानो रथकाराः, कर्मारा ये मनीषिणः।
उपस्तीन् पर्ण मह्यम् त्वम्, सर्वान् कृण्वभितो जजान् ।6

ये राजानो राजकृतः, सूता ग्रामण्यः च ये।
उपस्तीन् पर्ण मह्यम् त्वम्, सर्वान् कृणु अभितो जजान्।।7

यान् अहम् द्वेष्मि ये च माम् सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 6)

पुमान् पुंसः परिजातो,
अश्वत्थः खदिरात् अधि।
स हन्तु शत्रून् मामकान्,
यान् अहम् द्वेष्मि ये च माम्।।1।

यथा अश्वत्थ निररभनो,
अन्तः महति अर्णवे।
एव आ तान् सर्वान् निर् भङ्ग्धि,
यान् अहम् द्वेष्मि ये च माम्।।3।।

सिनातु एनान् निर्ऋतिः,
मृत्योः पाशैः अमोक्यैः।
अश्वत्थ शत्रून् मामकान्,
यान् अहम् द्वेष्मि ये च माम्।।5।।

यान् आहुः इतरान् शतम् सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 11)

प्र विशतम् प्राणापानौ,
अनड्वाहाविव व्रजम्।
वि अन्ये यन्तु मृत्यवो,
यान् आहुः इतरान् शतम्।।5।।

जरायै त्वा परि ददामि,
जरायै नि धुवामि त्वा।
जरा त्वा भद्रा नेष्ट,
वि अन्ये यन्तु मृत्युवो,
यान् आहुः इतरान् शतम्।।7।।

स्याम सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 16)

भग प्रणेतः भग सत्यराधो,
भग इमाम् धियम् उत् अव ददत् नः।

भग प्र नो जनय गोभिः अश्वैः,
भग प्र नृभिः नृवन्तः स्याम ॥ 3 ॥

उत इदानीम् भगवन्तः स्याम,
उत प्रपित्वे उत मध्ये अह्नाम्,
उत उदितौ मघवन् सूर्यस्य,
वयम् देवानाम् सुमतौ स्याम ॥ 4 ॥

पुरोहितः सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 19)

संशितम् मे इदम् ब्रह्म,
संशितम् वीर्यम बलम्।
संशितम् क्षत्रम् अजरम् अस्तु,
जिष्णुः येषाम् अस्मि पुरोहितः ॥ 1 ॥

सम् अहम् एषाम् राष्ट्रम् स्यामि,
सम् ओजो वीर्यम् बलम्।
वृश्चामि शत्रूणाम् बाहून्,
अनेन् हविषा अहम् ॥ 2

नीचैः पद्यन्ताम् अधरे भवन्तु,
ये नः सूरिम् मघवानम् पृतन्यान्।

क्षिणामि ब्रह्मणा अमित्रान्,
उन्नयामि स्वान् अहम् ॥ 3 ॥

तीक्ष्णीयांसः परशोः,
अग्नेः तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो,
येषाम् अस्मि पुरोहितः ॥ 4 ॥

अग्निभ्यः हुतम् अस्तु एतत् सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 5 सूक्त 21)

ये अग्नयः अप्सु अन्तः,
ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु।
यः आविवेश ओषधीः,
यः वनस्पतीन् तेभ्यः,
अग्निभ्यः हुतम् अस्तु एतत् ॥ 1 ॥

यः सोमे अन्तः यो गोषु अन्तः,
यः आविष्टो वयः-सु यो मृगेषु।
य आविवेश द्विपदो यः चतुष्पदः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत् ॥ 2 ॥

य इन्द्रेण सरथम् याति,

देवो वैश्वानर उत विश्वदाव्यः।
यम् जोहवीमि पृतनासु सासहिम् तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्॥ 3॥

यो देवो विश्वात् यम् उ कामम् आहुः,
यम् दातारम् प्रतिगृहणन्तम् आहुः।
यो धीरः शक्रः परिभूः अदाभ्यः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्॥ 4॥

यम् त्वा होतारम् मनसा अभि संविदुः,
त्रयोदश भौवनाः पञ्च मानवाः।
वर्चोधसे यशसे सूनृतावते तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्॥ 5॥

उक्षान्नाय वशान्नाय,
सोमपृष्टाय वेधसे।
वैश्वानरज्येष्ठेभ्यः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्॥ 6॥

दिवम् पृथिवीम् अनु अन्तरिक्षम्
ये विद्युतम् अनुसंचरन्ति।
ये दिक्ष अन्तः ये वाते अन्तः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत्॥ 7॥

त्वा हृदि सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 5 सूक्त 25)

उत्तुदः त्वा उत् तुदतु, मा धृथाः शयने स्वे।
इषुः कामस्य या भीमा, तया विध्यामि त्वा हृदि॥ 1॥

आधीपर्णाम् कामशलाम्, इषुम् सङ्कल्पकुल्मलाम।
ताम् सुसंनताम् कृत्वा, कामो विध्यतु त्वा हृदि॥ 2॥

या प्लीहानम् शोषयति, कामस्य इषुः सुसंनता।
प्राचीनपक्षा व्योषा तया, विध्यामि त्वा हृदि॥ 3॥

वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 6 सूक्त 26)

ये अस्याम् स्थ प्राच्याम् दिशि हेतयो,
नाम देवाः तेषाम् वो अग्निः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 1॥
ये अस्याम् स्थ दक्षिणायाम् दिशि अविष्यवो,
नाम देवाः तेषाम् वो काम् इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 2॥

ये अस्याम् स्थ प्रतीच्याम् दिशि वैराजा,
नाम देवाः तेषाम् व आप इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 3॥

ये अस्याम् स्थ उदीच्याम् दिशि,
प्रविध्यन्तो नाम देवाः तेषाम वो पत इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 4॥

ये अस्याम् स्थ ध्रुवायाम् दिशि निलिम्पा,
नाम देवाः तेषाम् व ओषधीः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 5॥

ये अस्याम् स्थ ऊर्ध्वायाम् दिशि अवस्वन्तो,
नाम देवाःत तेषाम् वो बृहस्पतिः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 6॥

तम् वो जम्भे दध्मः सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 6 सूक्त 27)

प्राची दिक् अग्निः अधिपतिः,
असितो रक्षिता आदित्या इष्वः।
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः॥ 1॥

दक्षिणा दिक् इन्द्रो अधिपतिः,
तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः॥ 2॥

प्रतीची दिक् वरुणो अधिपतिः,
पृदाक रक्षिता अन्नम् इषवः,
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः॥ 3॥

उदीची दिक् सोमो अधिपतिः,
स्वजो रक्षिता अशनिः इषवः,
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः ॥ 4 ॥

ध्रुवा दिक् विष्णुः अधिपतिः,
कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः,
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः ॥ 5 ॥

ऊर्ध्वा दिक् बृहस्पतिः अधिपतिः,
श्वित्रो रक्षिता वर्षम् इषवः,
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् दिष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः ॥ 6 ॥

अक्षितम् सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 6 सूक्त 29)

पञ्चापूपम् शितिपादम्, अविम् लोकेन संमितम्।
प्र दाता उप जीवति, पितृणाम लोके अक्षितम् ॥4।

पञ्चापूपम् शितिपादम्, अविम् लोकेन संमितम्।
प्र दाता उप जीवति, सूर्यामासयोः अक्षितम् ॥5।

वि यक्ष्मेण सम् आयुषा सूक्त

(अथर्ववेद, तृतीय काण्ड, अनुवाक - 6 सूक्त 31)

वि देवा जरसा अवृतन्, वि त्वम् अग्ने अरात्या।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 1 ॥

वि आर्त्या पवमानो, वि शक्रः पापकृत्यया।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 2 ॥

वि ग्राम्याः पशव आरण्यैः, वि आपः तृष्णया असरन्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 3 ॥

वि इमे द्यावापृथिवी इतो, वि पन्थानो दिशंदिशम्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 4 ॥

त्वष्टा दुहित्रे वहतुम् युनक्ति,इदम् विश्वम् भुवनम् वि याति।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा॥ 5॥

अग्निः प्राणान् सम् दधाति, चन्द्रः प्राणेन संहितः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा॥ 6॥

आयुष्मताम् आयुष्कृताम्, प्रणेन जीव मा मृथाः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा॥ 7॥

आयुष्मताम् आयुष्कृताम्, प्रणेन जीव मा मृथाः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा॥ 8॥

प्राणेन प्राणताम् प्र अन, इह एव भव मा मृथाः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा॥ 9॥

उत् आयुषा सम् आयुषा, ओषधीनाम् सरेन।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा॥ 10॥

आ पर्जन्यस्य पृष्ट्या, उत् अस्थाम् अमृता वयम्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना, वि यक्ष्मेण सम् आयुषा॥ 11॥

ॐ

चतुर्थ काण्ड

कस्मै देवाय हविषा विधेम सूक्त

(अथर्ववेद, चतुर्थ काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 2)

यः आत्मदा बलदा यस्य विश्व,
उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः।
यः अस्य ईशे द्विपदः यः चतुष्पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 1॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वा,
एकः राजा जगतो बभूव।
यस्य छाया अमृतम् यस्य मृत्युः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 2॥

यम् क्रन्दसी अवतः चस्कभाने,
भियसाने रोदसी अह्वयेथाम्।
यस्य असौ पन्था रजसो विमानः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 3॥

यस्य द्यौः ऊर्वी पृथिवी च मही,
यस्य अद उरु अन्तरिक्षम।

यस्य असौ सूरो विततो महित्वा,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 4 ॥

यस्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा,
समुद्रे यस्य रसाम् इत् आहुः।
इमाः च प्रदिशो यस्य बाहू,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 5 ॥

आपः अग्रे विश्वम् आवन्
गर्भम् दधानाः अमृताः ऋतज्ञाः।
यासु देवीषु अधि देवः आसीत्
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 6 ॥

हिरण्यगर्भः सम् अवर्तत अग्रे,
भूतस्य जातः पतिः एकः आसीत्।
स दाधार पृथिवीम् उत द्याम्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 7 ॥

आपः वत्सम् जनयन्तीः,
गर्भम् अग्रे सम् ऐरयन्।
तस्य उत जायमानस्य,
उल्बः आसीत् हिरण्ययः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 8 ॥

विषम् सूक्त

(अथर्ववेद, चतुर्थ काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 6)

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो, दशशीर्षो दशास्यः।
स सोमम् प्रथमः पपौ, स चकार अरसम् विषम् ॥ 1 ॥

यः ते आस्यत् पञ्चाङ्गुरिः, वक्रात् चित् अधि धन्वनः।
अपस्कम्भस्य शल्यात्, निः अवोचम् अहम् विषम् ॥ 4 ॥

शल्यात् विषम् निः अवोचम्, प्राञ्जनात् उत पर्णधेः।
अपाष्ठात् शृङ्गात् कुल्मलान्, निः अवोचम् अहम् विषम्।

वध्रयः ते खनितारो, वध्रिः त्वम् असि ओषधे।
वध्रिः स पर्वतो गिरिः, यतो जातम् इदम् विषम् ß।

न रूरुपः सूक्त

(अथर्ववेद, चतुर्थ काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 7)

करम्भम् कृत्वा तिर्यम्, पीबस्पाकम् उदारथिम्।
क्षुधा किल त्वा दुष्टनो, जक्षिवान् स न रूरुपः। 3।

परि ग्राममिव आचितम्, वचसा स्थापयामसि।
तिष्ठा वृक्ष इव स्थाम्नि, अभ्रिखाते न रुरुपः ॥ 5।

आञ्जन सूक्त

(अथर्ववेद, चतुर्थ काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 9)

न एनम् प्राप्नोति शपथो, न कृत्या न अभि शोचनम्।
न एनम् विष्कन्धम् अश्नुते, यः त्वा बिभर्ति आञ्जन॥5।

असन्मन्त्रात् दुस्वपन्यात्, दुष्कृतात शमलात् उत।
दुर्हार्दः चक्षषो घोरात्, तस्मात् नः पाहि आञ्जन॥6॥

ते नः मुञ्चतम् अंहसः सूक्त

(अथर्ववेद, चतुर्थ काण्ड, अनुवाक - 6 सूक्त 26)

मन्वे वाम् द्यावापृथिवी सुभोजसौ सचेतसौ,
ये अप्रथेथाम् अमिता योजनानि।
प्रतिष्ठे हि अभवतम् वसूनाम्
ते नः मुञ्चतम् अंहसः॥1॥

प्रतिष्ठे हि अभवतम् वसूनाम्,
प्रवृद्धे देवी सुभगे उरूची।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः॥2॥

असंतापे सुतपसौ हुवे अहम्,
ऊर्वी गम्भीरे कविभिः नमस्ये।

द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः॥3॥

ये अमृतम् बिभृतो ये हवींषि,
ये स्रोत्या बिभृथो ये मनुष्यान्।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः॥4॥

ये उस्रिया बिभृथो ये वनस्पतीन्,
ययोः वाम् विश्वा भुवनानि अन्तः।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः॥5॥

ये कीलालेन तर्पयथो ये गृतेन याभ्याम्,
ऋते ने किम् चन शक्नुवन्ति।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः॥6॥

यत् मा इदम् अभिशोचति,
येन-येन वा कृतम् पौरषेयात् न दैवात्।
स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः॥7॥

इति चतुर्थ काण्ड

ॐ

पञ्चम काण्ड

असि सूक्त

(अथर्ववेद, पञ्चम काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 16)

यदि एकवृषः असि सृज अरसः असि॥ 1॥
यदि द्विवृषः असि सृज अरसः असि॥ 2॥
यदि त्रिवृषः असि सृज अरसः असि॥ 3॥
यदि चतुर्वृषः असि सृज अरसः असि॥ 4॥
यदि पञ्चवृषः असि सृज अरसः असि॥ 5॥
यदि षड्वृषः असि सृज अरसः असि॥ 6॥
यदि सप्तवृषः असि सृज अरसः असि॥ 7॥
यदि अष्टवृषः असि सृज अरसः असि॥ 8॥
यदि नववृषः असि सृज अरसः असि॥ 9॥
यदि दशवृषः असि सृज अरसः असि॥ 10॥
यदि एकादशः असि, सः अप-उदकः असि॥11।

इति पञ्चम काण्ड

ॐ

षष्ठ काण्ड

स्वः सूक्त

(अथर्ववेद, षष्ठ काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 31)

आ अयम् गौः पृश्निः अक्रमीत्, असदत् मातरम् पुरः।
पितरम् च प्रयन् स्वः॥ 1॥

अन्तः चरति रोचना, अस्य प्राणात् अपानतः।
वि अख्यत् महिषो स्वः॥ 2॥

स्याम् सूक्त

(अथर्ववेद, षष्ठ काण्ड, अनुवाक - 6 सूक्त 55)

ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो वसन्तः,
शरत् वर्षाः स्विते नो दधात।
आ नो गोषु भजत आ प्रजायाम्,
निवात इत् वः शरणे स्याम्॥ 2॥

इदावत्सराय परिवत्सराय,
सम्वत्सराय कृणुता बृहत् नमः।
तेषाम् वयम् सुमितौ यज्ञियानाम्,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम्॥ 3॥

इति षष्ठ काण्ड

ॐ

सप्तमो काण्डः

विष्णुम् अगन्, वरुणम् पूर्वहूतिः सूक्त

(अथर्ववेद, सप्तमो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 25)

ययोः ओजसा स्कभिता रजांसि,
यौ वीर्यैः वीरतमा शविष्ठा।
यौ पत्येते अप्रति इतौ सहोभिः,
विष्णुम् अगन्, वरुणम् पूर्वहूतिः ॥ 1 ॥

यस्य इदम् प्रदिशि यत् विरोचते,
प्र च अनति वि च चष्टे शचीभिः
पुरा देवस्य धर्मणा सहोभिः,
विष्णुम् अगन् वरुणम् पूर्वहूतिः ॥ 2 ॥

स्वाहा सूक्त

(अथर्ववेद, सप्तमो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 97)

यज्ञ यज्ञम् गच्छ, यज्ञपतिम् गच्छ,
स्वाम् योनिम् गच्छ स्वाहा ॥ 5 ॥

एष ते यज्ञो यज्ञपते, सहसूक्तवाकः।
सुवीर्यः स्वाहा ॥ 6 ॥

वषट् हुतेभ्यः वषट् अहुतेभ्यः।
देवा गातुविदो, गातुम् वित्वा गातुम् इत ॥ 7 ॥

मनसस्पते इमम् नः दिवि देवेषु यज्ञम्।
स्वाहा दिवि स्वाहा पृथिव्याम् स्वाहा,
अन्तरिक्षे स्वाहा वाते धाम् स्वाहा ॥ 8 ॥

यज्ञ सूक्त

(अथर्ववेद, सप्तमो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 98)

सम् बर्हिः अक्तम् हविषा घृतेन,
सम् इन्द्रेण वसुना सम् मरुद्भिः ॥
सम् देवैः विश्वदेवेभिः अक्तम्,
इन्द्रम् गच्छतु हविः स्वाहा ॥ 1 ॥

इति सप्तम काण्ड

ॐ

नवम काण्ड

चृतामसि सूक्त

(अथर्ववेद, नवम काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 3)

उपमिताम् प्रतिमिताम्, अथो परिमिताम् उत।
शलाया विश्ववाराया, नद्धानि वि चृतामसि ।।1 ।।

यत् ते नद्धम् विश्ववारे, पाशो ग्रन्थिः च यः कृतः ।
बृहस्पतिरिव अहम् बलम्, वाचा वि स्त्रंसयामि तत् । 2 ।

अययाम सम् बबर्ह, ग्रन्थीन् चकार ते दृढान्।
परूंषि विद्वान् शस्तेव, इन्द्रेण वि चृतमासि ।। 3 ।।

वंशानाम् ते नहनानाम्, प्राणाहस्य तृणस्य च।
पक्षाणाम् विश्ववारे, ते नद्धानि वि चृतामसि ।। 4 ।

संदंशानाम् पलदानाम्, परिष्वञ्जल्यस्य च।
इदम् मानस्य पत्न्या, नद्धानि वि चृतमसि ।। 5 ।।

गोभ्यो अश्वेभ्यो नमो, यत् शालायाम् विजायते।
विजवति प्रजावति, वि ते पाशान् चृतामसि ।। 13 ।।

अग्निम् अन्तः छादयसि, पुरुषान् पशुभिः सह।
विजवति प्रजावति, वि ते पाशान् चृतामसि ।। 14 ।।

देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः सूक्त

(अथर्ववेद, नवम काण्ड, अनुवाक - 2 सूक्त 3)

प्राच्या दिशः शालाया नमो,
महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः ।। 25

दक्षिणाया दिशः शालाया नमो,
महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः ।। 26 ।।

प्रतीच्या दिशः शालाया नमो,
महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः ।। 27

उदीच्या दिशः शालाय नमो,
महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः ।। 28 ।।

ध्रुवाया दिशः शालाय नमो,
महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः ।। 29 ।।

ऊर्ध्वाया दिशः शालाय नमो,
महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः ।। 30 ।।

दिशो दिशः शालाय नमो,
महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः॥ 29॥

ॐ

दशमो काण्डः

सा आरात् एतु अप नुदामः एनाम् सूक्त

(अथर्ववेद, दशमो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 1)
याम् कल्पयन्ति वहतौ वधूम् इव,
विश्वरूपाम् हस्तकृताम् चिकित्सवः,
सा आरात् एतु अप नुदामः एनाम्। 1।

शीर्षण्वती नस्वती कर्णिनी,
कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा।
सा आरात् एतु अप नुदाम एनाम्॥ 2॥

प्रति सूक्त

(अथर्ववेद, दशमो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 1)
उत हन्ति पूर्वासिनम्, प्रत्यादाय अपर इष्वा।
नि हन्ति अपरः प्रति॥ 27॥

एतत् हि शृणु मे वचो, अथ इह यत एयथ।

यः त्वा चकार तम् प्रति॥ 28॥

वो युनज्मि सूक्त

(अथर्ववेद, दशमो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 5)
इन्द्रस्य ओजः स्थ, इन्द्रस्य सह स्थ,
इन्द्रस्य बलम् स्थ, इन्द्रस्य वीर्यम् स्थ,
इन्द्रस्य नृम्णम् स्थ।
जिष्णवे योगाय ब्रह्मयोगैः वो युनज्मि॥1॥

इन्द्रस्य ओज स्थ, इन्द्रस्य सह स्थ,
इन्द्रस्य बलम् स्थ, इन्द्रस्य वीर्यम् स्थ,
इन्द्रस्य नृम्णम् स्थ।
जिष्णवे योगाय, क्षत्रयोगैः वो युनज्मि॥ 2॥

इन्द्रस्य ओज स्थ, इन्द्रस्य सह स्थ,
इन्द्रस्य बलम् स्थ, इन्द्रस्य वीर्यम् स्थ,
इन्द्रस्य नृम्णम् स्थ।
जिष्णवे योगाय, इन्द्रयोगैः वो युनज्मि॥ 3॥

इन्द्रस्य ओज स्थ, इन्द्रस्य सह स्थ,
इन्द्रस्य बलम् स्थ, इन्द्रस्य वीर्यम् स्थ,
इन्द्रस्य नृम्णम् स्थ।

जिष्णवे योगाय, सोमयोगैः वो युनज्मि ॥ 4 ॥

इन्द्रस्य ओज स्थ, इन्द्रस्य सह स्थ,
इन्द्रस्य बलम् स्थ, इन्द्रस्य वीर्यम् स्थ,
इन्द्रस्य नृम्णम् स्थ।
जिष्णवे योगाय, अप्सुयोगैः वो युनज्मि ॥ 5 ॥

इन्द्रस्य ओज स्थ, इन्द्रस्य सह स्थ,
इन्द्रस्य बलम् स्थ, इन्द्रस्य वीर्यम् स्थ,
इन्द्रस्य नृम्णम् स्थ।
जिष्णवे योगाय, विश्वानि मा भूतानि,
उप तिष्ठन्तु युक्ता म आप स्थ ॥ 6 ॥

अस्मै लोकाय सादये सूक्त

(अथर्ववेद, दशमो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 5)

अग्नेः भाग स्थ।
अपाम् शुक्रम् आपो, देवीः वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेः वो धाम्ना, अस्मै लोकाय सादये ॥ 7 ॥

इन्द्रस्य भाग स्थ।
अपाम् शुक्रम् आपो, देवीः वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेः वो धाम्ना, अस्मै लोकाय सादये ॥ 8 ॥

सोमस्य भाग स्थ।
अपाम् शुक्रम् आपो, देवीः वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेः वो धाम्ना, अस्मै लोकाय सादये ॥ 9 ॥

वरुणस्य भाग स्थ।
अपाम् शुक्रम् आपो, देवीः वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेः वो धाम्ना, अस्मै लोकाय सादये ॥ 10 ॥

मित्रावरुणयोः भाग स्थ।
अपाम् शुक्रम् आपो, देवीः वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेः वो धाम्ना, अस्मै लोकाय सादये ॥ 11 ॥

यमस्य भाग स्थ।
अपाम् शुक्रम् आपो, देवीः वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेः वो धाम्ना, अस्मै लोकाय सादये ॥ 12 ॥

पितृणाम् भाग स्थ।
अपाम् शुक्रम् आपो, देवीः वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेः वो धाम्ना,अस्मै लोकाय सादये ॥ 13 ॥
देवस्य सवितुः भाग स्थ।
अपाम् शुक्रम् आपो, देवीः वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेः वो धाम्ना, अस्मै लोकाय सादये ॥ 14 ॥

अनेन कर्मणा अनया मेन्या सूक्त

(अथर्ववेद, दशमो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 5)

यो व आपो अपाम् भागो,
अप्सु अन्तः यजुष्यो देवयजनः।
तम मा अभ्यवनिक्षि।
तेन तम् अभ्यतिसृजामो,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।
तम् वधेयम् तम् स्तृषीय अनेन ब्रह्मणा,
अनेन कर्मणा अनया मेन्या॥ 15॥

यो व आपो अपाम् ऊर्मिः,
अप्सु अन्तः यजुष्यो देवयजनः।
इदम् तम् अति सृजामि,
तम् मा अभि अवनिक्षि।
तेन तम् अभि अति सृजामो,
यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।
तम् वधेयम् तम् स्तृषीय अनेन ब्रह्मणा,
अनेन कर्मणा अनया मेन्या॥ 16॥

यो व आपो अपाम् वत्सो,
अप्सु अन्तः यजुष्यो देवयजनः।
इदम् तम् अति सृजामि,

तम् मा अभि अवनिक्षि।
तेन तम् अभि अतिसृजामो,
यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।
तम् वधेयम् तम् स्तृषीय अनेन ब्रह्मणा,
अनेन कर्मणा अनया मेन्या॥ 17॥

यो व आपो अपाम् वृषभो,
अप्सु अन्तः यजुष्यो देवयजनः।
इदम् तम् अति सृजामि,
तम् मा अभि-अवनिक्षि।
तेन तम् अभि अतिसृजामो,
यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम द्विष्मः।
तम् वधेयम् तम् स्तृषीय अनेन ब्रह्मणा,
अनेन कर्मणा अनया मेन्या॥ 18॥

यो व आपो अपाम् हिरण्यगर्भो,
अप्सु अन्तः यजुष्यो देव यजनः।
इदम् तम् अति सृजामि,
तम् मा अभि अवनिक्षि।
तेन तम् अभि अति सृजामो,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।
तम् वधेयम् तम् स्तृषीय अनेन ब्रह्मणा,
अनेन कर्मणा अनया मेन्या॥ 19॥

यो वः आपो अपाम् अश्मा प्रश्निः दिव्यो,
अप्सु अन्तः यजुष्यो देव यजनः।
इदम् तम् अति सृजामि,
तम् मा अभि अवनिक्षि।
तेन तम् अभि अतिसृजामो,
यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।
तम् वधेयम् तम् स्तृषीय अनेन ब्रह्मणा,
अनेन कर्मणा अनया मेन्या॥ 20॥

यो व आपो अपाम् अग्नेयो,
अप्सु अन्तः यजुष्यो देव यजनः।
इदम् तान् अति सृजामि,
तान् मा अभि अवनिक्षि
तैः तम् अभि अतिसृजामो,
यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।
तम् वधेयम् तम् स्तृषीय अनेन ब्रह्मणा,
अनेन कर्मणा अनया मेन्या॥ 21॥

स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु सूक्त

(अथर्ववेद, दशमो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 5)
विष्णोः क्रमो असि सपत्नहा,
पृथिवी संशितो अग्नितेजाः।

पृथिवीम् अनु वि क्रमे अहम्,
पृथिव्याः तम् निः भजामो,
यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु॥ 25॥

विष्णोः क्रमो असि सपत्नहा,
अन्तरिक्षसंशितो वायु तेजाः।
अन्तरिक्षम् अनु वि क्रमे अहम्,
अन्तरिक्षात् तम् निः भजामो,
यो अस्मा द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु॥ 26॥

विष्णोः क्रमो असि सपत्नहा,
द्यौ संशितो सूर्यतेजाः।
दिवम् अनु वि क्रमे अहम्,
दिवः तम् निः भजामो,
यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु॥ 27॥

विष्णोः क्रमो असि सपत्नहा,
दिक्संशितो मनस्तेजाः।
दिशो अनु वि क्रमे अहम्,
दिक्भ्यः तम् निः भजामो।

यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु ॥ 28 ॥

विष्णोः क्रमो असि सपत्नहा,
आशासंशितो वाततेजाः।
आशा अनु वि क्रमे अहम्,
आशाभ्या तम् निः भजामो,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु ॥ 29 ॥

विष्णोः क्रमो असि सपत्नहा,
ऋक्संशितो साम तेजाः।
ऋचो अनु वि क्रमे अहम्,
ऋग्भ्यः तम् निः भजामो।
यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः।
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु ॥ 30 ॥

विष्णो क्रमो असि सपत्नहा,
यज्ञसंशितो ब्रह्म तेजाः।
यज्ञम् अनु वि क्रमे अहम्,
यज्ञात् तम् निः भजामो,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु ॥ 31 ॥

विष्णो क्रमो असि सपत्नहा,
ओषधीसंशितो सोम तेजाः।
ओषधीः अनु वि क्रमे अहम्,
ओषधीभ्यः तम् निः भजामो,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु ॥ 32 ॥

विष्णो क्रमो असि सपत्नहा,
अप्सुसंशितो वरुण तेजाः।
अपो अनु वि क्रमे अहम्,
अत्भ्यः तम् निः भजामो,
यो अस्मान द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु ॥ 33 ॥

विष्णोः क्रमो असि सपत्नहा,
कृषिसंशितो अन्न तेजाः।
कृषिम् अनु वि क्रमे अहम्,
कृष्याः तम् निः भजामो,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु ॥ 34 ॥

विष्णोः क्रमो असि सपत्नहा,
प्राणसंशितो पुरुषतेजाः।

प्राणम् अनु वि क्रमे अहम्,
प्राणात् तम् निः भजामो,
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
स मा जीवीत् तम् प्राणो जहातु॥ 35॥

ब्राह्मणवर्चसम् सूक्त

(अथर्ववेद, दशमो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 5)

सूर्यस्य आवृतम् अन्वावर्ते, क्षिणाम् अनु आवृतम्।
सा मे द्रविणम् यच्छतु, सा मे ब्राह्मणवर्चसम्॥ 37॥

दिशो ज्योतिष्मतीः अभ्यावर्ते।
ता मे द्रविणम् यच्छन्तु, ता मे ब्राह्मणवर्चसम्॥ 38॥

सप्तऋषीन अभ्यावर्ते।
ते मे द्रविणम् यच्छन्तु, ते मे ब्राह्मणवर्चसम्॥ 39॥

ब्रह्म अभि आवर्ते।
तत् मे द्रविणम् यच्छतु, तत् मे ब्रह्मणवर्चसम्॥ 40॥

ब्राह्मणान् अभि आवर्ते।
ते मे द्रविणम् यच्छन्तु,ते मे ब्राह्मणवर्चसम्॥ 41॥

इति दशमो काण्डम्

ॐ

एकादशो काण्डः

तपसा पिपर्ति सूक्त

(अथर्ववेद, एकादशो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 5)

ब्रह्मचारी इष्णन् चरति रोदसी उभे,
तस्मिन् देवाः संमनसो भवन्ति।
स दाधार पृथिवीम् दिवम् च,
स आचार्यम् तपसा पिपर्ति॥1॥

ब्रह्मचारिणम् पितरो देवजनाः,
पृथक देवा अनुसंयन्ति सर्वे।
गन्धर्वा एनम् अनु आयन्,
त्रयस्त्रिशत् त्रिशताः षट्सहस्त्राः सर्वान्
स देवान् तपसा पिपर्ति॥ 2॥

आचार्य उपनयमानो ब्रहम्चारिणम्,
कृणुते गर्भम् अन्तः।
तम् रात्री तिस्त्र उदरे बिभर्ति,
तम् जातम् द्रष्टुम् अभिसंयन्ति देवाः॥ 3॥

इयम् समित् पृथिवी द्यौः द्वितीया,
अन्तरिक्षम् समिधा पृणाति।
ब्रह्मचारी समिधा मेखलया,
श्रमेण लोकान् तपसा पिपर्ति।। 4 ।।

ते जाता ब्रह्मचारिणः सूक्त

(अथर्ववेद, एकादशो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 5)

ओषधयो भूतभव्यम्, अहोरात्रे वनस्पतिः।
संवत्सरः सह ऋतुभिः, ते जाता ब्रह्मचारिणः।। 20 ।।

पार्थिवा दिव्याः पशव, आरण्या ग्राम्या च ये।
अपक्षाः पक्षिणः च, ये ते जाता ब्रह्मचारिणः।। 21 ।।

मयि सूक्त

(अथर्ववेद, एकादशो काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 7)

सन् उच्छिष्टे असन् च, उभो मृत्युः वाजः प्रजापतिः।
लौक्या उच्छिष्ट आयत्ता, व्रः च द्रः च अपि श्रीः मयि ।।3

दृढो दृंहस्थिरो न्यो, ब्रह्म विश्वसृजो दश।
नाभिमिव सर्वतः चक्रम्, उच्छिष्टे देवताः श्रितः ।।4।

ऋक् साम यजुः उच्छिष्ट, उद्गीथः प्रस्तुतम् स्तुतम्।
हिङ्कार उच्छिष्टे स्वरः, साम्नो मेडिः च तत् मयि।। 5 ।।

समाहिताः सूक्त

(अथर्ववेद, एकादशो काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 7)

अग्नयाधेयम् अथो दीक्षा, कामप्रः छन्दसा सह।
उत्सन्ना यज्ञाः सत्राणि, उच्छिष्टे अधि समाहिताः।। 8 ।।

अग्निहोत्रम् च श्रद्धा च, वषट्कारो व्रतम् तपः।
दक्षिणेष्टम् पूर्तम् च, उच्छिष्टेधि समाहिताः।। 9 ।।

अपि तत् मयि सूक्त

(अथर्ववेद, एकादशो काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 7)

प्रतीहारो निधनम्, विश्वजित् च अभिजित् च यः।
साहनतिरात्रौ उच्छिष्टे, द्वादशाहो अपि तत् मयि।। 12 ।।

सूनृता संनतिः क्षेमः, स्वाधा उर्जा अमृतम् सहः।
उच्छिष्टे सर्वे प्रत्यञ्चः, कामाः कामेन तातृपुः।। 13 ।।

नव भूमीः समुद्रा, उच्छिष्टे अधि श्रिता दिवः।
आ सूर्यो भाति उच्छिष्टे, अहो रात्रे अपि तत् मयि।। 14 ।।

दिवि देवा दिविश्रितः सूक्त

(अथर्ववेद, एकादशो काण्ड, अनुवाक - 4 सूक्त 7)

यत् च प्राणति प्राणेन, यत् च पश्यति चक्षुषा।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः ॥ 23 ॥

ऋचः सामानि छन्दांसि, पुराणम् यजुषा सह।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः ॥ 25 ॥

प्राणपानौ चक्षुः श्रोत्रम्, अक्षितिः च क्षितिः च य।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः ॥ 25 ॥
आनन्दा मोदाः प्रमुदो, अभिमोदमुदः च ये।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः ॥ 26 ॥

देवाः पितरो मनुष्या, गन्धर्वाप्सरः च ये।
उच्छिष्टात् जज्ञिरे सर्वे, दिवि देवा दिविश्रितः ॥ 27

इति एकादशो काण्डम्

ॐ

त्रयोदशो काण्डः

ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् सूक्त

(अथर्ववेद, त्रयोदशो काण्ड, अनुवाक - 3 सूक्त 3)

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व,
उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः।
यः अस्य ईशे द्विपदः यः चतुष्पदः।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगः,
यः देवम् विद्वान् सम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् ॥ 24 ॥

एकपात् द्विपदो भूयो वि चक्रमे,
द्विपात् त्रिपादम् अभि एति पश्चात्।
चतुष्पात् चक्रे द्विपदाम् अभिस्वरे,
संपश्यन् पङ्क्तिम् उपतिष्ठमानः।
तस्य देवस्य क्रुद्धस्य एतत् आगो,
य एवम् विद्वांसम् ब्राह्मणम् जिनाति।
उत् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि,
ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् ॥ 25 ॥

इति त्रयोदशो काण्डम्

ॐ

सप्तदशो काण्डः

भूयासम् सूक्त

(अथर्ववेद, सप्तदशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 1)

विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्, गोजितम् संधनाजितम्।
ईड्यम् नाम ह्व इन्द्रम्, आयुष्मान् भूयासम्॥ 1॥

विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्, गोजितम् संधनाजितम्।
ईड्यम् नाम ह्व इन्द्रम्, प्रियो देवानाम् भूयासम्॥ 2॥

विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्, गोजितम् संधनाजितम्।
ईड्यम् नाम ह्व इन्द्रम्, प्रियः प्रजानाम् भूयासम्॥ 3॥

विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्, गोजितम् संधनाजितम्।
ईड्यम् नाम ह्व इन्द्रम्, प्रियः पशूनाम् भूयासम्॥ 4॥

विषासहिम् सहमानम्, सासहानम् सहीयांसम्।
सहमानम् सहोजितम् स्वर्जितम्, गोजितम् संधनाजितम्।

ईड्यम् नाम ह्व इन्द्रम्, प्रियः समानानाम् भूयासम्॥ 5॥

मा धहि परमे व्योमन् सूक्त

(अथर्ववेद, सप्तदशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 1)

उत् इहि उत् इहि, सूर्य वर्चसा मा अभ्युदिहि।
द्विषन् च मह्यम् रध्यतु, मा च अहम् द्विषते रधम्,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः युधायाम्,
मा धहि परमे व्योमन्॥ 6॥

उत् इहि इत् इहि, सूर्य वर्चसा मा अभ्युदिहि।
यान् च पश्यामि यान् च न तेषु, मा सुमतिम् कृधि,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि॥
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सुधायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन्॥ 7॥

मा त्वा दभन् सलिले अप्सु अन्तः,
ये पाशिन उपतिष्ठन्ति अत्र।
हित्वा अशस्तिम्, दिवम् आ अरुक्ष एताम्,
स नो मृड सुमतौ ते स्याम्,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृमीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सुधायाम्,

मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 8 ॥

त्वम् न इन्द्र महते, सौभगाय अदब्धेभिः,
परि पाहि अक्तुभिः, तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सु दायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 9 ॥

त्वम् नः इन्द्र ऊतिभिः, शिवाभिः शंतमो भव।
आरोहन् त्रिदिवम् दिवो गृणानः,
सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्व रुपैः सु धायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 10 ॥

त्वम् इन्द्र असि विश्वजित्, सर्वजित् पुरुहूत त्वम् इन्द्र।
त्वम् इन्द्र इमम् सुहवम्, स्तोमम् आ ईरयस्व,
स नो मृड सुमतौ ते स्याम,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सुधायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 11 ॥

अदब्धो दिवि पृथिव्याम् उत् असि,
न ते आपुः महिमानम् अन्तरिक्षे।

अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः,
स त्वम् न इन्द्र दिवि षन् शर्म यच्छ,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् न पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सुधायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 12 ॥

या त इन्द्र तनूः अप्सु या पृथिव्याम्,
या अन्तः अग्नो या त,
इन्द्र पवमाने सवर्विदि।
यया इन्द्र तन्वा शर्म यच्छ,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सु धायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 13 ॥

त्वाम् इन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः,
सत्त्रम् नि षेदुः ऋषयो नाधमानाः,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सुधायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 14 ॥

त्वम् तृतम् त्वम् परि एषि उत्सम्,
सहस्रधारम् विदथम् स्वर्विदम्,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।

त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सुधायाम्,
मा धहि परमे व्योमन् ॥ 15 ॥

त्वम् रक्षसे प्रदिशः चतस्त्रः,
त्वम् शोचिषा नभसी वि भासि।
त्वम् इमा विश्वा भुवना अनु तिष्ठस,
ऋतस्य पन्थाम् अनु एषि विद्वान्,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपै सुधायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 16 ॥

पञ्चभिः पराङ् तपसि एकया अर्वाङ्,
अशस्तिम् एषि सुदिने वाधमानः,
तव इत् विष्णो बहुधा वीयाणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सुधायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 17 ॥

त्वम् इन्द्रः त्वम् महेन्द्रः,
त्वम् लोकः त्वम् प्रजापतिः।
तुभ्यम् जुह्वति जुह्वतः,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपै सुधायाम्,

मा धेहि परमे व्योमन् ॥ 18 ॥

असति सत् प्रतिष्ठितम्, सति भूतम् प्रतिष्ठितम्,
भूतम् ह भव्य आ हितम्, भव्यम् भूते प्रतिष्ठितम्,
तव इत विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपै सुधायाम्,
मा धहि परमे व्योमन् ॥ 19 ॥

शुक्रो असि भ्राजो असि।
स यथा त्वम् भ्राजता भ्राजो असि,
एव अहम् भ्राजता भ्राज्यासम् ॥ 20 ॥

रुचिः असि रोचो असि।
स यथा त्वम् रुच्या रोचो असि,
एव अहम् पशुभिः च ब्राह्मण,
वर्चसेन च रुचिषीय ॥ 21 ॥

उद्यते नमः उद्यायते नमः उदिताय नमः।
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः ॥ 22

अस्तम् अयते नमो अस्तम् एष्यते नमो,
अस्तम् इताय नमः।
विराजे नमः स्वाराजे नमः सम्राजे नमः ॥ 23 ॥

उत् अगात् अयम् आदित्यो, विश्वेन तपसा सह।
सपत्नान् मह्यम रन्धयन्, मा च अहम् द्विषते रधम्,
तव इत् विष्णो बहुधा वीर्याणि।
त्वम् नः पृणीहि पशुभिः, विश्वरूपैः सुधायाम्,
मा धेहि परमे व्योमन्॥ 24॥

आदित्य नावम् आ अरुक्षः, शतारित्राम् स्वस्तये।
अहः मा अति अपीपरो, रात्रिम् सत्रा अति पारय॥ 25॥

सूर्य नावम् आ अरुक्ष, शतारित्राम् स्वस्तये।
रात्रिम् मा अति अपीपरः, अहः सत्रा अति पारय॥ 26॥

इति सप्तदशो काण्डम्

ॐ

अष्टादशो काण्डः

एनाम् सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 3)

अपश्यम् युवतिम् नीयमानाम्,
जीवाम् मृतेभ्यः परिनीयमानाम्।
अन्धेन यत् तमसा प्रावृता आसीत्,
प्राक्तो अपाचीम् अनयम् तत् एनाम्॥ 3॥

प्रजानती अघ्न्ये जीवलोकम्,
देवानाम् पन्थाम् अनुसंचरन्ती।
अयम् ते गोपतिः तम् जुषस्व,
स्वर्गम् लोकम् अधि रोहय एनाम्॥ 4॥

ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 3)

इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या दिशः,
पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतः यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ॥ 25॥

धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः,
पातु बहुच्युता पृथिवी द्यामेव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ॥ 26॥

अदितिः मा आदित्यैः प्रतीच्या दिशः,
पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम हुतभागा इह स्थ॥ 27॥

सोमो मा विश्वैः देवैः उदीच्या दिशः,
पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ॥ 28॥

धर्ता ह त्वा धरुणः धारयातै ऊर्ध्वम्
भानुम् सविता द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ॥ 29॥

प्राच्याम् त्वा दिशि, पुरा संवृतः स्वधायाम्,
दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,

ये देवानाम् हुत-भागा इह स्थ॥ 30॥

दक्षिणायाम् त्वा दिशि, पुरा सम्वृतः स्वधायाम्,
आ दधामि बाहुच्युता, पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ॥ 31॥

प्रतीच्याम् त्वा दिशि, पुरा संवृतः स्वधायाम्,
आ दधामि बाहुच्युता, पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागाः इह स्थ॥ 32॥

उदीच्याम् आ दिशि, पुरा सम्वृतः स्वधायाम्,
आ दधामि बाहुच्युता, पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ॥ 33॥

ध्रुवायाम् त्वा दिशि, पुरा सम्वृतः स्वधायाम्,
आ दधामि बाहुच्युता, पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ॥ 34॥

ऊर्ध्वायाम् त्वा दिशि, पुरा सम्वृतः स्वधायाम्,

आ दधामि बाहुच्युता, पृथिवी द्यामिव उपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ॥35॥

असि सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 3)

धर्ता असि धरुणो असि, वंसगो असि॥36॥

उदपूः असि मधुपूः असि वातपूः असि॥37॥

दधात सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 3)

आसीनासो अरुणीनाम् उपस्थे,
रयिम् धत्त दाशुषे मर्त्याय।
पुत्रेभ्यः पितरः तस्य वस्वः,
प्र यच्छत ते इह ऊर्जम् दधात॥43॥

अग्निष्वात्ताः पितरः आ इह गच्छत,
सदः सदः सदत सुप्रणीतयः।
अत्तो हवींषि प्रयतानि बर्हिषि,
रयिम् च नः सर्व वीरम् दधात॥44॥

यजमानाय दुह्वाम् सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 4)

त्रयः सुपर्णा उपरस्य मायू,
नाकस्य पृष्ठे अधि विष्टपि श्रिताः।
स्वर्गाः लोका अमृतेन विष्ठा,
इषम् ऊर्जम् यजमानाय दुह्वाम्॥4॥

जुहूः दाधार द्याम् उपभृत् अन्तरिक्षम्,
ध्रुवा दाधार पृथिवीम् प्रतिष्ठाम्।
प्रति इमाम् लोका घृतपृठाः स्वर्गाः,
कामम्कामम् यजमानाय दुह्वाम्॥5॥

मा अव चिक्षिपन् सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 4)

शम् अग्नयः समिद्धा, आ रभन्ताम् प्राजापत्यम्,
मेध्यम् जातवेदसः।
शृतम् कृण्वन्त इह, मा अव चिक्षिपन्॥12॥

यज्ञ एति विततः कल्पमान, ईजानम् अभि लोकम् स्वर्गम्।
तम् अग्नयः सर्वहुतम्, जुषन्ताम् प्राजापत्यम्,
मेध्यम् जातवेदसः।
शृतम् कृण्वन्त इह, मा अव चिक्षिपन्॥13॥

ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 4)

अपूपवान् क्षीरवान्,
चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ ॥ 16 ॥

अपूपवान् दधिवान्,
चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ ॥ 17 ॥

अपूपवान् द्रप्सवान्,
चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ ॥ 18 ॥

अपूपवान् घृतवान्
चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ ॥ 19 ॥

अपूप वान् मांसवान्
चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ ॥ 20 ॥

अपूपवान् अन्नवान्,
चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ ॥ 21 ॥

अपूपवान् मधुमान्,
चरुः आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ ॥ 2 ॥

अपूपवान् रसवान्
चरु आ इह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ ॥ 23 ॥

अपूपवान् रसवान्,
चरुः आ इह सीदतु।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे,
ये देवानाम् हुतभागा इह स्थ ॥ 24 ॥

स्वधा नमः सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 4)

अग्नये कव्यवाहनाय, स्वधा नमः ॥ 71 ॥
सोमाय पितृमते स्वधा नमः ॥ 72 ॥
पितृभ्यः सोमवत्भ्यः, स्वधा नमः ॥ 73 ॥
यमाय पितृमते, स्वधा नमः ॥ 74 ॥

स्वधा ये च त्वाम् अनु सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 4)

एतत् ते प्रततामह, स्वधा ये च त्वाम् अनु ॥ 75 ॥
एतत् ते ततामह, स्वधा ये च त्वाम् अनु ॥ 76 ॥

तस्मै सूक्त

(अथर्ववेद, अष्टादशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 4)

नमो वः पितरो यत् घोरम् तस्मै,
नमो वः पितरो यत् क्रूरम् तस्मै ॥ 83 ॥

नमो वः पितरो यत् शिवम् तस्मै,
नमो वः पितरो यत् स्योनम् तस्मै ॥ 84 ॥

इति अष्टादशो काण्डम्

ॐ

एकोनविंशो काण्डः

अजायत सूक्त

(अथर्ववेद, एकोनविंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 6)

ब्राह्मणो अस्य मुखम् आसीत्, बाहू राजन्यः अभवत्।
मध्यम् तत् अस्य यत् वैश्यः, पद्भ्याम् शूद्रो अजायत ॥ 6

चन्द्रमा मनसो जातः, चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्रात् वायुः च प्राणः च, मुखात् अग्निः अजायत ॥ 7 ॥

तम् यज्ञम् प्रावृषा प्र औक्षन्, पुरुषम् जातम् अग्रशः।
तेन देवा अयजन्त, साध्या वसवः च ये ॥ 11 ॥

तस्मात् अश्वा अजायन्त, ये च के उभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्, तस्मात् जाताः अजावयः ॥ 12 ॥

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः, ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दः ह जज्ञिरे तस्मात्, यजुः तस्मात् अजायत ॥ 13 ॥

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः, सम्भृतम् पृषदाज्यम्।
पशून् तान् चक्रे वायव्यान्, आरण्या ग्राम्याः च ये ॥ 14 ॥

मुञ्च नः परि अंहसः सूक्त

(अथर्ववेद, एकोनविंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 44)

बहु इदम् राजन् वरुण, अनृतम् आह पूरुषः।
तस्मात् सहस्त्रवीर्य, मुञ्च नः परि अंहसः ॥ 8 ॥

यत् आपो अघ्न्याः इति, वरुण इति यत् ऊचिम।
तस्मात् सहस्त्रवीर्य, मुञ्च नः परि अंहसः ॥ 9 ॥

मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम सूक्त

(अथर्ववेद, एकोनविंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 55)

रात्रिम् रात्रिम् अप्रयातम् भरन्तो,
अश्वायेव तिष्ठते घासम् अस्मै।
रायः पोषेण सम् इषा मदन्तो,
मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम ॥ 1 ॥

या ते वसोः वात इषुः,
सा त एषा तया नो मृड।

रायः पोषेण सम् इषा मदन्तो,
मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम ॥ 2 ॥

सायम्सायम् गृहपतिः नो अग्निः,
प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता।
वसोः-वसोः वसुदान एधि वयम्,
त्वा इन्धानाः तन्वम् पुषेम ॥ 3 ॥

सर्वम् आयुः जीव्यासम् सूक्त

(अथर्ववेद, एकोनविंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 69)

जीवा स्थ जीव्यासम्, सर्वम् आयुः जीव्यासम् ॥ 1 ॥

उपजीवा स्थ उप जीव्यासम्, सर्वम् आयुः जीव्यासम् ॥2॥

सम् जीवा स्थ सम् जीव्यासम्, सर्वम् आयुः जीव्यासम् ॥3॥
जीवला स्थ जीव्यासम्, सर्वम् आयुः जीव्यासम् ॥ 4 ॥

इति एकोनविंशो काण्डम्

ॐ

विंशो काण्डः

वलम् सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 28)

वि अन्तरिक्षम् अतिरन्, मदे सोमस्य रोचना।
इन्द्रो यत् अभिनत् वलम्॥ 1 ॥

उत् गाः आजत् अङ्गिरोभ्यः, आविष्कृण्वन् गुहा सतीः।
अर्वाञ्चम् नुनुदे वलम्॥ 2 ॥

सः जनासः इन्द्रः सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 34)

यो जातः एव प्रथमो मनस्वान्,
देवः देवान् क्रतुना परि अभूषत्।
यस्य शुष्मात् रोदसी अभ्यसेताम्,
नृम्णस्य मह्ना सः जनासः इन्द्रः॥ 01 ॥

यः पृथिवीम् व्यथमानाम् अदृंहत्,
यः पर्वतान् प्रकुपितान् अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षम् विममे वरीयो,

यो द्याम् अस्तभ्नात्, सः जनासः इन्द्रः ।।02 ॥

यो हत्वा अहिम् अरिणात् सप्त सिन्धून्,
यो गाः उदाजत् अपधा बलस्य।
यो अश्मनोः अन्तः अग्निम् जजान,
सम् वृक् समत्सु, सः जनासः इन्द्रः॥ 03 ॥

येन इमा विश्वा च्यवना कृतानि,
यो दासम् वर्णम् अधरम् गुहा अकः।
श्वघ्नी इव यो जिगीवान् लक्षम् आदद्,
अर्यः पुष्टानि, सः जनासः इन्द्रः॥ 04 ॥

यम् स्मा पृच्छन्ति कुह सः इति घोरम्,
उत ईम् आहुः न एषो अस्ति इति एनम्।
सो अर्यः पुष्टीः विजः इव आ मिनाति,
श्रत् अस्मै धत्त, सः जनासः इन्द्रः॥ 05 ॥

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य,
यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो यो अविता सुशिप्रः,
सुतसोमस्य, सः जनासः इन्द्रः॥ 06 ॥

यस्य अश्वासः प्रदिशि यस्य गावो,
यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यम् यः उषसम् जजान,
यो अपाम् नेता, स जनासः इन्द्रः ॥ 07 ॥

यम् क्रन्दसी संयती विह्वयेते,
परे अवरे उभया अमित्राः।
समानम् चिद् रथम् आतस्थिवांसा,
नाना हवेते, सः जनासः इन्द्रः। 08 ॥

यस्मात् न ऋते विजयन्ते जनासो,
यम् युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानम् बभूव,
यो अच्युतच्युत्, सः जनासः इन्द्रः ॥ 09 ॥

यः शश्वतो महि एनो दधानान्,
अमन्यमानान् शर्वा जघान।
यः शर्धते न अनुददाति शृध्याम्,
यो दस्योः हन्ता, सः जनासः इन्द्रः ॥ 10 ॥

यः शम्बरम् पर्वतेषु क्षियन्तम्,
चत्वारिंश्याम् शरदि अनु अविन्दत्।
ओजायमानम् यो अहिम् जघान,

दानुम् शयानम्, सः जनासः इन्द्रः ॥ 11 ॥

या शम्बरम् परि अतरत् कसीभिः,
यो अचारु कास्ना अपिबत् सुतस्य।
अन्तः गिरौ यजमानम् बहुम् जनम्,
यस्मिन् ना मूर्छत् स जनास इन्द्रः ॥ 12

यः सप्तरश्मिः वृषभः तुविष्मान्,
अव असृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून्।
यो रौहिणम् अस्फुरद् वज्रबाहुः,
द्याम् आ रोहन्तम्, सः जनासः इन्द्रः ॥ 13 ॥

द्यावा चिद् अस्मै पृथिवी नमेते,
शुष्मात् चिद् अस्य पर्वता भयन्ते।
यः सोमपाः निचितो वज्रबाहुः,
यो वज्रहस्तः, सः जनास इन्द्रः ॥ 14 ॥

यः सुन्वन्तम् अवति यः पचन्तम्,
यः शंसन्तम् यः शशमानम् ऊती।
यस्य ब्रह्म वर्धनम् यस्य सोमो,
यस्य इदम् राधः, सः जनासः इन्द्रः ॥ 15 ॥

जातो व्यख्यत् पित्रोः उपस्थे,
भुवो न वेद जनितु परस्य।
स्तविष्यमाणो नो यो अस्यत्,
व्रता देवानाम् स जनास इन्द्रः॥ 16॥

यः सोम-कामो हर्यः वः सूरिः,
यस्मात् रेजन्ते भुवनानि विश्वा।
यो जघान शम्बरम् यः च शुष्णम्,
य एकवीरः स जनास इन्द्रः॥ 17॥

यः सुन्वते पचते दुध्रः आ चिद्,
वाजम् दर्दर्षि स किल असि सत्यः।
वयम् ते इन्द्र, विश्वह प्रियासः,
सुवीरासो विदथम् आ वदेम॥ 18॥

वलम् सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 39)
वि अन्तरिक्षम् अतिरत्, मदे सोमस्य रोचना।
इन्द्रो यत् अभिनत् वलम्॥ 2॥

उत् गा आजत् अङ्गिरोभ्य, आविः कृण्वन् गुहा सतीः।
अर्वाञ्चम् नुनुदे वलम्॥ 3॥

तत् आ भर सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 43)
भिन्धि विश्वाः अप द्विषः, परि बाधो जही मृधः।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर॥ 1॥

यत् वीलौ इन्द्र यत् स्थिरे, यत् पर्शाने पराभृतम्।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर॥ 2॥

यस्य ते विश्वमानुषो, भूरेः दत्तस्य वेदति।
वसु स्पार्हम् तत् आ भर॥ 3॥

इन्द्रो अङ्ग सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 63)
यः एकः इत् विदयते, वसु मर्ताय दाशुषे।
ईशानो अप्रतिष्कुतः इन्द्रो अङ्ग॥ 4॥

कदा मर्तम् अराधसम्, पदा क्षुम्पमिव स्फुरत्।
कदा नः शुश्रवत्, गिर इन्द्रो अङ्ग॥ 5॥

यः चित् हि त्वा बहुभ्य, आ सुतवान् आविवासति।
उग्रम् तत् पत्यते, शव इन्द्रो अङ्ग॥ 6॥

यः इन्द्र सोमपातमो, मदः शविष्ठ चेतति।
येन आहंसि नि अत्रिणम् तम् ईमहे॥ 7॥

येना दशग्वम् अध्रिगुम्, वेपयन्तम् स्वर्णरम्।
येना समुद्रम्, आविथा तम् ईमहे॥ 8॥

येन सिन्धुम् महीः अपो रथानिव प्रचोदयः।
पन्थाम् ऋतस्य, यातवे तम् ईमहे॥ 9॥

अप्रतिष्कुतः सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 70)

स नो वृषन् अमुम् चरुम्, सत्रादावन् अपा वृधि।
अस्मभ्यम् अप्रतिष्कुतः॥ 12॥

तुञ्जे-तुञ्जे य उत्तरे, स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।
न विन्धे अस्य सुस्तुतिम्॥ 13॥

वृषा यूथा इव वंसगः, कृष्टीः इयर्ति ओजसा।
ईशानो अप्रतिष्कुतः॥ 14॥

ओजसा सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 93)

त्वम् इन्द्र असि वृत्रहा, वि अन्तरिक्षम् अतिरः।
उत् द्याम् अस्तभ्नाः ओजसा॥ 6॥

त्वम् इन्द्र सजोषसम्, अर्कम् बिभर्षि बाह्वोः।
वज्रम् शिशान ओजसा॥ 7॥

ज्याकाः अधि धन्वसु सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 95)

प्रो सु अस्मै पुरो रथम्, इन्द्राय शूषम् अर्चत।
अभीके चित् उ लोककृत्, सङ्गे समत्सु वृत्रहा।
अस्माकम् बोधि चोदिता, नभन्ताम् अन्यकेषाम्,
ज्याकाः अधि धन्वसु॥ 2॥

त्वम् सिन्धून् अव असृजो, अधराचो अहन् अहिम्।
अशत्रु इन्द्र जज्ञिषे, विश्वम् पुष्यसि वार्यम्,
तम् त्वा परि स्वजामहे॥ 3॥

वि षु विश्वा अरातयो, अर्यो नशन्त नो धियः।
अस्ता असि शत्रवे वधम्, यो न इन्द्र जिषांसति,
या ते रातिः ददिः वसु, नभन्ताम् अन्यकेषाम्,
ज्याका अधि धन्वसु॥ 4॥

वस्वीः अनु स्वराज्यम् सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 109)

स्वादोः इत्था विषूवतो, मध्वो पिबन्ति गौर्यः।
याः इन्द्रेण सयावरीः, वृष्णा मदन्ति शोभसे,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥ 1॥

ताः अस्य पृशनायुवः सोमम् श्रीणन्ति पृश्नयः।
प्रियाः इन्द्रस्य धेनवो, वज्रम् हिन्वन्ति सायकम्,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥ 2॥

ताः अस्य नमसा सह,: सपर्यन्ति प्रचेतसः।
व्रतानि अस्य सश्चिरे, पुरूणि पूर्वचित्तये,
वस्वीः अनु स्वराज्यम्॥ 3॥

सम् इन्दुभिः सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 111)

यत् सोमम् इन्द्र विष्णवि, यत् वा घ त्रिते आप्त्ये।
यत् वा मरुत्सु मन्दसे सम् इन्दुभिः॥ 1॥

यत् वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे।
अस्माकम् इत् सुते रणा सम् इन्दुभिः॥ 2॥

यत् वा असि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते।
उक्थे वा यस्य रण्यसि सम् इन्दुभिः॥ 3॥

स्याम सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 125)

इन्द्रः सुत्रामा स्ववान् अवोभिः,
सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधताम् द्वेषो अभयम् नः कृणोतु
सुवीर्यस्य पतयः स्याम॥ 6॥

स सुत्रामा स्ववान् इन्द्रः अस्मत्,
आरात् चित् द्वेषः सनुतः युयोतु।
तस्य वयम् सुमतौ यज्ञियस्य,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम॥ 7॥

विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 126)

वि हि सोतोः असृक्षत, न इन्द्रम् देवम् अमंसत।
यत्र अमदत् वृषाकपिः, अर्यः पुष्टेषु मत्-सखा,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः॥ 1॥

परा हि इन्द्र धावसि, वृषाकपेः अति व्यथिः।
नो अह प्र विन्दसि, अन्यत्र सोमपीतये,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 2 ॥

किम् अयम् त्वाम् वृषाकपिः, चकार हरितो मृगः।
यस्मै इरस्यसि इत् उ नु, अर्यो वा पुष्टिमत् वसु,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 3 ॥

यम् इमम् त्वम् वृषाकपिम्, प्रियम् इन्द्र अभिरक्षसि।
श्वा नु अस्य जम्भिषत्, अपि कर्णे वराहयुः,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 4 ॥

प्रिया तष्टानि मे कपिः, व्यक्ता वि अदूदुषत्।
शिरः नु अस्य राविषम्, न सुगम् दुष्कृते भुवम्,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 5 ॥

न मत् स्त्री सुभसत्तरा, न सुयाशुतरा भुवत्।
न मत् प्रति-च्यवीयसी, न सक्थि उद्यमीयसी,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 6 ॥

उवे अम्ब सुलाभिके यथा, इव अङ्ग भविष्यति।
भसत् मे अम्ब सक्थि मे, शिरः मे वि इव हृष्यति,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 7 ॥

किम् सुबाहो स्वङ्गुरे, पृथुष्टो पृथुजाघने।
किम् शूरपत्नि नः त्वम्, अभि अमीषि वृषाकपिम्,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 8 ॥

अवीराम् इव माम् अयम्, शरारुः अभि मन्यते।
उत अहम् अस्मि वीरणी, इन्द्र-पत्नी मरुत्-सखा,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 9 ॥

सम्-होत्रम् स्म पुरा नारी, समनम् वा अव गच्छति।
वेधाः ऋतस्य वीरणी, इन्द्रपत्नी महीयते,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 10 ॥

इन्द्राणीम् आसु नारिषु, सुभगाम् अहम् अश्रवम्।
नहि अस्याः अपरम् चन, जरसा मरते पतिः,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 11 ॥

न अहम् इन्द्राणि रारण, सख्युः वृषाकपेः ऋते।
यस्य इदम् अप्यम् हविः, प्रियम् देवेषु गच्छति,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 12 ॥

वृषाकपायि रेवति, सुपुत्रे आत् उ सुस्नुषे।
घसत् ते इन्द्रः उक्षणः, प्रियम् काचित्-करम्,
हविः विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥13 ॥

उक्ष्णो हि मे पञ्चदश, साकम् पचन्ति विंशतिम्।
उत् अहम् अद्मि पीवः, इत् उभा कुक्षीः पृणन्ति मे,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 14 ॥

वृषभो न तिग्म-शृङ्गो, अन्तः यूथेषु रोरुवत्।
मन्थः ते इन्द्र शम् हृदे, यम् ते सुनोति भावयुः,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 15 ॥

न स ईशे यस्य रम्बते, अन्तरा सक्थ्या कपृत्।
स इत् ईशे यस्य रोमशम्, नि-सेदुषः, विजृम्भते,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 16 ॥

न स ईशे यस्य रोमशम्, नि-सेदुषः विजृम्भते।
स इत् ईशे यस्य रम्बते, अन्तरा सक्थ्या कपृत्,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 17 ॥

अयम् इन्द्र वृषाकपिः, परस्वन्तम् हतम् विदत्।
असिम् सूनाम् नवम् चरुम्, आत् एधस्य अनः आचितम्,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥18

अयम् एमि विचाकशत्, विचिन्वन् दासम् आर्यम्।
पिबामि पाक-सुत्वनो, अभि धीरम् अचाकशम्,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 19 ॥

धन्व च यत् कृन्तत्रम् च, कति स्वित् ता वि योजना।
नेदीयसः वृषाकपे अस्तम्, आ इहि गृहान् उप,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 20 ॥

पुनः आ इहि वृषाकपे, सुविता कल्पयावहै।
यः एष स्वप्न-नंशनः, अस्तम् एषि पथा पुनः,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 21 ॥

यत् उदञ्चः वृषाकपे, गृहम् इन्द्र अजगन्तन।
क्व स्य पुल्वघः मृगः, कम् अगन् जनयोपनः,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 22 ॥

पर्शुः ह नाम मानवी, साकम् ससूव विंशतिम्।
भद्रम् भल त्यस्यै अभूत्, यस्याः उदरम् आमयत्,
विश्वस्मात् इन्द्रः उत्तरः ॥ 23 ॥

परिक्षितः सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 127)

राज्ञो विश्व-जनीनस्य, यो देवो-मर्त्यान् अति।
वैश्वानरस्य सुष्टुतिम्, आ सुनोता परिक्षितः ॥ 7 ॥

परिच्छिन्नः क्षेमम् अकरोत्, तमः आसनम् आचरन्।
कुलायन् कृण्वन् कौरव्यः, पतिः वदति जायया॥ 8॥

कतरत् ते आ हराणि, दधि मन्थाम् परि श्रुतम्।
जायाः पतिम् वि पृच्छति, राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः॥ 9॥

अभीवस्वः प्र जिहीते, यवः पक्वः पथः बिलम्।
जनः स भद्रम् एधति, राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः॥ 10॥

तोता कल्पेषु संमिता सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 128)

यो अनाक्ताक्षो अनभ्यक्तो, अमणिवो अहिरण्यवः।
अब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रः, तोता कल्पेषु संमिता। 6॥

यः आक्ताक्षः सुभ्यक्तः, सुमणिः सुहिरण्यवः।
सुब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रः, तोता कल्पेषु संमिता॥ 7।

अप्रपाणा च वेशन्ता, रेवान् अप्रतिदिश्ययः।
अयभ्या कन्या कल्याणी, तोता कल्पेषु संमिता॥8।

सुप्रपाणा च वेशन्ता, रेवान् सुप्रतिदिश्ययः।
सुयभ्या कन्या कल्याणी, तोता कल्पेषु संमिता।9॥

परिवृक्ता च महिषी, स्वस्त्या च युधिगमः।
अनाशुरः च आयामी, तोता कल्पेषु संमिता॥10।

वावाता च महिषी, स्वस्त्या च युधिगमः।
श्वाशुरः च आयामी, तोता कल्पेषु संमिता॥ 11॥

यथा कुमारि मन्यसे सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 133)

विततौ किरणौ द्वौ, तौ आ पिनष्टि पूरुषः।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे॥ 1॥

मातुः ते किरणौ द्वौ, निवृत्तः पुरुषान् ऋते।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे॥ 2॥

निगृह्य कर्णकौ द्वौ, निरायच्छसि मध्यमे।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे॥ 3॥

उत्तानायै शयानायै, तिष्ठन्ती वा अव गूहसि।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे॥ 4॥

श्लक्ष्णायाम् श्लक्ष्णिकायाम्, श्लक्ष्णम् एव अव गूहसि।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे॥ 5॥

अवश्लक्ष्णम् इव भ्रंश-दन्तः, लोममति ह्रदे।
न वै कुमारि तत् तथा, यथा कुमारि मन्यसे॥ 6॥

वि लीयते सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 134)

इह इत्थ प्राक् अपाक्, उदक् अधराक्,
स्थालीपाको वि लीयते॥ 3॥

इह इत्थ प्राक् अपाक्, उदक् अधराक्,
स वै पृथु लीयते॥ 4॥

आ उथामः दैव सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 135)

भुक् इति अभिगतः शल् इति,
अपक्रान्तः फल् इति अभिष्ठितः।
दुन्दुभिम् आहननाभ्याम्,
जरितः आ उथामः दैव॥ 1॥

कोशबिले रजनि ग्रन्थेः,
धानम् उपानहि पादम्।
उत्तमाम् जनिमाम् जन्या,
अनुत्तमाम् जनीन् वर्त्मन् यात्॥ 2॥

अलाबूनि पृषातकानि, अश्वत्थपलाशम्।
पिपीलिका वटश्वसः विद्युत् स्वापर्णशफः,
गोशफः जरितः आ उथामः दैव॥ 3॥

वि इमे देवाः अक्रंसत, अध्वर्यो क्षिप्रम् प्रचर।
सुसत्यम् इत् गवाम्, असि असि प्रखुदसि॥ 4॥

पत्नी यत् दृश्यते पत्नी यक्ष्यमाणा,
जरितः आ उथामः दैव।
होता विष्टीमेन जरितः आ उथामः दैव॥ 5॥

तथा एव इति सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 136)

महान् अग्नी उलूखलम्, अतिक्रामन्ति अब्रवीत्।
यथा तव वनस्पते, निरघ्नन्ति तथा एव इति॥ 6॥

महान् अग्नी उप ब्रूते, भ्रष्टो अथ अपि अभूभुवः।
यथा इव ते वनस्पते, पिप्पति तथा एव इति॥ 7॥

माम् अद्धि ओदनम् सूक्त

(अथर्ववेद, विंशो काण्ड, अनुवाक - 1 सूक्त 136)

महान् अग्नी महान् अग्नम्,

धावन्तम् अनु धावति।
इमाः तत् अस्य गा रक्ष यभ,
माम् अद्धि ओदनम्॥ 11।

सुदेवः त्वा महान् अग्नीः,
बबाधते महतः साधु खोदनम्।
कुसम् पीवरो नवत्॥ 12॥

वशा दग्धाम् इम अङ्गुरिम्,
प्रसृजत उग्रतम् परे।
महान् वै भद्रो यभ,
माम् अद्धि ओदनम्॥ 13॥

इति विंशो काण्डम्

ॐ

यजुर्वेद

प्रथमो अध्यायः

एमि सूक्त

(यजुर्वेद, प्रथमो अध्यायः, सूक्त 2)

अग्ने व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि,
तत् शकेयम् तत् मे राध्यताम्।
इदम् अहम् अनृतात् सत्यम् उप एमि॥5॥

कः त्वा युनक्ति, सः त्वा युनक्ति।
कस्मै त्वा युनक्ति, तस्मै त्वा युनक्ति।
कर्मणे वाम्, वेषाय वाम्॥ 6॥

प्रति उष्टम् रक्षः, प्रति उष्टा अरातयो।
निष्टप्तम् रक्षो, निष्टप्ता अरातयः।
उरु अन्तरिक्षम् अनु एमि॥7॥

इति प्रथमो अध्यायः

ॐ

द्वितीयः अध्यायः

सूर्यस्य आ वृतम् अनु आ वर्ते सूक्त

(यजुर्वेद, द्वितीयः अध्यायः, सूक्त 7)

स्वयम्भूः असि श्रेष्ठः रश्मिः, वर्चोदा असि वर्चः मे देहि ॥
सूर्यस्य आ वृतम् अनु आ वर्ते ॥ 26 ॥

अग्ने गृहपते सुगृहपतिः त्वया, अग्ने अहम् गृहपतिना भूयासम्,
सु गृहपतिः त्वम् मया, अग्ने गृहपतिना भूयाः ॥
अस्थूरि णौ गार्हपत्यानि सन्तु शतम् हिमाः,
सूर्यस्य आ वृतम् अनु आ वर्ते ॥ 27 ॥

ॐ

तृतीयो अध्यायः

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, तृतीयो अध्यायः, सूक्त 3)

अग्निः ज्योतिः, ज्योतिः अग्निः स्वाहा ॥
सूर्यः ज्योतिः, ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥
अग्निः वर्चो, ज्योतिः वर्चः स्वाहा ॥

सूर्यः वर्चो, ज्योतिः वर्चः स्वाहा ॥
ज्योतिः सूर्यः, सूर्यः ज्योतिः स्वाहा ॥ 9 ॥

सजूः देवेन सवित्रा, सजूः रात्र्या इन्द्रवत्या ॥
जुषाणो अग्निः वेतु स्वाहा ॥
सजूः देवेन सवित्रा, सजूः उषसा इन्द्रवत्या ॥
जुषाणः सूर्यः वेतु स्वाहा ॥ 10 ॥

अभि सहः आ यच्छस्व सूक्त

(यजुर्वेद, तृतीयो अध्यायः, सूक्त 10)

आ अगन्म विश्ववेदसम्, अस्मभ्यम् वसुवित्तमम् ॥
अग्ने सम्राट् अभि द्युम्नम्, अभि सहः आ यच्छस्व ॥ 38 ॥

अयम् अग्निः गृहपतिः, गार्हपत्यः प्रजाया वसुवित्तमः ॥
अग्ने गृहपते अभि द्युम्नम्, अभि सहः आ यच्छस्व ॥ 39 ॥

अयम् अग्निः पुरीष्यो, रयिमान् पुष्टिवर्धनः ॥
अग्ने पुरीष्य अभि द्युम्नम्, अभि सहः आ यच्छस्व ॥ 40 ॥

योजा नु इन्द्र ते हरी सूक्त

(यजुर्वेद, तृतीयो अध्यायः, सूक्त 13)

अक्षन् अमीमदन्त हि, अव प्रिया अधूषत ॥
अस्तोषत स्वभानवो, विप्रा नविष्ठया मती,

योजा नु इन्द्र ते हरी ॥ 51 ॥

सुसन्दृशम् त्वा वयम्, मघवन् वन्दिषीमहि ॥
प्र नूनम् पूर्णबन्धुरः, स्तुतो यासि वशान् अनु,
योजा नु इन्द्र ते हरी ॥ 52 ॥

सचेमहि सूक्त

(यजुर्वेद, तृतीयो अध्यायः, सूक्त 14)

पुनः नः, पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः।
जीवम् व्रातम् सचेमहि ॥ 55 ॥

वयम् सोम व्रते तव, मनः तनूषु बिभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि ॥ 56 ॥

ॐ

चतुर्थो अध्यायः

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, चतुर्थो अध्यायः, सूक्त 2)

स्वाहा यज्ञम् मनसः स्वाहा, उरोः अन्तरिक्षात् स्वाहा ॥
द्यावा-पृथिवीभ्याम् स्वाहा, वातात् आरभे स्वाहा ॥ 6 ॥

आकूत्यै प्रयुजे अग्नये स्वाहा, मेधायै मनसे अग्नये स्वाहा,
दीक्षायै तपसे अग्नये स्वाहा, सरस्वत्यै पूष्णे अग्नये स्वाहा ॥
आपो देवीः बृहतीः विश्व-शम्भुवो, द्यावा-पृथिवी उरो अन्तरिक्ष ॥
बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा ॥ 7 ॥

विश्वो देवस्य नेतुः, मर्तो वुरीत सख्यम् ॥
विश्वो राय इषुध्यति, द्युम्नम् वृणीत पुष्यसे ॥ स्वाहा ॥ 8 ॥

ॐ

पञ्चमो अध्यायः

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चमो अध्यायः, सूक्त 5)

युञ्जते मनः उत युञ्जते धियो,
विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनावित् एक इत्,
मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥ स्वाहा ॥ 14 ॥

इदम् विष्णुः विचक्रमे, त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढम् अस्य पांसुरे स्वाहा ॥ 15 ॥

इरावती धेनुमती हि भूतम्, सूयवसिनी मनवे दशस्या।
वि अस्कभ्ना रोदसी, विष्णो एते दाधर्थ,

पृथिवीम् अभितः मयूखैः ॥स्वाहा॥16॥

विष्णवे त्वा सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चमो अध्यायः, सूक्त 6)

विष्णोः नु कम् वीर्याणि प्रवोचम्,
यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
यो अस्कभायत् उत्तरम् सधस्थम्,
विचक्रमाणः त्रेधा उरुगायो विष्णवे त्वा॥18॥

दिवो वा विष्णो उत वा पृथिव्या,
महो वा विष्णो उरोः अन्तरिक्षात्।
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्व,
आ प्रयच्छ दक्षिणात् आ उत,
सव्यात् विष्णवे त्वा॥19॥

प्र तत् विष्णुः स्तवते वीर्येण,
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः॥
यस्य उरुषु त्रिषु वि क्रमणेषु,
अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥20॥

विष्णो रराटम् असि, विष्णोः श्नप्त्रे स्थो,
विष्णो स्यूः असि, विष्णोः ध्रुवो असि।
वैष्णवम् असि विष्णवे त्वा॥21॥

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चमो अध्यायः, सूक्त 10)

अयम् नो अग्निः वरिवः कृणोतु,
अयम् मृधः पुरः एतु प्रभिन्दन्।
अयम् वाजान् जयतु वाजसातौ,
अयम् शत्रून् जयतु जर्हृषाणः॥स्वाहा॥37॥

उरु विष्णो विक्रमस्व,
उरु क्षयाय नः कृधि।
घृतम् घृतयोने पिब,
प्र प्र यज्ञपतिम् तिर॥स्वाहा॥38॥

ॐ

अथ षष्ठो अध्यायः

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, षष्ठो अध्यायः, सूक्त 7)

सोम राजन् विश्वाः त्वम् प्रजा उपावरोह,
विश्वाः त्वाम् प्रजा उपावरोहन्तु।
शृणोतु अग्निः समिधा हवम् मे,
शृण्वन्तु आपो धिषणाः च देवीः।
श्रोता ग्रावाणो विदुषो न यज्ञम् शृणोतु,
देवः सविता हवम् मे स्वाहा॥26।

देवीः आपो अपाम् नपात् यो व ऊर्मिः,
हविष्य इन्द्रियावान् मदिन्तमः।
तम् देवेभ्यो देवत्रा दत्त,
शुक्रपेभ्यो येषाम् भाग स्थ स्वाहा॥27॥

यम् अग्ने पृत्सु मर्त्यम्, अवा वाजेषु यम् जुनाः।
स यन्ता शश्वतीः इषः स्वाहा॥29॥

ॐ

अथ सप्तमो अध्यायः

त्वा सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तमो अध्यायः, सूक्त 2)

स्वाङ्कृतो असि विश्वेभ्य, इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः,
पार्थिवेभ्यो मनः त्वा अष्टु स्वाहा,
त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यः,
त्वा मारीचिपेभ्यः उदानाय त्वा॥6॥

आ वायो भूष शुचिपा उप नः,
सहस्रम् ते नियुतो विश्ववार।
उपो ते अन्धो मद्यम् अयामि,
यस्य देव दधिषे पूर्वपेयम् वायवे त्वा॥7॥

इन्द्रवायू इमे सुता, उप प्रयोभिः आ गतम्।
इन्दवो वाम् उशन्ति हि।
उपयामगृहीतो असि, वायवे इन्द्रवायुभ्याम् त्वा,
एष ते योनिः सजोषोभ्याम् त्वा॥8॥

अयम् वाम् मित्रावरुणा, सुतः सोम ऋतावृधा।
मम इत् इह श्रुतम् हवम्।
उपयाम गृहीतो असि, मित्रावरुणाभ्याम् त्वा॥9॥

राया वयम् ससवांसो मदेम, हव्येन देवा यवसेन गावः।
ताम् धेनुम् मित्रावरुणा युवम् नो, विश्वाहा धत्तम् अनपस्फुरन्तीम्,
एष ते योनिः ऋतायुभ्याम् त्वा॥10॥

या वाम् कशा मधुमती, अश्विना सूनृतावती।
तया यज्ञम् मिमिक्षतम्।
उपयाम गृहीतो असि अश्विभ्याम् त्वा,
एष ते योनिः माध्वीभ्याम् त्वा॥11।

असि सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तमो अध्यायः, सूक्त 3)

तम् प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथा इमथा,
ज्येष्ठ-तातिम् बर्हिसदम् स्वर्विदम्।
प्रतीचीनम् वृजनम् दोहसे धुनिम्,

आशुम् जयन्तम् अनु यासु वर्द्धसे।
उपयाम गृहीतो असि शण्डाय त्वा,
एष ते योनिः वीरताम् पाहि,
अपमृष्टः शण्डो देवाः त्वा,
शुक्रपाः प्र नयन्तु अनाधृष्टा असि ॥12॥

सुवीरो वीरान् प्रजनयन् परि इहि,
अभि रायः पोषेण यजमानम्।
सम् जग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः,
शुक्र-शोचिषा निरस्तः शण्डः,
शुक्रस्य अधिष्ठानम् असि ॥13॥

असि सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तमो अध्यायः, सूक्त 4)

मनो न येषु हवनेषु तिग्मम्, विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता।
आ यः शर्याभिः तुवि-नृम्णो अस्य, अश्रीणीत आ-दिशम् गभस्तौ।
एष ते योनिः प्रजाः पाहि अपमृष्टो, मर्को देवाः त्वा मन्थिपाः,
प्र नयन्तु अनाधृष्टा असि ॥17॥

सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परि इहि, अभि रायः पोषेण यजमानम्।
सम् जग्मानो दिवा पृथिव्या, मन्थी मन्थि-शोचिषा निः अस्तो,
मर्को मन्थिनो अधिष्ठानम् असि ॥18॥

यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तमो अध्यायः, सूक्त 5)

उपयाम गृहीतो असि इन्द्राय त्वा, बृहत् वते वयस्वते,
उक्थाव्यम् गृह्णामि।
यत् ते इन्द्र बृहत् वयः, तस्मै त्वा विष्णवे त्वा,
एष ते योनिः उक्तेभ्यः त्वा, देवेभ्यः त्वा देवाव्यम् गृह्णामि,
यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि ॥22॥

मित्रा-वरुणाभ्याम् त्वा देवाव्यम्, यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्राय त्वा देवाव्यम्, यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्राग्निभ्याम् त्वा देवाव्यम्, यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्रावरुणाभ्याम् त्वा देवाव्यम्, यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्राबृहस्पतिभ्याम् त्वा देवाव्यम्, यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि,
इन्द्राविष्णुभ्याम् त्वा देवाव्यम्, यज्ञस्य आयुषे गृह्णामि ॥23॥

वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तमो अध्यायः, सूक्त 6)

प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व, व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
उत् आनाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व, वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
क्रतूदक्षाभ्याम् मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व, श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,
चक्षुर्भ्याम् मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् ॥27॥

आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व, ओजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व,

आयुषे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व, विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो,
वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् ॥28॥

त्वा सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तमो अध्यायः, सूक्त 8)

इन्द्राग्नी आ गतम् सुतम्, गीर्भिः नभो वरेण्यम्।
अस्य पातम् धिया इषिता।
उपयाम गृहीतो असि इन्द्राग्निभ्याम् त्वा,
एष ते योनिः इन्द्राग्निभ्याम् त्वा ॥31॥

आ घा ये अग्निम् इन्धते, स्तृणन्ति बर्हिः आनुषक्।
येषाम् इन्द्रो युवा सखा।
उपयाम गृहीतो असि अग्नीन्द्राभ्याम् त्वा,
एष ते योनिः अग्नीन्द्राभ्याम् त्वा ॥32॥

ओमासः चर्षणी-धृतो, विश्वे देवास आ गत।
दाश्वांसो दाशुषः सुतम्।
उपयाम गृहीतो असि, विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्य,
एष ते योनिः विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्यः ॥33॥

विश्वे देवास आ गत, शृणुता मे इमम् हवम्।
आ इदम् बर्हिः नि सीदत।
उपयाम गृहीतो असि, विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्य,
एष ते योनिः, विश्वेभ्यः त्वा देवेभ्यः ॥34॥

एष ते योनिः इन्द्राय त्वा मरुत्वते सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तमो अध्यायः, सूक्त 9)

इन्द्र मरुत्वः इह पाहि सोमम्, यथा शार्याते अपिबः सुतस्य।
तव प्रणीती तव शूर शर्म्मन्, आ विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा मरुत्वते,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥35॥

मरुत्वन्तम् वृषभम् वावृधानम्, अकवारिम् दिव्यम् शासम् इन्द्रम्।
विश्वा-साहम् अवसे नूतनाय, उग्रम् सहोदाम् इह तम् हुवेम।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा मरुत्वते,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा मरुत्वते।
उपयाम गृहीतो असि, मरुताम् त्वा ओजसे ॥36॥

सजोषाः इन्द्र सगणो मरुद्भिः, सोमम् पिब वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रून् अप मृधो नुदस्व, अथ अभयम् कृणुहि विश्वतो नः।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा मरुत्वते,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥37॥

मरुत्वान् इन्द्र वृषभो रणाय, पिबा सोमम् अनु स्वधम् मदाय।
आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मिम्, त्वम् राजा असि प्रति-पत् सुतानाम्।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा मरुत्वते,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा मरुत्वते ॥38॥

ॐ

अथ अष्टमो अध्यायः

आदित्येभ्यः त्वा सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टमो अध्यायः, सूक्त 1)

कदाचन स्तरीः असि, न इन्द्र सश्चसि दाशुषे॥
उप उप इत् नु मघवन् भूयः, इत् नु ते दानम् देवस्य,
पृच्यते आदित्येभ्यः त्वा॥2॥

कदाचन प्र युच्छसि, उभे नि पासि जन्मनी।
तुरीय आदित्य सवनम्, त इन्द्रियम् आ तस्थौ,
अमृतम् दिवि आदित्येभ्यः त्वा॥3॥

यज्ञो देवानाम् प्रति एति सुम्नम्, आदित्या सो भवता मृडयन्तः।
आ वो अर्वाची सुमतिः ववृत्यात्, अंहोः चित् या वरिवोवित्तरा,
असत् आदित्येभ्यः त्वा॥4॥

एष ते योनिः इन्द्राय त्वा षोडशिने सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टमो अध्यायः, सूक्त 7)

आ तिष्ठ वृत्रहन् रथम्, युक्ता ते ब्रह्मणा हरी।
अर्वाचीनम् सु ते मनो, ग्रावा कृणोतु वग्नुना।
उपयाम-गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा षोडशिने,

एष ते योनिः इन्द्राय त्वा षोडशिने॥33॥
युक्ष्व आ हि केशिना, हरी वृषणा कक्ष्यप्रा।
अथा न इन्द्र सोमपा, गिराम् उपश्रुतिम् चर।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा षोडशिने,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा षोडशिने॥34॥

इन्द्रम् इत् हरी वहतो, अप्रतिधृष्ट-शवसम्।
ऋषीणाम् च स्तुतीः, उप यज्ञम् च मानुषाणाम्।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा षोडशिन,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा षोडशिने॥35॥

यस्मात् न जातः परो अन्यो अस्ति,
यः आविवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया संरराणः,
त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी॥36॥

अहम् मनुष्येषु भूयासम् सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टमो अध्यायः, सूक्त 8)

अग्ने पवस्व स्वपा, अस्मे वर्चः सुवीर्यम्।
दधत् रयिम् मयि पोषम्।
उपयाम गृहीतो असि, अग्नये त्वा वर्चसे,
एष ते योनिः अग्नये त्वा वर्चसे।
अग्ने वर्चस्विन् वर्चस्वान्, त्वम् देवेषु असि वर्चस्वान्,

अहम् मनुष्येषु भूयासम् ॥38॥

उत् तिष्ठन् ओजसा, सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः।
सोमम् इन्द्र चमू सुतम्।
उपयाम गृहीतो असि, इन्द्राय त्वा ओजसे,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा ओजसे।
इन्द्र ओजिष्ठ ओजिष्ठः, त्वम् देवेषु असि ओजिष्ठो,
अहम् मनुष्येषु भूयासम् ॥39॥

अदृश्रम् अस्य केतवो, वि रश्मयो जनान् अनु।
भ्राजन्तो अग्नयो यथा।
उपयाम गृहीतो असि, सूर्याय त्वा भ्राजाय,
एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय।
सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठः, त्वम् देवेषु असि भ्राजिष्ठो,
अहम् मनुष्येषु भूयासम् ॥40॥

एष ते योनिः इन्द्राय त्वा विश्वकर्म्मणे सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टमो अध्यायः, सूक्त 9)

वाचः पतिम् विश्वकर्म्माणम् ऊतये, मनो-जुवम् वाजे अद्य हुवेम।
स नो विश्वानि हवनानि जोषत्, विश्वशम्भूः अवसे साधुकर्मा।
उपयामगृहीतो असि इन्द्राय त्वा विश्वकर्मण,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा विश्वकर्म्मणे ॥45॥

विश्वकर्म्मन् हविषा वर्द्धनेन, त्रातारम् इन्द्रम् अकृणोः अवध्यम्।
तस्मै विशः सम् अनमन्त पूर्वीः, अयम् उग्रो वि-हव्यो यथा असत्।
उपयामगृहीतो असि, इन्द्राय त्वा विश्वकर्म्मण,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥46॥

ॐ

अथ नवमो अध्यायः

एष ते योनिः, इन्द्राय त्वा जुष्टतमम् सूक्त

(यजुर्वेद, नवमो अध्यायः, सूक्त 1)

ध्रुवसदम् त्वा नृसदम्, मनः सदम्,
उपयामगृहीतो असि इन्द्राय त्वा जुष्टम् गृह्णामि,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।
अप्सुसदम् त्वा घृतसदम्, व्योमसदम्,
उपयामगृहीतो असि इन्द्राय त्वा जुष्टम् गृह्णामि,
एष ते योनिः इन्द्राय त्वा जुष्टमम्।
पृथिविसदम् त्वा अन्तरिक्षसदम्,
दिविसदम् देवसदम्, नाकसदम्,
उपयामगृहीतो असि इन्द्राय त्वा जुष्टम् गृह्णामि
एष ते योनिः, इन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥2॥

अपाम् रसम् उत् वयसम्, सूर्ये सन्तम् समाहितम्।
अपाम् रसस्य यो रसः तम्, वो गृह्णामि उत्तमम्,

उपयामगृहीतो असि इन्द्राय त्वा जुष्टम् गृह्णामि,
एष ते योनिः, इन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥3॥

उत् अजयत् तान् उत् जेषम् सूक्त

(यजुर्वेद, नवमो अध्यायः, सूक्त 7)

अग्निः एक अक्षरेण प्राणम्, उत् अजयत् तम् उत् जेषम्,
अश्विनौ द्वि अक्षरेण द्विपदो मनुष्यान्,
उत् अजयताम् तान् उत् जेषम्,
विष्णुः त्रि अक्षरेण त्रीन् लोकान्, उत् अजयत् तान् उत् जेषम्,
सोमः चतुरक्षेण चतुष्पदः पशून्, उत् अजयत् तान् उत् जेषम्॥31॥

पूषा पञ्च अक्षरेण पञ्च दिश, उत् अजयत् ता उत् जेषम्,
सविता षड् अक्षरेण षड् ऋतून्, उत् अजयत् तान् उत् जेषम्,
मरुतः सप्त अक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशून्,
उत् अजयन् तान् उत् जेषम्, बृहस्पतिः अष्ट अक्षरेण गायत्रीम्,
उत् अजयत् ताम् उत् जेषम्॥32॥

मित्रो नव अक्षरेण त्रिवृतम् स्तोमम्, उत् अजयत् तम् उत् जेषम्,
वरुणो दश अक्षरेण विराजम्, उत् अजयत् ताम् उत् जेषम्,
इन्द्र एकादश अक्षरेण त्रिष्टुभम्, उत् अजयत् ताम् उत् जेषम्,
विश्वे देवा द्वादश अक्षरेण जगतीम्, उत् अजयन् ताम् उत् जेषम् ॥33।

वसवः त्रयोदश अक्षरेण त्रयोदशम् स्तोमम्,
उत् अजयन् तम् उत् जेषम्,

रुद्राः चतुर्दश अक्षरेण चतुर्दशम् स्तोमम्,
उत् अजयन् तम् उत् जेषम्।
आदित्याः पञ्चदश अक्षरेण पञ्चदशम् स्तोमम्,
उत् अजयन् तम् उत् जेषम्,
अदितिः षोडश अक्षरेण षोडशम् स्तोमम्,
उत् अजयत् तम् उत् जेषम्,
प्रजापतिः सप्तदश अक्षरेण सप्तदशम् स्तोमम्,
उत् अजयत् तम् उत् जेषम्॥34॥

एष ते निः ऋते भागः तम् जुषस्व स्वाहा,
अग्नि-नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः-सद्भ्यः स्वाहा,
यम-नेत्रेभ्यो देवेभ्यः दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा,
विश्वदेव-नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चातसद्भ्यः स्वाहा,
मित्रावरुण-नेत्रेभ्यो वा मरुत्-नेत्रेभ्यो वा,
देवेभ्य उत्तरासद्भ्यः स्वाहा, सोम-नेत्रेभ्यो देवेभ्य,
उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः स्वाहा॥35॥

ये देवा अग्नि-नेत्राः पुरः-सदः तेभ्यः स्वाहा,
ये देवा यमनेत्रा दक्षिणा-सदः तेभ्यः स्वाहा,
ये देवाः विश्वदेव-नेत्राः पश्चात् सदः तेभ्यः स्वाहा,
ये देवाः मित्रावरुण-नेत्रा वा मरुत्-नेत्रा,
वा उत्तरा-सदः तेभ्यः स्वाहा, ये देवाः सोम-नेत्रा,
उपरिसदो दुवस्वन्तः तेभ्यः स्वाहा॥36॥

ॐ

अथ दशमो अध्यायः

राष्ट्रम् अमुष्मै देहि सूक्त

(यजुर्वेद, दशमो अध्यायः, सूक्त 1)

वृष्णः ऊर्मिः असि राष्ट्रदा, राष्ट्रम् मे देहि स्वाहा।
वृष्णः ऊर्मिः असि राष्ट्रदा, राष्ट्रम् अमुष्मै देहि।
वृषसेनो असि राष्ट्रदा, राष्ट्रम् मे देहि स्वाहा।
वृषसेनो असि राष्ट्रदा, राष्ट्रम् अमुष्मै देहि॥2॥

अर्थेत स्थ राष्ट्रदा, राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
अर्थेत स्थ राष्ट्रदा, राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
ओजस्वती स्थ राष्ट्रदा, राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
ओजस्वती स्थ राष्ट्रदा, राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
आपः परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा, राष्ट्रम् मे दत्त स्वाहा,
आपः परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा, राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त,
अपाम् पतिः असि राष्ट्रदा, राष्ट्रम् मे देहि स्वाहा,
अपाम् पतिः असि राष्ट्रदा, राष्ट्रम् अमुष्मै देहि,
अपाम् गर्भो असि राष्ट्रदा, राष्ट्रम् मे देहि स्वाहा,
अपाम् गर्भो असि राष्ट्रदा, राष्ट्रम् अमुष्मै देहि॥3॥

द्रविणम् सूक्त

(यजुर्वेद, दशमो अध्यायः, सूक्त 3)

अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीम्,
आ रोह गायत्री त्वा अवतु,
रथन्तरम् साम त्रिवृत् स्तोमो,
वसन्त ऋतुः ब्रह्म द्रविणम्॥10॥

दक्षिणाम् आ रोह त्रिष्टुप् त्वा अवतु,
बृहत् साम पञ्चदश स्तोमो,
ग्रीष्म ऋतुः क्षत्रम् द्रविणम्॥11॥

प्रतीचीम् आ रोह जगती, त्वा अवतु,
वैरूपम् साम सप्तदश स्तोमो,
वर्षा ऋतुः विड् द्रविणम्॥12॥

उदीचीम् आ रोह अनुष्टुप्, त्वा अवतु,
वैराजम् साम एकविंश स्तोमः,
शरत् ऋतुः फलम् द्रविणम्॥13॥

ॐ

अथ एकादशो अध्यायः

छन्दसा अङ्गिरस्वत् सूक्त

(यजुर्वेद, एकादशो अध्यायः, सूक्त 2)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे अश्विनोः, बाहुभ्याम् पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आ ददे गायत्रेण छन्दसा अङ्गिरस्वत्,
पृथिव्याः सधस्थात् अग्निम् पुरीष्यम् अङ्गिरस्वत्,
आ भर त्रैष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्॥9॥

अभ्रिः असि नारी असि, त्वया वयम् अग्निम् शकेम,
खनितुम् सधस्थ आ।
जागतेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्॥10॥

हस्त आधाय सविता, बिभ्रत् अभ्रिम् हिरण्ययीम्।
अग्नेः ज्योतिः निचाय्य, पृथिव्या अधि आ अभरत्,
आनुष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत्॥11॥

तत् जुषस्व यविष्ठ्य सूक्त

(यजुर्वेद, एकादशो अध्यायः, सूक्त 17)

यत् अग्ने कानि कानि, चित् आ ते दारुणि दध्मसि।
सर्वम् तत् अस्तु ते घृतम्, तत् जुषस्व यविष्ठ्य॥73॥

यत् अति उपजिह्विका, यत् वम्रो अति-सर्पति।
सर्वम् तत् अस्तु ते घृतम्, तत् जुषस्व यविष्ठ्य॥74॥

ॐ

अथ द्वादशो अध्यायः

सम् दत्त वीर्य्यम् सूक्त

(यजुर्वेद, द्वादशो अध्यायः, सूक्त 19)

या ओषधीः सोमराज्ञीः, विष्ठिताः पृथिवीम् अनु।
बृहस्पति-प्रसूताः अस्यै, सम् दत्त वीर्य्यम्॥93॥

याः च इदम् उप-शृण्वन्ति, याः च दूरम् परागताः।
सर्वाः सङ्गत्य वीरुधो अस्यै, सम् दत्त वीर्य्यम्॥94॥

ॐ

अथ त्रयोदशो अध्यायः

तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 2)

नमो अस्तु सर्पेभ्यो, ये के च पृथिवीम् अनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि, तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥6॥

या इषवो यातु-धानानाम्, ये वा वनस्पतीन् अनु।
ये वा अवटेषु शेरते, तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥7॥

ये वा अमी रोचने दिवो, ये वा सूर्य्यस्य रश्मिषु।
येषाम् अप्सु सदः कृतम्, तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥8॥

यम् द्विष्मः तम् ते शुक् ऋच्छतु सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 11)

इमम् मा हिंसीः द्विपादम् पशुम्,
सहस्राक्षो मेधाय चीयमानः।
मयुम् पशुम् मेधम् अग्ने जुषस्व,
तेन चिन्वानः तन्वो निषीद।
मयुम् ते शुक् ऋच्छतु,
यम् द्विष्मः तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥47॥

इमम् मा हिंसीः एकशफम् पशुम्,
कनिक्रदम् वाजिनम् वाजिनेषु।
गौरम् आरण्यम् अनु ते दिशामि,
तेन चिन्वानः तन्वो निषीद।
गौरम् ते शुक् ऋच्छतु,
यम् द्विष्मः तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥48॥

इमम् साहस्रम् शतधारम् उत्सम्,
व्यच्यमानम् सरिरस्य मध्ये।
घृतम् दुहानाम् अदितिम् जनाय,
अग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन्।
गवयम् आरण्यम् अनु ते दिशामि,
तेन चिन्वानः तन्वो निषीद।
गवयम् ते शुक् ऋच्छतु,
यम् द्विष्मः तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥49॥

इमम् ऊर्णायुम् वरुणस्य नाभिम्,
त्वचम् द्विपदाम् चतुष्पदाम्।
त्वष्टुः प्रजानाम् प्रथमम् जनित्रम्,
अग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन्।
उष्ट्रम् आरण्यम् अनु ते दिशामि,
तेन चिन्वानः तन्वो निषीद।
उष्ट्रम् ते शुक् ऋच्छतु,
यम् द्विष्मः तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥50॥

अजो हि अग्नेः अजनिष्ट शोकात्,
सो अपश्यत् जनितारम् अग्रे।
तेन देवा देवताम् अग्रम् आयन्,
तेन रोहम् आयन् उप मेध्यासः।
शरभम् आरण्यम् अनु ते दिशामि,

तेन चिन्वानः तन्वो निषीद।
शरभम् ते शुक् ऋच्छतु,
यम् द्विष्मः तम् ते शुक् ऋच्छतु ॥51॥

गृह्णामि प्रजाभ्यः सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोदशो अध्यायः, सूक्त 13)

अयम् पुरो भुवः तस्य प्राणो, भौव-आयनो वसन्तः प्राणायनो,
गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रम् गायत्रात्,
उपांशुः उपांशोः त्रिवृत् त्रिवृतो रथन्तरम्,
वसिष्ठ ऋषिः प्रजापति गृहीतया,
त्वया प्राणम् गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥54॥

अयम् दक्षिणा विश्वकर्मा, तस्य मनो वैश्वकर्मणम्,
ग्रीष्मो मानसः त्रिष्टुप्, ग्रैष्मौ त्रिष्टुभः,
वारम् स्वारात् अन्तर्यामो अन्तर्यामात्,
पञ्चदशः पञ्चदशात्, बृहत् भरद्वाज ऋषिः,
प्रजापति गृहीतया, त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥55॥

अयम् पश्चात् विश्व-व्यचाः, तस्य चक्षुः वैश्व-व्यचसम्,
वर्षाः चाक्षुष्यो जगती वार्षी, जगत्या ऋक्समम् ऋक्समात्,
शुक्रः शुक्रात् सप्तदशः सप्तदशात्,
वैरूपम् जमत् अग्निः ऋषिः, प्रजापति-गृहीतया,
त्वया चक्षुः गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥56॥

इदम् उत्तरात् स्वः तस्य श्रोत्रम्,
सौवम् शरत् श्रौत्री अनुष्टुप् शारदी,
अनुष्टुभ ऐडम् ऐडान् मन्थी मन्थिन, एकविंशः एकविंशाद्,
वैराजम् विश्वामित्र ऋषिः, प्रजापति-गृहीतया,
त्वया श्रोत्रम् गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥57॥

इयम् उपरि मतिः तस्यै वाक् मात्या,
हेमन्तो वाच्यः पङ्क्तिः हैमन्ती पङ्क्त्यै,
निधनवत् निधनवत, आग्रयणः आग्रयणात्,
त्रिणव-त्रयस्त्रिंशौ त्रिणव-त्रयस्त्रिंशाभ्याम्,
शाक्वर रैवते विश्वकर्म ऋषिः, प्रजापति-गृहीतया,
त्वया वाचम् गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥58॥

ॐ

अथ चतुर्दशो अध्यायः

अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा सूक्त

(यजुर्वेद, चतुर्दशो अध्यायः, सूक्त 1)

ध्रुवक्षितिः ध्रुवयोनिः ध्रुवा असि,
ध्रुवम् योनिम् आ सीद साधुया।
उख्यस्य केतुम् प्रथमम् जुषाणा,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ॥1॥

कुलायिनी घृतवती पुरन्धिः,
स्योने सीद सदने पृथिव्याः।
अभि त्वा रुद्रा वसवो गृणन्तु,
इमा ब्रह्म पीपिहि सौभगाय,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ॥2॥

स्वैः दक्षैः दक्षपिता इह सीद,
देवानाम् सुम्ने बृहते रणाय।
पिता इव एधि सूनवे आ सुशेवा,
सु आवेशा तन्वा सम् विशस्व,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ॥3॥

पृथिव्याः पुरीषम् असि, अप्सो नाम ताम् त्वा,
विश्वे अभि गृणन्तु देवाः।
स्तोमपृष्ठा धृतवती इह सीद,
प्रजावत् अस्मे द्रविणा यजस्व,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ॥4॥

आदित्याः त्वा पृष्ठे सादयामि,
अन्तरिक्षस्य धर्त्रीम् विष्टम्भनीम्,
दिशाम् अधिपत्नीम् भुवनानाम्।
ऊर्मिः द्रप्सो अपाम् असि, विश्वकर्मा ते ऋषिः,
अश्विना अध्वर्यू सादयताम् इह त्वा ॥5॥

छन्दः सूक्त

(यजुर्वेद, चतुर्दशो अध्यायः, सूक्त 3)

मूर्धा वयः प्रजापतिः छन्दः,
क्षत्रम् वयो मयन्दम् छन्दो,
विष्टम्भो वयो अधिपतिः छन्दो,
विश्वकर्मा वयः परमेष्ठी छन्दो,
बस्तो वयो विबलम् छन्दो,
वृष्णिः वयो विशालम् छन्दः,
पुरुषो वयः तन्द्रम् छन्दो,
व्याघ्रो वयो ना ध्रष्टम् छन्दः,
सिंहो वयः छदिः छन्दः,
पृष्ठवाट् वयो बृहती छन्दः,
उक्षा वयः ककुप् छन्दः,
ऋषभो वयः सतोबृहती छन्दः ॥ 9 ॥

अनड्वान् वयः पङ्क्तिः छन्दो,
धेनुः वयो जगती छन्दः,
त्र्यविः वयः त्रिष्टुप् छन्दो,
दित्यवाड् वयो विराट् छन्दः,
पञ्चाविः वयो गायत्री छन्दः,
त्रिवत्सो वयः उष्णिक् छन्दः,
वाड् वयो अनुष्टुप् छन्दः ॥ 10 ॥

देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवे सीदतम् सूक्त

(यजुर्वेद, चतुर्दशो अध्यायः, सूक्त 4)

नभः च नभस्यः च वार्षिकौ ऋतू,
अग्नेः अन्तः श्लेषो असि।
कल्पेताम द्यावापृथिवी, कल्पन्ताम् आपः ओषधयः,
कल्पन्ताम् अग्नयः पृथक्, मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः।
ये अग्नयः समनसो, अन्तरा द्यावापृथिवी इमे।
वार्षिकौ ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रम् इव,
देवा अभिसंविशन्तु तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवे सीदतम्॥ 15॥

इषः च ऊर्जः च शारदौ ऋतू,
अग्नेः अन्तः श्लेषो असि, कल्पेताम् द्यावापृथिवी,
कल्पन्ताम् आप ओषधयः,
कल्पन्ताम् अग्नयः पृथक्, मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः।
ये अग्नयः समनसो, अन्तरा द्यावापृथिवी इमे।
शारदौ ऋतू अभिकल्पमाना इन्द्रम् इव,
देवा अभिसंविशन्तु तया,
देवतया अङ्गिरस्वत् ध्रुवे सीदतम्॥ 16॥

छन्दः सूक्त

(यजुर्वेद, चतुर्दशो अध्यायः, सूक्त 5)

मा छन्दः प्रमा छन्दः, प्रतिमा छन्दो अस्त्रीवयः छन्दः,
पंक्तिः छन्द उष्णिक् छन्दो, बृहती छन्दो अनुष्टुप् छन्दो,
विराट् छन्दो गायत्री छन्दः, त्रिष्टुप् छन्दो जगती छन्दः॥18॥

पृथिवी छन्दो अन्तरिक्षम् छन्दो, द्यौः छन्दः समाः छन्दो,
नक्षत्राणि छन्दो वाक् छन्दो, मनः छन्दः कृषिः छन्दो,
हिरण्यम् छन्दो गौः छन्दो, अजा छन्दो अश्वः छन्दः॥19।

त्वा सूक्त

(यजुर्वेद, चतुर्दशो अध्यायः, सूक्त 6)

मूर्द्धा असि राड् ध्रुवा असि, धरुणा धत्री असि धरणी।
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा, कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा॥21॥

यन्त्री राड् यन्त्री असि, यमनी ध्रुवा असि धरित्री।
इषे त्वा ऊर्जे त्वा, रय्यै त्वा पोषाय त्वा॥22॥

स्तोमः सूक्त

(यजुर्वेद, चतुर्दशो अध्यायः, सूक्त 7)

वसूनाम् भागो असि, रुद्राणाम् आधिपत्यम्,
चतुष्पात् स्पृतम् चतुर्विंशः स्तोम।

आदित्यानाम् भागो असि, मरुताम् आधिपत्यम्,
गर्भाः स्पृताः पञ्चविंशः स्तोमो।
अदित्यै भागो असि, पूष्ण आधिपत्यम्,
ओज स्पृतम् त्रिणव स्तोमः।
देवस्य सवितुः भागो असि, बृहस्पतेः आधिपत्यम्,
समीचीः दिश स्पृताः चतुष्टोम स्तोमः ॥25॥

यवानाम् भागो असि, अयवानाम् आधिपत्यम्,
प्रजा स्पृताः चतुश्चत्वारिंशः स्तोमः।
ऋभूणाम् भागो असि, विश्वेषाम् देवानाम् आधिपत्यम्,
भूतम् स्पृतम् त्रयस्त्रिंशः स्तोमः ॥26॥

अधिपतिः आसीत् सूक्त

(यजुर्वेद, चतुर्दशो अध्यायः, सूक्त 8)

एकया अस्तुवत, प्रजा अधीयन्त,
प्रजापतिः अधिपतिः आसीत्।
तिसृभिः अस्तुवत, ब्रह्म असृज्येत,
ब्रह्मणस्पतिः अधिपतिः आसीत्।
पञ्चभिः अस्तुवत, भूतानि असृज्यन्त,
भूतानाम् पतिः अधिपतिः आसीत्।
सप्तभिः अस्तुवत, सप्त ऋषयो असृज्यन्त,
धाता अधिपतिः आसीत् ॥28॥

नवभिः अस्तुवत, पितरो असृज्यन्त, अदितिः अधिपत्नी आसीत्,
एकादशभिः अस्तुवत, ऋतवो असृज्यन्त,
आर्त्तवा अधिपतय आसन्, त्रयोदशभिः अस्तुवत,
मासा असृज्यन्त, सम्वत्सरो अधिपतिः आसीत्,
पञ्चदशभिः अस्तुवत, क्षत्रम् असृज्यत, इन्द्रो अधिपतिः आसीत्,
सप्तदशभिः अस्तुवत, ग्राम्याः पशवो असृज्यन्त,
बृहस्पति अधिपतिः आसीत् ॥29॥

नवदशभिः अस्तुवत, शूद्रार्यौ असृज्येताम्,
अहोरात्रे अधिपत्नी आस्ताम्।
एकविंशत्या अस्तुवत, एकशफाः पशवो असृज्यन्त,
वरुणो अधिपतिः आसीत्।
त्रयोविंशत्या अस्तुवत, क्षुद्राः पशवो असृज्यन्त,
पूषा अधिपतिः आसीत्।
पञ्चविंशत्या अस्तुवत, आरण्याः पशवो असृज्यन्त,
वायुः अधिपतिः आसीत्।
सप्तविंशत्या अस्तुवत, द्यावापृथिवी वि ऐताम्,
वसवो रुद्रो आदित्याः अनुव्यायन्, ते एव अधिपतय आसन् ॥30॥

नवविंशत्या अस्तुवत, वनस्पतयो असृज्यन्त,
सोमो अधिपतिः आसीत्, एकत्रिंशता अस्तुवत,
प्रजा असृज्यन्त, यवाः च अयवा च अधिपतय आसन्।
त्रयस्त्रिंशता अस्तुवत, भूतानि अशाम्यन्,
प्रजापतिः परमेष्ठी अधिपतिः आसीत् ॥31॥

ॐ

अथ पञ्चदशो अध्यायः

छन्दः सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चदशो अध्यायः, सूक्त 1)

एवः छन्दो वरिवः छन्दः, शम्भूः छन्दः परिभूः छन्दः,
आ छत् छन्दो मनः छन्दो, व्यचः छन्दः सिन्धुः छन्दः,
समुद्र छन्दः सरिरम् छन्दः, ककुप् छन्दः त्रिककुप् छन्दः,
काव्यम् छन्दो अङ्कुपम् छन्दो,
अक्षरपङ्क्तिः छन्दः पदपङ्क्तिः छन्दो,
विष्टारपङ्क्तिः छन्दः ऋक्षुरो भ्रजः छन्दः॥4॥

आछत् छन्दः प्रछत् छन्दः, संयत् छन्दो वियत् छन्दो,
बृहत् छन्दो रथन्तरम् छन्दो, निकायः छन्दो विवधः छन्दो,
गिरः छन्दो भ्रजः छन्दः, संस्तुप् छन्दो अनुष्टुप् छन्द,
एवः छन्दो वरिवः छन्दो, वयः छन्दो वयस्कृत् छन्दो,
विष्पर्द्धाः छन्दो विशालम् छन्दः, छदिः छन्दो दूरोहणम् छन्दः,
तन्द्रम् छन्दो अङ्काङ्कम् छन्दः॥5॥

जिन्व सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चदशो अध्यायः, सूक्त 2)

रश्मिना सत्याय सत्यम् जिन्व, प्रेतिना धर्म्मणा धर्मम् जिन्व,

अन्वित्या दिवा दिवम् जिन्व,
संधिना अन्तरिक्षेण अन्तरिक्षम् जिन्व,
प्रतिधिना पृथिव्या पृथिवीम् जिन्व,
विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिम् जिन्व,
प्रवया अह्ना अहः जिन्व,
अनुया रात्र्या रात्रीम् जिन्व,
उशिजा वसुभ्यो वसून् जिन्व,
प्रकेतेन आदित्येभ्यः आदित्यान् जिन्व॥6॥

प्रतिपत् असि प्रतिपदे त्वा, अनुपत् असि अनुपदे त्वा,
सम्पत् असि सम्पदे त्वा, तेजो असि तेजसे त्वा॥8॥

त्रिवृत् असि त्रिवृते त्वा, प्रवृत् असि प्रवृते त्वा,
विवृत् असि विवृते त्वा, सवृत् असि सवृते त्वा,
आक्रमो असि आक्रमाय त्वा, संक्रमो असि संक्रमाय त्वा,
उत्क्रमो असि उत्क्रमाय त्वा, उत्क्रान्तिः असि उत्क्रान्त्यै त्वा,
अधिपतिना ऊर्जा ऊर्जम् जिन्व॥9॥

स्वर्गे लोके यजमानम् च सादयन्तु सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चदशो अध्यायः, सूक्त 3)

राज्ञी असि प्राची दिक् वसवः, ते देवा अधिपतयो अग्निः,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता त्रिवृत् त्वा, स्तोमः पृथिव्याम् श्रयतु आज्यम्,

उक्थम् अव्यथायै स्तभ्नातु रथन्तरम्,
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयः त्वा, प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया,
वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च, अयम् अधिपतिः च ते त्वा,
सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे, स्वर्गे लोके यजमानम् च सादयन्तु॥10॥

विराट् असि दक्षिणा दिग् रुद्राः, ते देवा अधिपतय इन्द्रो,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता पञ्चदशः त्वा, स्तोमः पृथिव्याम् श्रयतु प्र उगम्,
उक्थम् अव्यथायै स्तभ्नातु बृहत्,
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋतयः त्वा,
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया, वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च,
अयम् अधिपतिः च ते त्वा, सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे,
स्वर्ग लोके यजमानम् च सादयन्तु॥11॥

सम्राट् असि प्रतीची दिक् आदित्याः, ते देवा अधिपतय वरुणो,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता सप्तदशः त्वा, स्तोमः पृथिव्याम् श्रयतु मरुत्वतीयम्,
उक्थम् अव्यथायै स्तभ्नातु वैरुपम्,
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयः त्वा,
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया, वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च,
अयम् अधिपतिः च ते त्वा, सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे,
स्वर्गे लोके यजमानम् च सादयन्तु॥12॥

स्वराट् असि उदीची दिङ् मरुतः, ते देवा अधिपतयः सोमो,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ताः एकविंशः त्वा, स्तोमः पृथिव्याम् श्रयतु निष्केवल्यम्,
उक्थम् अव्यथायै स्तभ्नातु वैराजम्,

साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयः त्वा,
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया, वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च,
अयम् अधिपतिः च ते त्वा, सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे,
स्वर्गे लोके यजमानम् च सादयन्तु॥13॥

अधिपत्नी असि बृहती दिक् विश्वे, ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिः,
हेतीनाम् प्रतिधर्त्ता त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ त्वा,
स्तोमौ पृथिव्याम् श्रयताम् वैश्वदेव अग्नि मारुते,
उक्थे अव्यथायै स्तभ्नीताम् शाक्वररैवते,
सामनी प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयः त्वा,
प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया, वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता च,
अयम् अधिपतिः च ते त्वा, सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे,
स्वर्गे लोके यजमानम् च सादयन्तु॥14॥

तम् एषाम् जम्भे दध्मः सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चदशो अध्यायः, सूक्त 4)

अयम् पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिः तस्य,
रथगृत्सः च रथौजाः च सेनानीग्रामण्यौ।
पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला च अप्सरसौ,
दङ्क्ष्णवः पशवो हेतिः, पौरुषेयो वधः प्रहेतिः,
तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो अवन्तु, ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो, यः च नो द्वेष्टि, तम् एषाम् जम्भे दध्मः॥15॥

अयम् दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य रथस्वनः च,
रथेचित्रः च सेनानीग्रामण्यौ।
मेनका च सहजन्या च अप्सरसौ, यातुधाना हेती रक्षांसि प्रहेतिः,
तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि, तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥ 16 ॥

अयम् पश्चात् विश्वव्यचाः तस्य,
रथप्रोतः च असमरथः च सेनानीग्रामण्यौ।
प्रम्लोचन्ती च अनुम्लोचन्ती च अप्सरसौ, व्याघ्रा हेतिः सर्पाः प्रहेतिः,
तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि, तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥ 17 ॥

अयम् उत्तरात् संयद्वसुः तस्य,
तार्क्ष्यः च अरिष्टनेमिः च सेनानीग्रामण्यौ।
विश्वाची च घृताची च अप्सरसौ, आपो हेतिः वातः प्रहेतिः,
तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि, तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥ 18 ॥

अयम् उपरि अर्वाक् वसुः तस्य,
सेनजित् च सुषेणः च सेनानीग्रामण्यौ।
उर्वशी च पूर्वचित्तिः च अप्सरसौ, अवस्फूर्जनः हेतिः विद्युत् प्रहेतिः,
तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु,
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि, तम् एषाम् जम्भे दध्मः ॥ 19 ॥

ॐ

अथ षोडशो अध्यायः

पतये नमः सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 4)

नमो हिरण्य-बाहवे सेनान्ये, दिशाम् च पतये नमो,
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः, पशूनाम् पतये नमो,
नमः शष्पिञ्जराय त्विषी-मते, पथीनाम् पतये नमो,
नमो हरिकेशाय उपवीतने, पुष्टानाम् पतये नमः ॥ 17 ॥

नमो बभ्लुशाय व्याधिने, अन्नानाम् पतये नमो,
नमो भवस्य हेत्यै, जगताम् पतये नमो,
नमो रुद्राय आततायिने, क्षेत्राणाम् पतये नमो,
नमः सूताय अहन्त्यै, वनानाम् पतये नमः ॥ 18 ॥

नमो रोहिताय स्थपतये, वृक्षाणाम् पतये नमो,
नमो भुवन्तये वारिवः कृताय, ओषधीनाम् पतये नमो,
नमो मन्त्रिणे वाणिजाय, कक्षाणाम् पतये नमो,
नमः उच्चैः घोषाय आक्रन्दयते, पत्तीनाम् पतये नमः ॥ 19 ॥

नमः कृत्स्नायतया धावते, सत्वनाम् पतये नमो,
नमः सहमानाय नि-व्याधिने, आ-व्याधिनीनाम् पतये नमो,
नमो निषङ्गिणे ककुभाय, स्तेनानाम् पतये नमो,
नमो नि-चेरवे परिचराय, अरण्यानाम् पतये नमः ॥ 20 ॥

नमो वञ्चते परिवञ्चते, स्तायूनाम् पतये नमो,
नमो निषङ्गिणे इषुधिमते, तस्कराणाम् पतये नमो,
नमः सृकायिभ्यो जिघांसद्भ्यो, मुष्णताम् पतये नमो,
नमो असिमद्भ्यो नक्तम् चरद्भ्यो, विकृन्तानाम् पतये नमः ॥ 21 ॥

च वो नमः सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 5)

नमः उष्णीषिणे गिरि-चराय, कुलुञ्चानाम् पतये नमो,
नमः इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यः च वो नमो।
नमः आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यः च वो नमो,
नमः आयच्छद्भ्यो अस्यद्भ्यः च वो नमः ॥ 22 ॥

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यः च वो नमो,
नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यः वो नमो।
नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यः च वो नमो,
नमः तिष्ठुद्भ्यो धावद्भ्यः वो नमः ॥ 23 ॥

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यः च वो नमो,
नमो अश्वेभ्यो अश्वपतिभ्यः च वो नमो।
नमः आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यः च वो नमो,
नमः उगणाभ्यः तृंहतीभ्यः च वो नमः ॥ 24 ॥

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यः च वो नमो,
नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यः च वो नमो।
नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यः च वो नमो,
नमो विरूपेभ्यो विश्व-रूपेभ्यः च वो नमः ॥ 25 ॥

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यः च वो नमो,
नमो रथिभ्यो अरथेभ्यः च वो नमो।
नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यः च वो नमो,
नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यः च वो नमः ॥ 26 ॥

नमः तक्षभ्यो रथकारेभ्यः च वो नमो,
नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यः च वो नमो।
नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्टेभ्यः च वो नमो,
नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यः च वो नमः ॥ 27 ॥

च सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 6)

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यः च, वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च।
शर्वाय च पशुपतये च, नमो नीलग्रीवाय च, शितिकण्ठाय च ॥ 28 ॥

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च, नमः सहस्त्र अक्षाय च शतधन्वने च,
नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च, नमो मीढुष्टमाय च इषुमते च ॥ 29 ।

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च, नमो बृहते च वर्षीयसे च,
नमो वृद्धाय च सवृधे च, नमो अग्र्याय च प्रथमाय च ॥ 30 ॥

नमः आशवे च अजिराय च, नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च,
नम ऊर्म्याय च अवस्वन्याय च, नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥ 31 ॥

च सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 7)

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च, नमः पूर्वजाय च अपरजाय च।
नमो मध्यमाय च अपगल्भाय च, नमो जघन्याय बुध्न्याय च॥32॥

नमः सोभ्याय च प्रतिसर्य्याय च, नमो याम्याय च क्षेम्याय च।
नमः श्लोक्याय च अवसान्याय च, नम ऊर्वर्याय च खल्याय च॥33॥

नमो वन्याय च कक्ष्याय च, नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च,
नम आशुषेणाय च आशु-रथाय च, नमः शूराय च अवभेदिने च॥34॥

नमो बिल्मिने च कवचिने च, नमो वर्मिणे च वरुथिने च,
नमः श्रुताय च श्रुत-सेनाय च, नमो दुन्दुभ्याय च आहनन्याय च॥35॥

च सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 8)

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च, नमो निषङ्गिणे च इषुधिमते च,
नमः तीक्ष्ण इषवे च आयुधिने च, नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च॥36॥

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च, नमः काट्याय च नीप्याय च,
नमः कुल्याय च सरस्याय च, नमो नादेयाय च वैशन्ताय च॥37॥

नमः कूप्याय च अवट्याय च, नमो वीध्र्याय च आतप्याय च,
नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च, नमो वर्ष्याय च अवर्ष्याय च॥38॥

नमो वात्याय च रेष्म्याय च, नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च,
नमः सोमाय च रुद्राय च, नमः ताम्राय च अरुणाय च॥39॥

नमः शङ्गवे च पशुपतये च, नमः उग्राय च भीमाय च,
नमो अग्रेबधाय च दूरेबधाय च, नमो हन्त्रे च हनीयसे च,
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमः ताराय॥40॥

च सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 9)

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च, नमः शङ्कराय च मयस्कराय च,
नमः शिवाय च शिवतराय च॥41॥

नमः पार्याय च अवार्याय च, नमः प्रतरणाय च उत् तरणाय च,
नमः तीर्थ्याय च कूल्लाय च, नमः शष्प्याय च फेन्याय च॥42॥

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च, नमः किंशिलाय च क्षयणाय च।
नमः कपर्दिने च पुलस्तये च, नमः इरिण्याय च प्रपथ्याय च॥43॥

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च, नमः तल्प्याय च गेह्याय च।
नमो हृदय्याय च निवेष्याय च,नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च॥44॥

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च, नमः पांसव्याय च रजस्याय च,
नमो लोप्याय च उलप्याय च, नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च॥45॥

अव धन्वानि तन्मसि सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 11)

असंख्याता सहस्राणि, ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
तेषाम् सहस्त्र-योजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 54॥

अस्मिन् महति अर्णवे, अन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषाम् सहस्त्र-योजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 55॥

अव धन्वानि तन्मसि सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 12)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा, दिवम् रुद्रा उपश्रिताः।
तेषाम् सहस्त्रयोजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 56॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः, शर्वा अधः क्षमाचराः।
तेषाम् सहस्त्रयोजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 57॥

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा, नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषाम् सहस्त्र-योजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 58॥

ये भूतानाम् अधिपतयो, विशिखासः कपर्दिनः।
तेषाम् सहस्त्र-योजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 59॥

अव धन्वानि तन्मसि सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 13)

ये पथाम् पथिरक्षयः, ऐलबृदा आयुः युधः।

तेषाम् सहस्त्र-योजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 60॥

ये तीर्थानि प्र चरन्ति, सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाम् सहस्त्र-योजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 61॥

ये अन्नेषु वि विध्यन्ति, पात्रेषु पिबतो जनान्।
तेषाम् सहस्त्र-योजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 62॥

ये एतावन्तः च भूयांसः च, दिशो रुद्रा वि तस्थिरे।
तेषाम् सहस्त्र-योजने, अव धन्वानि तन्मसि॥ 63॥

अव धन्वानि तन्मसि सूक्त

(यजुर्वेद, षोडशो अध्यायः, सूक्त 14)

नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि, येषाम् वर्षम् इषवः।
तेभ्यो दश प्राचीः दश, दक्षिणा दश प्रतीचीः दशो,
उदीचीः दश ऊर्ध्वाः।
तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु।
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि, तम् एषाम् जम्भे दध्मः॥ 64॥

नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये अन्तरिक्षे, येषाम् वातः इषवः।
तेभ्यो दश प्राचीः दश, दक्षिणा दश प्रतीचीः दश,
उदीचीः दश ऊर्ध्वाः।
तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु।
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि, तम् एषाम् जम्भे दध्मः॥ 65॥

नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्याम्, येषाम् अन्नम् इषवः।
तेभ्यो दश प्राचीः दश, दक्षिणा दश प्रतीचीः दश,
उदीचीः दश उर्ध्वाः।
तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो अवन्तु ते नो मृडयन्तु।
ते यम् द्विष्मो यः च नो द्वेष्टि, तम् एषाम् जम्भे दध्मः॥ 66 ॥

ॐ

सप्तदशो अध्यायः

पावको अस्मभ्यम् शिवो भव सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तदशो अध्यायः, सूक्त 2)

समुद्रस्य त्वा अवकया, अग्ने परि व्ययामसि।
पावको अस्मभ्यम् शिवो भव॥ 4 ॥

हिमस्य त्वा जरायुणा, अग्ने परि व्ययामसि।
पावको अस्मभ्यम् शिवो भव॥ 5 ॥

पवन्ते सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तदशो अध्यायः, सूक्त 23)

कन्या इव वहतुम् एतवा उ, अञ्जि अञ्जाना अभि चाकशीभि।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो, घृतस्य धारा अभि तत् पवन्ते॥ 97 ॥

अभि अर्पत सुष्टुतिम् गव्यम् आजिम्, अस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमम् यज्ञम् नयत देवता नो, घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते॥ 98 ॥

ॐ

अथ अष्टादशो अध्यायः

यज्ञेन कल्पन्ताम् सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 1)

वाजः च मे प्रसवः च मे, प्रयतिः च मे प्रसितिः च मे,
धीतिः च मे क्रतुः च मे, स्वरः च मे श्लोकः च मे,
श्रवः च मे श्रुतिः च मे, ज्योतिः च मे स्वः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ 1 ॥

प्राणः च मे अपानः च मे, व्यानः च मे असुः च मे,
चितम् च मे आधीतम् च मे, वाक् च मे मनः च मे,
चक्षुः च मे श्रोत्रम् च मे, दक्षः च मे बलम् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ 2 ॥

ओजः च मे सहः च मे, आत्मा च मे तनूः च मे,
शर्म च मे वर्म च मे, अङ्गानि च मे अस्थीनि च मे,
परूंषि च मे शरीराणि च मे, आयुः च मे जरा च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ 3 ॥

ज्यैष्ठ्यम् च मे, आधिपत्यम् च मे, मन्युः च मे भामः च मे,
अमः च मे अम्भः च मे, जेमा च मे महिमा च मे,
वरिमा च मे प्रथिमा च मे, वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे,
वृद्धम् च मे वृद्धिः च मे, यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ 4 ॥

सत्यम् च मे श्रद्धा च च मे, जगत् च मे धनम् च मे,
विश्वम् च मे महः च मे, क्रीडा च मे मोदः च मे,
जातम् च मे जनिष्यमाणम् च मे, सूक्तम् च मे सुकृतम् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 5 ॥

यज्ञेन कल्पन्ताम् सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 2)

ऋतम् च मे अमृतम् च मे, अयक्षम् च मे अनामयत् च मे,
जीवातुः च मे दीर्घायु त्वम् च मे, अनमित्रम् च मे अभयम् च मे,
सुखम् च मे शयनम् च मे, सूषाः च मे सुदिनम् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 6 ॥

यन्ता च मे धर्ता च मे, क्षेमः च मे धृतिः च मे,
विश्वम् च मे महः च मे, सम् वित् च मे ज्ञात्रम् च मे,
सूः च मे प्रसूः च मे, सीरम् च मे लयः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 7 ॥

शम् च मे मयः च मे, प्रियम् च मे अनुकामः च मे,
कामः च मे सौमनसः च मे, भगः च मे द्रविणम् च मे,
भद्रम् च मे श्रेयः च मे, वसीयः च मे यशः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 8 ॥

ऊर्क् च मे सूनृता च मे, पयः च मे रसः च मे,
घृतम् च मे मधु च मे, सग्धिः च मे सपीतिः च मे,
कृषिः च मे वृष्टिः च मे, जैत्रम् च मे औद्भिद्यम् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 9 ॥

रयिः च मे रायः च मे, पुष्टम् च मे पुष्टिः च मे,
विभु च मे प्रभु च मे, पूर्णम् च मे पूर्णतरम् च मे,
कुयवम् च मे अक्षितम् च मे, अन्नम् च मे अक्षुत् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 10 ॥

यज्ञेन कल्पन्ताम् सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 3)

वित्तम् च मे वेद्यम् च मे, भूतम् च मे भविष्यत् च मे,
सुगम् च मे सुपथ्यम् च मे, ऋद्धम् च मे ऋद्धिः च मे,
क्लप्तम् च मे क्लप्तिः च मे, मतिः च मे सुमतिः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 11 ॥

व्रीहयः च मे यवाः च मे, माषाः च मे तिलाः च मे,
मुद्गाः च मे खल्वाः च मे, प्रियङ्गवः च मे अणवः च मे,
श्यामाकाः च मे नीवाराः च मे, गोधूमाः च मे मसूराः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 12 ॥

अश्मा च मे मृत्तिका च मे, गिरयः च मे पर्वताः च मे,
सिकताः च मे वनस्पतयः च मे, हिरण्यम् च मे अयः च मे,
श्यामम् च मे लोहम् च मे, सीसम् च मे त्रपु च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 13 ॥

अग्निः च मे आपः च मे, वीरुधः च मे ओषधयः च मे,
कृष्टपच्याः च मे अकृष्टपच्याः च मे, ग्राम्याः च मे पशव आरण्याः च मे,
वित्तम् च मे वित्तिः च मे, भूतम् च मे भूतिः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 14 ॥

वसु च मे वसतिः च मे, कर्म च मे शक्तिः च मे,
अर्थः च मे एमः च मे, इत्या च मे गतिः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 15 ॥

यज्ञेन कल्पन्ताम् सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 4)

अग्निः च मे इन्द्रः च मे, सोमः च मे इन्द्रः च मे,
सविता च मे इन्द्रः च मे, सरस्वती च मे इन्द्रः च मे,
पूषा च मे इन्द्रः च मे, बृहस्पतिः च मे इन्द्रः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 16 ॥

मित्रः च मे इन्द्रः च मे, वरुणः च मे इन्द्रः च मे,
धाता च मे इन्द्रः च मे, त्वष्टा च मे इन्द्रः च मे,
मरुतः च मे इन्द्रः च मे, विश्वे च मे देवा इन्द्रः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 17 ॥

पृथिवी च मे इन्द्रः च मे, अन्तरिक्षम् च मे इन्द्रः च मे,
द्यौः च मे इन्द्रः च मे, समाः च मे इन्द्रः च मे,
नक्षत्राणि च मे इन्द्रः च मे, दिशः च मे इन्द्रः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 18 ॥

अंशुः च मे रश्मिः च मे, अदाभ्यः च मे अधिपतिः च मे,
उपांशुः च मे अन्तर्यामः च मे, ऐन्द्रवायवः च मे मैत्रावरुणः च मे,
आश्विनः च मे प्रति प्रस्थानः च मे, शुक्रः च मे मन्थी च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 19 ॥

यज्ञेन कल्पन्ताम् सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 5)

आग्रयणः च मे वैश्व-देवः च मे, ध्रुवः च मे वैश्वानरः च मे,
ऐन्द्राग्नः च मे महा-वैश्व-देवः च मे,
मरुत्वतीयाः च मे निष्केवल्यः च मे,
सावित्रः च मे सारस्वतः च मे,
पात्नीवतः च मे हारियोजनः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 20 ॥

स्त्रुचः च मे चमसाः च मे, वायव्यानि च मे द्रोणकलशः च मे,
ग्रावाणः च मे अधिषवणे च मे, पूतभृत् च मे आधवनीयः च मे,
वेदिः च मे बर्हिः च मे, अवभृथः च मे स्वगाकारः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 21 ॥

अग्निः च मे घर्मः च मे, अर्कः च मे सूर्यः च मे,
प्राणः च मे अश्वमेधः च मे, पृथिवी च मे अदितिः च मे,
दितिः च मे द्यौः च मे, अङ्गुलयः शक्करयो दिशः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 22 ॥

व्रतम् च मे ऋतवः च मे, तपः च मे संवत्सरः च मे,
अहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे, बृहत् रथन्तरे च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ 23 ॥

एका च मे तिस्रः च मे, तिस्रः च मे पञ्च च मे,
पञ्च च मे सप्त च मे, सप्त च मे नव च मे,
नव च मे एकादश च मे, एकादश च मे त्रयोदश च मे,
त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे, पञ्चदश च मे सप्तदश च मे,

सप्तदश च मे नवदश च मे, नवदश च मे एकविंशतिः च मे,
एकविंशतिः च मे त्रयोविंशतिः च मे,
त्रयोविंशतिः च मे पञ्चविंशतिः च मे,
पञ्चविंशतिः च मे सप्तविंशतिः च मे,
सप्तविंशतिः च मे नवविंशतिः च मे,
नवविंशतिः च मे एकत्रिंशत् च मे,
एकत्रिंशत् च मे त्रयः त्रिंशत् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ 24॥

यज्ञेन कल्पन्ताम् सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 6)

चतस्त्रः च मे अष्टौ च मे, अष्टौ च मे द्वादश च मे,
द्वादश च मे षोडश च मे, षोडश च मे विंशतिः च मे,
विंशतिः च मे चतुः विंशतिः च मे,
चतुः विंशतिः च मे अष्टाविंशतिः च मे,
अष्टाविंशतिः च मे द्वात्रिंशत् च मे,
द्वात्रिंशत् च मे षट्त्रिंशत् च मे,
षट्त्रिंशत् च मे चत्वारिंशत् च मे,
चत्वारिंशत् च मे चतुः चत्वारिंशत् च मे,
चतुः चत्वारिंशत् च मे अष्टा चत्वारिंशत् च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ 25॥

त्र्यविः च मे त्र्यवी च मे, दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे,
पञ्च अविः च मे पञ्च अवी च मे, त्रि वत्सः च मे त्रि-वत्सा च मे,
तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ 26॥

पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च मे, उक्षा च मे वशा च मे,
ऋषभः च मे वेहत् च मे, अनड्वान् च मे धेनुः च मे,
यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ 27॥

वाट् ताभ्यः स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 10)

ऋताषाट् ऋतधामा अग्निः गन्धर्वः,
तस्य ओषधयो अप्सरसो मुदो नाम।
स नः इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु,
तस्मै स्वाहा, वाट् ताभ्यः स्वाहा॥ 38॥

सम् हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः,
तस्य मरीचयो अप्सरसः आयुवो नाम।
स नः इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु, तस्मै स्वाहा,
वाट् ताभ्यः स्वाहा॥ 39॥

वाट् ताभ्यः स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 11)

सुषुम्णः सूर्यरश्मिः चन्द्रमा गन्धर्वः,
तस्य नक्षत्राणि अप्सरसः भेकुरयः नाम।
स नः इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु,
तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥ 40॥

इषिरो विश्वव्यचाः वातः गन्धर्वः,
तस्य आपः अप्सरसः ऊर्जः नाम।

स नः इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु, तस्मै स्वाहा,
वाट् ताभ्यः स्वाहा॥ 41॥

भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः,
तस्य दक्षिणा अप्सरसः स्तावाः नाम।
स नः इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु,
तस्मै स्वाहा, वाट् ताभ्यः स्वाहा॥ 42॥

प्रजापतिः विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः,
तस्य ऋक्सामान्य अप्सरसः एष्टयो नाम।
स नः इदम् ब्रह्म क्षत्रम् पातु, तस्मै स्वाहा,
वाट् ताभ्यः स्वाहा॥ 43॥

स नो भुवनस्य पते प्रजा-पते,
यस्य ते उपरि गृहा यस्य वा इह।
अस्मै ब्राह्मणे अस्मै क्षत्राय,
महि शर्म यच्छ स्वाहा॥ 44॥

समुद्रो असि नभस्वान् आर्द्र दानुः,
शम्भूः मयो भूः अभि मा वाहि स्वाहा।
मारुतो असि मरुताम् गणः शम्भूः,
मयो भूः अभि मा वाहि स्वाहा।
अवस्यूः असि दुवस्वान् शम्भूः,
मयो भूः अभि मा वाहि स्वाहा॥ 45॥

स्वः देवेषु नो दधत् सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टादशो अध्यायः, सूक्त 16)

यत् दत्तम् यत् परादानम्, यत् पूर्तम् याः च दक्षिणाः।
तत् अग्निः वैश्वकर्मणः, स्वः देवेषु नो दधत्॥ 64॥

यत्र धारा अनपेता, मधोः घृतस्य च याः।
तत् अग्निः वैश्वकर्मणः, स्वः देवेषु नो दधत्॥ 65॥

ॐ

अथ एकोनविंशो अध्यायः

सोमम् राजानम् इह भक्षयामि सूक्त

(यजुर्वेद, एकोनविंशो अध्यायः, सूक्त 9)

यम् अश्विना नमुचेः आसुरात्,
अधि सरस्वती असुनोत् इन्द्रियाय।
इमम् तत् शुक्रम् मधुमन्तम् इन्दुम्,
सोमम् राजानम् इह भक्षयामि॥ 34॥

यत् अत्र रिप्तम् रसिनः सुतस्य,
यत् इन्द्रो अपिबत् शचीभिः।
अहम् तत् अस्य मनसा शिवेन,
सोमम् राजानम् इह भक्षयामि॥ 35॥

पुनातु मा सूक्त

(यजुर्वेद, एकोनविंशो अध्यायः, सूक्त 10)

यत् ते पवित्रम् अर्चिषि, अग्ने विततम् अन्तरा।
ब्रह्म् तेन पुनातु मा॥ 41॥

पवमानः सो अद्य, नः पवित्रेण विचर्षणिः।
यः पोता सः पुनातु मा॥ 42॥

अधि ब्रुवन्तु ते अवन्तु अस्मान् सूक्त

(यजुर्वेद, एकोनविंशो अध्यायः, सूक्त 14)

उपहूताः पितरः सोम्यासो, बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
ते आ गमन्तु ते इह श्रुवन्तु, अधि ब्रुवन्तु ते अवन्तु अस्मान्॥ 57॥

आ यन्तु नः पितरः सोम्यासो, अग्निष्वात्ताः पथिभिः देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तो, अधि ब्रुवन्तु ते अवन्तु अस्मान्॥ 58॥

पयो अमृतम् मधु सूक्त

(यजुर्वेद, एकोनविंशो अध्यायः, सूक्त 17)

सोमो राजा अमृतम् सुतः, ऋजीषेण अजहात् मृत्युम्।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्, विपानम् शुक्रम् अन्धसः,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्, पयो अमृतम् मधु॥ 72॥

अद्भ्यः क्षीरम् वि अपिबत्, क्रुङ् आङ्गिरसो धिया।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्, विपानम् शुक्रम् अन्धसः।

इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्, पयो अमृतम् मधु॥ 73॥

सोमम् अद्भ्यो वि अपिबत्, छन्दसा हंसः शुचिषत्।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्, विपानम् शुक्रम् अन्धसः।
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्, पयो अमृतम् मधु॥ 74॥

पयो अमृतम् मधु सूक्त

(यजुर्वेद, एकोनविंशो अध्यायः, सूक्त 18)

अन्नात् परिस्रुतो रसम्, ब्रह्मणा वि अपिबत् क्षत्रम्,
पयः सोमम् प्रजापतिः।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्, विपानम् शुक्रम् अन्धसः।
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्, पयो अमृतम् मधु॥ 75॥

रेतो मूत्रम् वि जहाति, योनिम् प्रविशत् इन्द्रियम्।
गर्भो जरायुणा आवृत, उल्वम् जहाति जन्मना।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्, विपानम् शुक्रम् अन्धसः,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्, पयो अमृतम् मधु॥ 76॥

दृष्ट्वा रूपे वि आ अकरोत्, सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धाम् अनृते अदधात्, श्रद्धाम् सत्ये प्रजापतिः।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्, विपानम् शुक्रम् अन्धसः।
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्, पयो अमृतम् मधु॥ 77॥

वेदेन रूपे वि अपिबत्, सुतासुतौ प्रजापतिः।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्, विपानम् शुक्रम् अन्धसः।
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्, पयो अमृतम् मधु॥ 78॥

दृष्ट्वा परिस्रुतो रसम्, शुक्रेण शुक्रम् वि अपिबत्,
पयः सोमम् प्रजापतिः।
ऋृतेन सत्यम् इन्द्रियम्, विपानम् शुक्रम् अन्धसः,
इन्द्रस्य इन्द्रियम् इदम्, पयो अमृतम् मधु॥ 79॥

ॐ

अथ विंशो अध्यायः

विश्वात् मुञ्चतु अंहसः सूक्त

(यजुर्वेद, विंशो अध्यायः, सूक्त 4)

यत् देवा देवहेडनम्, देवासः चकृमा वयम्।
अग्निः मा तस्मात् एनसो, विश्वात् मुञ्चतु अंहसः॥ 14॥

यदि दिवा यदि नक्तम्, एनांसि चकृमा वयम्।
वायुः मा तस्मात् एनसो, विश्वात् मुञ्चतु अहंसः॥ 15॥

यदि जाग्रत् यदि स्वप्न, एनांसि चकृमा वयम्।
सूर्यो मा तस्मात् एनसो, विश्वात् मुञ्चतु अहंसः॥ 16॥

ॐ

अथ एकविंशो अध्यायः

गौः वयो दधुः सूक्त

(यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः, सूक्त 3)

समिद्धो अग्निः समिधा, सुसमिद्धो वरेण्यः।
गायत्री छन्दः इन्द्रियम्, त्र्यविः गौः वयो दधुः॥ 12॥

तनूनपात् शुचिव्रतः, तनूपाः च सरस्वती।
उष्णिहा छन्दः इन्द्रियम्, दित्यवाड् गौः वयो दधुः॥ 13॥

इडाभिः अग्निः ईड्यः, सोमो देवो अमर्त्यः।
अनुष्टुप् छन्दः इन्द्रियम्, पञ्चाविः गौः वयो दधुः॥ 14॥

सुबर्हिः अग्निः पूषण्वान्, स्तीर्णबर्हिः अमर्त्यः।
बृहती छन्दः इन्द्रियम्, त्रिवत्सो गौः वयो दधुः॥ 15॥

दुरो देवीः दिशो महीः, ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।
पङ्क्तिः छन्दः इह इन्द्रियम्, तुर्यवाड् गौः वयो दधुः॥ 16॥

वयो दधुः सूक्त

(यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः, सूक्त 4)

उषे यह्वी सुपेशसा, विश्वे देवा अमर्त्याः।
त्रिष्टुप् छन्दः इह इन्द्रियम्, पष्ठवाड् गौः वयो दधुः॥ 17॥

दैव्या होतारा भिषजा, इन्द्रेण सयुजा युजा।
जगती छन्दः इन्द्रियम्, अनड्वान् गौः वयो दधुः ॥ 18 ॥

तिस्त्रः इडा सरस्वती, भारती मरुतो विशः।
विराट् छन्दः इह इन्द्रियम्, धेनुः गौः न वयो दधुः ॥ 19 ॥

त्वष्टा तुरीपो अद्भुत, इन्द्राग्नी पुष्टि वर्धना।
द्विपदा छन्दः इन्द्रियम्, उक्षा गौः न वयो दधुः ॥ 20 ॥

वयो दधुः सूक्त

(यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः, सूक्त 5)

शमिता नो वनस्पतिः, सविता प्रसुवन् भगम्।
ककुप् छन्दः इह इन्द्रियम्, वशा वेहत् वयो दधुः ॥ 21 ॥

स्वाहा यज्ञम् वरुणः, सुक्षत्रो भेषजम् करत्।
अतिछन्दा इन्द्रियम् बृहत्, ऋषभो गौः वयो दधुः ॥ 22 ॥

वसन्तेन ऋतुना देवा, वसवः त्रिवृता स्तुताः।
रथन्तरेण तेजसा, हविः इन्द्रे वयो दधुः ॥ 23 ॥

ग्रीष्मेण ऋतुना देवा, रुद्राः पञ्च-दशे स्तुताः।
बृहता यशसा बलम्, हविः इन्द्रे वयो दधुः ॥ 24 ॥

इन्द्रे वयो दधुः सूक्त

(यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः, सूक्त 6)

वर्षाभिः ऋतुना आदित्याः, स्तोमे सप्तदशे स्तुताः।
वैरूपेण विशा ओजसा, हविः इन्द्रे वयो दधुः ॥ 25 ॥

शारदेन ऋतुना देवा, एकविंश ऋभवः स्तुताः।
वैराजेन श्रिया श्रियम्, हविः इन्द्रे वयो दधुः ॥ 26 ॥

हेमन्तेन ऋतुना देवाः, त्रिणवे मरुतः स्तुताः।
बलेन शक्वरीः सहो, हविः इन्द्रे वयो दधुः ॥ 27 ॥

शैशिरेण ऋतुना देवाः, त्रयस्त्रिंशे अमृताः स्तुताः।
सत्येन रेवतीः क्षत्रम्, हविः इन्द्रे वयो दधुः ॥ 28 ॥

मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज सूक्त

(यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः, सूक्त 7)

होता यक्षत् सम् इधा अग्निम्,
इडः पदे अश्विना इन्द्रम् सरस्वतीम्,
अजो धूम्रो न गोधूमैः कुवलैः भेषजम्,
मधु शष्पैः न तेजः इन्द्रियम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 29 ॥

होता यक्षत् तनूनपात् सरस्वतीम्,
अविः मेषो न भेषजम् पथा मधुमता,

भरन् अश्विना इन्द्राय वीर्यम् बदरैः,
उपवाकाभिः भेषजम् तोक्मभिः,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 30 ॥

होता यक्षत् नराशंसम् न नग्नहुम्,
पतिम् सुरया भेषजम् मेषः सरस्वती,
भिषक् रथो न चन्द्री, अश्विनोः वपाः इन्द्रस्य वीर्यम्,
बदरैः उपवाकाभिः भेषजम् तोक्मभिः,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 31 ॥

होता यक्षत् इडा ईडितः, आजुह्वानः सरस्वतीम्,
इन्द्रम् बलेन वर्धयन्, ऋषभेण गवा इन्द्रियम्,
अश्विना इन्द्राय भेषजम्,
यवैः कर्कन्धुभिः मधु लाजैः न मासरम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 32 ॥

होता यक्षत् बर्हिः ऊर्णम्रदा, भिषक् नासत्या भिषजा,
अश्विना अश्वा शिशुमती, भिषक् धेनुः सरस्वती,
भिषक् दुह इन्द्राय भेषजम्, पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 33 ॥

होता यक्षत् दुरो दिशः, कवष्यो न व्यचस्वतीः,
अश्विभ्याम् न दुरो दिशः, इन्द्रो न रोदसी,
दुघे दुहे धेनुः सरस्वती, अश्विना इन्द्राय भेषजम्,
शुक्रम् न ज्योतिः इन्द्रियम्, पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,

मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 34 ॥

होता यक्षत् सुपेशसा उषे नक्तम्,
दिवा अश्विना सम् अञ्जाते सरस्वत्या,
त्विषिम् इन्द्रे न भेषजम्, श्येनो न रजसा,
हृदा श्रिया न मासरम्, पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 35 ॥

होता यक्षत् दैव्या होतारा, भिषजा अश्विना इन्द्रम्,
न जागृवि दिवा नक्तम्, न भेषजैः शूषम् सरस्वती,
भिषक् सीसेन दुह इन्द्रियम्, पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 36 ॥

होता यक्षत् तिस्रो देवीः न भेषजम्,
त्रयः त्रिधातवो अपसो रूपम् इन्द्रे हिरण्ययम्,
अश्विना इडा न भारती वाचा सरस्वती,
मह इन्द्राय दुहे इन्द्रियम्, पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 37 ॥

होता यक्षत् सुरेतसम् ऋषभम्, नर्यापसम् त्वष्टारम् इन्द्रम्,
अश्विना भिषजम् न सरस्वतीम्, ओजो न जूतिः इन्द्रियम्,
वृको न रभसो भिषक् यशः, सुरया भेषजम् श्रिया न मासरम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्, मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥ 38 ॥

होता यक्षत् वनस्पतिम् शमितारम्,
शतक्रतुम् भीमम् न मन्युम् राजानम्,

व्याघ्रम् नमसा अश्विना भामम्,
सरस्वती भिषक् इन्द्राय दुह इन्द्रियम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥ 39॥

होता यक्षत् अग्निम् स्वाहा, आज्यस्य स्तोकानाम् स्वाहा,
मेदसाम् पृथक् स्वाहा, छागम् अश्विभ्याम् स्वाहा,
मेषम् सरस्वत्यै स्वाहा, ऋषभम् इन्द्राय सिंहाय,
सहसे इन्द्रियम् स्वाहा, अग्निम् न भेषजम् स्वाहा,
सोमम् इन्द्रियम् स्वाहा, इन्द्रम् सुत्रामाणम् सवितारम्,
वरुणम् भिषजाम् पतिम् स्वाहा,
वनस्पतिम् प्रियम् पाथो न भेषजम् स्वाहा,
देवा आज्यपाः जुषाणो अग्निः भेषजम्,
पयः सोमः परिस्रुता घृतम्,
मधु व्यन्तु आज्यस्य होतः यज॥ 40॥

होतः यज सूक्त

(यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः, सूक्त 8)

होता यक्षत् अश्विनौ छागस्य वपाया,
मेदसो जुषेताम् हविः होतः यज।
होता यक्षत् सरस्वतीम् मेषस्य वपाया,
मेदसो जुषताम् हविः होतः यज।
होता यक्षत् इन्द्रम् ऋषभस्य वपाया मेदसो,
जुषताम् हविः होतः यज॥ 41॥

होता यक्षत् अश्विनौ सरस्वतीम्, इन्द्रम् सुत्रामाणम्,
इमे सोमाः सुरामाणः छागैः न मेषैः ऋषभैः,
सुताः शष्पैः न तोक्मभिः लाजैः,
महस्वन्तो मदाः मासरेण परिष्कृताः,
शुक्राः पयस्वन्तो अमृताः, प्रस्थिता वो मधुश्चुतः,
तान् अश्विना सरस्वती, इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ताम्।
सोम्यम् मधु पिबन्तु, मदन्तु व्यन्तु होतः यज॥ 42॥

होता यक्षत् अश्विनौ छागस्य हविषः आत्ताम्।
अद्य मध्यतो मेदः उद्भृतम्, पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या,
गृभो घस्ताम् नूनम् घासे अज्राणाम्,
यवस-प्रथमानाम् सुमत्-क्षराणाम्,
शतरुद्रियाणाम् अग्निष्वातानाम्, पीवः उपवसनानाम्,
पार्श्वतः श्रोणितः शितामतः उत्सादतो, अङ्गात् अवतानाम्
करतः एव अश्विना जुषेताम् हविः होतः यज॥ 43॥

होता यक्षत् सरस्वतीम् मेषस्य हविषः आ अवयत्,
अद्य मध्यतो मेदः उद्भृतम्, पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या,
गृभो घसत् नूनम् घासे अज्राणाम्,
यवस-प्रथमानाम् सुमत्-क्षराणाम् शतरुद्रियाणाम्,
अग्निष्वातानाम् पीव उपवसानानाम्,
पार्श्वतः श्रोणितः शितामतः उत्सादतो,
अङ्गात् अङगात् अवतानाम्,
करत् एवम् सरस्वती जुषताम् हविः होतः यज॥ 44॥

होता यक्षत् इन्द्रम् ऋषभस्य हविषः आ अवयत्,
अद्य मध्यतो मेद उद्भृतम्,
पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभो घसत्,
नूनम् घासे अज्राणाम् यवस-प्रथमानाम्,
सुमत्-क्षराणाम् शतरुद्रियाणाम्,
अग्निष्वातानाम् पीव उपवसनानाम्,
पार्श्वतः श्रोणितः शितामतः उत्सादतो,
अङ्गात् अङ्गात् अवतानाम्
करत् एवम् इन्द्रो जुषताम् हविः होतः यज ॥ 45 ॥

होता यक्षत् वनस्पतिम् अभि हि,
पिष्टतमया रभिष्ठया रशनया अधित।
यत्र अश्विनोः छागस्य हविषः प्रिया धामानि,
यत्र सरस्वत्या मेषस्य हविषः प्रिया धामानि,
यत्र इन्द्रस्य ऋषभस्य, हविषः प्रिया धामानि,
यत्र अग्नेः प्रिया धामानि, यत्र सोमस्य प्रिया धामानि,
यत्र इन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामानि,
यत्र सवितुः प्रिया धामानि, यत्र वरुणस्य प्रिया धामानि,
यत्र वनस्पतेः प्रिया पाथांसि,
यत्र देवानाम् आज्यपानाम् प्रिया धामानि,
यत्र अग्नेः होतुः प्रिया धामानि,
तत्र एतान् प्रस्तुत्य इव उपस्तुत्य,
इव उप अवस्त्रक्षत् रभीयस इव कृत्वी करत्,
एवम् देवो वनस्पतिः जुषताम् हविः होतः यज ॥ 46 ॥

होता यक्षत् अग्निम् स्विष्टकृतम्,
अयाट् अग्निः अश्विनोः छागस्य,
हविषः प्रिया धामानि,
अयाट् सरस्वत्या मेषस्य, हविषः प्रिया धामानि,
अयाट् इन्द्रस्य ऋषभस्य, हविषः प्रिया धामानि,
अयाट् अग्नेः प्रिया धामानि,
अयाट्, सोमस्य प्रिया धामानि,
अयाट् इन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामानि,
अयाट्, सवितुः प्रिया धामानि,
अयाड् वरुणस्य प्रिया धामानि,
अयाड्, वनस्पतेः प्रिया पाथांसि,
अयाड् देवानाम् आज्यपानाम् प्रिया धामानि,
यक्षत् अग्नेः होतुः प्रिया धामानि,
यक्षत् स्वम् महिमानम्, आ यजताम् एज्या इषः कृणोतु,
सो अध्वरा जातवेदा जुषताम् हविः होतः यज ॥ 47 ॥

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज सूक्त
(यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः, सूक्त 9)

देवम् बर्हिः सरस्वती, सु देवम् इन्द्रे अश्विना।
तेजो न चक्षुः अक्ष्योः बर्हिषा, दधुः इन्द्रियम्,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥ 48 ॥

देवीः द्वारो अश्विना, भिषजा इन्द्रे सरस्वती।
प्राणम् न वीर्यम् नसि द्वारो दधुः इन्द्रियम्,
वसु-वने वसु-धेयस्य व्यन्तु यज ॥ 49 ॥

देवी उषासौ अश्विना, सुत्रामा इन्द्रे सरस्वती।
बलम् न वाचम् आस्ये, उषाभ्याम् दधुः इन्द्रियम्,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥ 50 ॥

देवी जोष्ट्री सरस्वती, अश्विना इन्द्रम् अवर्धयन्।
श्रोत्रम् न कर्णयोः यशो जोष्ट्रीभ्याम् दधुः इन्द्रियम्,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥ 51 ॥

देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघा इन्द्रे, सरस्वती अश्विना भिषजा अवतः।
शुक्रम् न ज्योतिः स्तनयोः, आहुती धत्तः इन्द्रियम्,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥ 52 ॥

देवा देवानाम् भिषजा, होतारौ इन्द्रम् अश्विना।
वषट्कारैः सरस्वती, त्विषिम्, न ह्रदये मतिम्,
होतृभ्याम् दधुः इन्द्रियम्,
वसुवने, वसु-धेयस्य व्यन्तु यज॥ 53 ॥

देवीः तिस्त्रः तिस्त्रो देवीः, अश्विना इडा सरस्वती।
शूषम् न मध्ये नाभ्याम्, इन्द्राय दधुः इन्द्रियम्,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥ 54 ॥

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज सूक्त

(यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः, सूक्त 10)

देव इन्द्रो नराशंसः त्रिवरूथः, सरस्वत्या अश्विभ्याम् ईयते रथः।
रेतो न रूपम् अमृतम् जनित्रम्, इन्द्राय त्वष्टा दधत् इन्द्रियाणि,

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥ 55 ॥

देवो देवैः वनस्पतिः, हिरण्यवर्णो अश्विभ्याम्,
सरस्वत्या सुप्पिल, इन्द्राय पच्यते मधु।
ओजो न जूतिः ॠषभो न भामम्,
वनस्पतिः नो दधत् इन्द्रियाणि,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥ 56 ॥

देवम् बर्हिः वारितीनाम्, अध्वरे स्तीर्णम् अश्विभ्याम्,
ऊर्णम्रदाः सरस्वत्या, स्योनम् इन्द्र ते सदः।
ईशायै मन्युम् राजानम्, बर्हिषा दधुः इन्द्रियम्,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥ 57 ॥

देवो अग्निः स्विष्टकृत्, देवान् यक्षत् यथायथम्,
होतारौ इन्द्रम् अश्विना, वाचा वाचम् सरस्वतीम्,
अग्निम् सोमम् स्विष्टकृत्, स्विष्ट इन्द्रः सुत्रामा,
सविता वरुणो भिषक् इष्टो, देवो वनस्पतिः स्विष्टा,
देवा आज्यपाः स्विष्टो, अग्निः अग्निना होता होत्रे स्विष्टकृत्,
यशो न दधत् इन्द्रियम्, ऊर्जम् अपचितिम् स्वधाम्,
वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥ 58 ॥

सुरासोमान् सूक्त

(यजुर्वेद, एकविंशो अध्यायः, सूक्त 11)

अग्निम् अद्य होतारम् अवृणीत,
अयम् यजमानः पचन् पक्तीः पचन्,
पुरोडाशान् बध्नन् अश्विभ्याम् छागम्,

सरस्वत्यै मेषम्, इन्द्राय ऋषभम्,
सुन्वन् अश्विभ्याम् सरस्वत्या,
इन्द्राय सुत्राम्णे सुरासोमान्॥ 59॥

सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिः,
अभवत् अश्विभ्याम् छागेन,
सरस्वत्यै मेषेण, इन्द्राय ऋषभेण,
अक्षन् तान् मेदस्तः प्रति, पचता अगृभीषत,
अवीवृधन्त पुरोडाशैः, अपुः अश्विना सरस्वती,
इन्द्रः सुत्रामा सुरासोमान्॥ 60॥

ॐ

अथ द्वाविंशः अध्यायः

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, द्वाविंशः अध्यायः, सूक्त 2)

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा,
अपाम् मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा,
वायवे स्वाहा विष्णवे स्वाहा,
इन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा,
मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा॥ 6॥

हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा,
क्रदन्ते स्वाहा अवक्रन्दाय स्वाहा,

प्रोथते स्वाहा प्र प्रोथाय स्वाहा,
गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा,
निविष्टाय स्वाहा उपविष्टाय स्वाहा,
संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा,
आसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा,
स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा,
कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा,
विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा,
संहानाय स्वाहा उपस्थिताय स्वाहा,
आयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ 7॥

यते स्वाहा धावते स्वाहा,
उद्द्रावाय स्वाहा उद्द्रुताय स्वाहा,
शूकराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा,
निषण्णाय स्वाहा उत्थिताय स्वाहा,
जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा,
विवर्तमानाय स्वाहा विवृताय स्वाहा,
विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा,
शुश्रूषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वाहा,
ईक्षमाणाय स्वाहा ईक्षिताय स्वाहा,
वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा,
यत् अत्ति तस्मै स्वाहा,
यत् पिबति तस्मै स्वाहा,
यत् मूत्रम् करोति तस्मै स्वाहा,
कुर्वते स्वाहा कृताय स्वाहा॥ 8॥

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, द्वाविंशः अध्यायः, सूक्त 5)

प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा,
चक्षुषे स्वाहा, श्रोत्राय स्वाहा, वाचे स्वाहा, मनसे स्वाहा॥ 23॥

प्राच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
दक्षिणायै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
प्रतीच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
उदीच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
उर्ध्वायै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा,
अर्वाच्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा॥ 24॥

अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहा,
उदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा,
स्रवन्तीभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा,
कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा,
धार्याभ्यः स्वाहा अर्णवाय स्वाहा,
समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा॥ 25॥

वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहा,
अभ्राय स्वाहा मेधाय स्वाहा,
विद्योतमानाय स्वाहा स्तनयते स्वाहा,
अवस्फूर्जते स्वाहा वर्षते स्वाहा,
अववर्षते स्वाहा उग्रम् वर्षते स्वाहा,
शीघ्रम् वर्षते स्वाहा उत् गृह्णते स्वाहा,

उत्-गृहीताय स्वाहा प्रुष्णते स्वाहा,
शीकायते स्वाहा प्रुष्वाभ्यः स्वाहा,
ह्रादुनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा॥ 26॥

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा,
इन्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहा,
अन्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा,
दिग्भ्यः स्वाहा आशाभ्यः स्वाहा,
उर्व्यै दिशे स्वाहा अर्वाच्यै दिशे स्वाहा॥ 27॥

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा,
अहोरात्रेभ्यः स्वाहा अर्धमासेभ्यः स्वाहा,
मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहा,
आर्तवेभ्यः स्वाहा सम्वत्सराय स्वाहा,
द्यावापृथिवीभ्याम् स्वाहा चन्द्राय स्वाहा,
सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा,
वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहा,
आदित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा,
विश्वेभ्यो देवेभ्यो स्वाहा,
मूलेभ्यः स्वाहा, शाखाभ्यः स्वाहा,
वनस्पतिभ्यः स्वाहा, पुष्पेभ्यः स्वाहा, फलेभ्यः स्वाहा,
औषधीभ्यः स्वाहा॥ 28॥

पृथिव्यै स्वाहा अन्तरिक्षाय स्वाहा,
दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा,
चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा,

अद्भ्यः स्वाहा औषधीभ्यः स्वाहा,
वनस्पतिभ्यः स्वाहा परिप्लवेभ्यः स्वाहा,
चराचरेभ्यः स्वाहा सरीसृपेभ्यः स्वाहा ।। 29 ।।

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा, विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा,
गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा, अभिभुवे स्वाहा अधिपतये स्वाहा,
शूषाय स्वाहा संसर्पाय स्वाहा, चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा,
मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ।। 30 ।।

मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा,
शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा,
नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहा,
इषाय स्वाहा ऊर्जाय स्वाहा,
सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा,
तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा, अंहसस्पतये स्वाहा ।। 31 ।।

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा,
अपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा,
स्वः स्वाहा मूर्ध्ने स्वाहा, व्यश्नुविने स्वाहा अन्त्याय स्वाहा,
अन्त्याय भौवनाय स्वाहा, भुवनस्य पतये स्वाहा,
अधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ।। 32 ।।

आयुः यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
प्राणो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
अपानो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा, व्यानो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
उदानो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा, समानो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,

चक्षुः यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा, श्रोत्रम् यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
वाक् यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा, मनो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
आत्मा यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा, ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
ज्योतिः यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा, स्वः यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा,
पृष्ठम् यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा, यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा ।। 33 ।।

ॐ

अथ त्रयोविंशो अध्यायः

कस्मै देवाय हविषा विधेम सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 1)

हिरण्यगर्भः सम् अवर्तत अग्रे,
भूतस्य जातः पतिः एक आसीत्।
स दाधार पृथिवीम् द्याम् उत इमाम्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। 1 ।।

उपयाम गृहीतो असि,
प्रजापतये त्वा जुष्टम् गृह्णामि,
एष ते योनिः सूर्यः ते महिमा।
यः ते अहन् सम्वत्सरे महिमा सम्बभूव,
यः ते वायौ अन्तरिक्षे महिमा सम्बभूव,
यः ते दिवि सूर्ये महिमा सम्बभूव,
तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये स्वाहा देवेभ्यः ।। 2 ।।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वा,
एक इत् राजा जगतो बभूव।
यः ईशे अस्य द्विपदः चतुष्पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 3॥

आसीत् पिशङ्गिला सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 4)

का स्वित् आसीत् पूर्व चित्तिः, किम् स्वित् आसीत् बृहत् वयः।
का स्वित् आसीत् पिलिप्पिला, का स्वित् आसीत् पिशङ्गिला॥ 11॥

द्यौः आसीत् पूर्व चित्तिः, अश्व आसीत् बृहत् वयः।
अविः आसीत् पिलिप्पिला, रात्रिः आसीत् पिशङ्गिला॥ 12॥

शीते वाते पुनन् इव सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 8)

ऊर्ध्वाम् एनाम् उत् श्रापय, गिरौ भारम् हरन् इव।
अथ अस्यै मध्यम् एधताम्, शीते वाते पुनन् इव॥ 26॥

ऊर्ध्वम् एनम् उत् श्रायतात्, गिरौ भारम् हरन् इव।
अथ अस्य मध्यम् एजतु, शीते वाते पुनन् इव॥ 27॥

यत् अस्या अंहुभेद्याः, कृधु स्थूलम् उपातसत्।
मुष्कौ इत् अस्या एजतो, गोशफे शकुलौ इव॥ 28॥

सूचीभिः शम्यन्तु त्वा सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 9)

गायत्री त्रिष्टुप् जगती, अनुष्टुप् पङ्क्त्या सह।
बृहती उष्णिहा ककुप्, सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥ 33॥

द्विपदा याः चतुष्पदाः, त्रिपदा याः च षट्पदाः।
विच्छन्दा याः च सच्छन्दाः, सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥ 34॥

महानाम्न्यो रेवत्यो, विश्वा आशाः प्रभूवरीः।
मैघीः विद्युतो वाचः, सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥ 35॥

नार्यः ते पत्नयो लोम, वि चिन्वन्तु मनीषया।
देवानाम् पत्नयो दिशः, सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥ 36॥

आवपनम् महत् सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 12)

कः स्वित् एकाकी चरति, क उ स्वित् जायते पुनः।
किम् स्वित् हिमस्य भेषजम्, किम् उ आवपनम् महत्॥ 45॥

सूर्य एकाकी चरति, चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निः हिमस्य भेषजम्, भूमिः आवपनम् महत्॥ 46॥

मात्रा न विद्यते सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 12)

किम् स्वित् सूर्यसमम् ज्योतिः, किम् समुद्रसमम् सरः।
किम् स्वित् पृथिव्यै वर्षीयः, कस्य मात्रा न विद्यते॥ 47॥

ब्रह्म सूर्य-समम् ज्योतिः, द्यौः समुद्र-समम् सरः।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान्, गोः तु मात्रा न विद्यते॥ 48॥

आसीत् पिशङ्गिला सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 13)

का स्वित् आसीत् पूर्व चित्तिः, किम् स्वित् आसीत् बृहत् वयः।
का स्वित् आसीत् पिलिप्पिला, का स्वित् आसीत् पिशङ्गिला॥ 53॥

द्यौः आसीत् पूर्व चित्तिः, अश्व आसीत् बृहत् वयः।
अविः आसीत् पिलिप्पिला, रात्रिः आसीत् पिशङ्गिला॥ 54॥

पन्थाम् वि सर्पति सूक्त

(यजुर्वेद, त्रयोविंशो अध्यायः, सूक्त 13)

का ईम् अरे पिशङ्गिला, का ईम् कुरु-पिशङ्गिला।
कः ईम् आ स्कन्दम् अर्षति, कः ईम् पन्थाम् वि सर्पति॥ 55॥

अजा अरे पिशङ्गिला, श्वावित् कुरु-पिशङ्गिला।
शशः आ स्कन्दम् अर्षति, अहिः पन्थाम् वि सर्पति॥ 56॥

कति अस्य विष्ठाः कति अक्षराणि, कति होमासः कतिधा समिद्धः।
यज्ञस्य त्वा विदथा पृच्छम् अत्र, कति होतारः ऋतुशो यजन्ति॥ 57।

षट् अस्य विष्ठाः शतम् अक्षराणि, अशीतिः होमाः समिधो ह तिस्रः।
यज्ञस्य ते विदथा प्र ब्रवीमि, सप्त होतारः ऋतुशो यजन्ति॥ 58॥

को अस्य वेद भुवनस्य नाभिम्, को द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्।
कः सूर्यस्य वेद बृहतो जनित्रम्, को वेद चन्द्रमसम् यतोजाः॥ 59॥

ॐ

अथ पञ्चविंशो अध्यायः

कस्मै देवाय हविषा विधेम सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चविंशो अध्यायः, सूक्त 3)

हिरण्यगर्भः सम् अवर्त्तत अग्रे,
भूतस्य जातः पतिः एकः आसीत्।
स दाधार पृथिवीम् द्याम् उत इमाम्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 10॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वा,
एक इत् राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदः चतुष्पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 11॥

यस्य इमे हिमवन्तो महित्वा,
यस्य समुद्रम् रसया सह आहुः।
यस्य इमाः प्रदिशो यस्य बाहू,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 12॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व,
उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः।
यस्य छाया अमृतम् यस्य मृत्युः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 13॥

अस्तु सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चविंशो अध्यायः, सूक्त 7)

यत् वाजिनो दाम सन्दानम् अर्वतो,
या शीर्षण्या रशना रज्जुः अस्य।
यत् वा घ अस्य प्रभृतम् आस्ये,
तृणम् सर्वा ता ते अपि देवेषु अस्तु॥ 31॥

यत् अश्वस्य क्रविषो मक्षिका आश,
यत् वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तम् अस्ति।
यत् हस्तयोः शमितुः यत् नखेषु,
सर्वा ता ते अपि देवेषु अस्तु॥ 32

यत् ऊवध्यम् उदरस्य अपवाती,
यः आमस्य क्रविषो गन्धो अस्ति।
सुकृता तत् शमितारः कृण्वन्तु,

उत मेधम् शृतपाकम् पचन्तु॥ 33॥

यत् ते गात्रात् अग्निना पच्यमानात्,
अभि शूलम् निहतस्य अव-धावति।
मा तत् भूम्याम् आ श्रिषत् मा तृणेषु,
देवेभ्यः तत् उशद्भ्यो रातम् अस्तु॥ 34॥

अस्तु सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चविंशो अध्यायः, सूक्त 8)

यत् निः ईक्षणम् माँस्पचन्या उखाया,
या पात्राणि यूष्ण आसेचनानि।
ऊष्मण्या अपिधाना चरूणाम्,
अङ्काः सूनाः परि भूषन्ति अश्वम्॥ 36॥

मा त्वा अग्निः ध्वनयीत् धूमगन्धिः,
मा उखा भ्राजन्ती अभि विक्त जघ्रिः।
इष्टम् वीतम् अभिगूर्तम् वषट्कृतम्,
तम् देवासः प्रति गृभ्णन्ति अश्वम्॥ 37॥

ॐ

षड्विंशो अध्यायः

एषः ते योनिः इन्द्राय त्वा गोमते सूक्त

(यजुर्वेद, षड्विंशो अध्यायः, सूक्त 1)

इन्द्र गोमन् इह आ याहि, पिब सोमम् शतक्रतो।
विद्यत्भिः ग्रावभिः सुतम्।
उपयामगृहीतः असि इन्द्राय त्वा गोमते,
एषः ते योनिः इन्द्राय त्वा गोमते॥4॥

इन्द्र आ याहि वृत्रहन्, पिबा सोमम् शतक्रतो।
गोमत्भिः ग्रावभिः सुतम्।
उपयामगृहीतः असि इन्द्राय त्वा गोमते,
एषः ते योनिः इन्द्राय त्वा गोमते॥5॥

ऋतावानम् वैश्वानरम्, ऋतस्य ज्योतिषः पतिम्।
अजस्त्रम् घर्मम् ईमहे।
उपयामगृहीतः असि वैश्वानराय त्वा,
एषः ते योनिः वैश्वानराय त्वा॥6॥

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा, हि कम् भुवनानाम् अभिश्रीः।
इतः जातः विश्वम् इदम् वि चष्टे, वैश्वानरः यतते सूर्येण।
उपयामगृहीतः असि वैश्वानराय त्वा,

एषः ते योनिः वैश्वानराय त्वा॥7॥

वैश्वानरः नः ऊतय आ प्र यातु परावतः।
अग्निः उक्थेन वाहसा।
उपयामगृहीतः असि वैश्वानराय त्वा,
एष त्वा योनिः वैश्वानराय त्वा॥8॥

अग्निः ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरः हितः।
तम् ईमहे महागयम्।
उपयामगृहीतः असि अग्नये त्वा वर्चसे,
एषः ते योनिः अग्नये त्वा वर्चसे॥9॥

महान् इन्द्रः वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु।
हन्तु पाप्मानम् यः अस्मान् द्वेष्टि।
उपयामगृहीतः असि महेन्द्राय त्वा,
एषः ते योनिः महेन्द्राय त्वा॥10॥

कस्मै देवाय हविषा विधेम सूक्त

(यजुर्वेद, षड्विंशो अध्यायः, सूक्त 4)

आपः ह यत् बृहतीः विश्वम् आयन्,
गर्भम् दधानाः जनयन्तीः अग्निम्।
ततः देवानाम् सम् अवर्तत असुः एकः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥25॥

यः चित् आपः महिना पर्यपश्यत्,
दक्षम् दधानाः जनयन्तीः यज्ञम्।
यः देवेषु अधि देवः एकः आसीत्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥26॥

ॐ

अथ अष्टाविंशो अध्यायः

वेतु आज्यस्य होतः यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 1)

होता यक्षत् समिधा इन्द्रम्, इडः पदे नाभा पृथिव्या अधि।
दिवो वर्ष्मन् सम् इध्यते, ओजिष्ठः चर्षणीसहाम्,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥1॥

होता यक्षत् तनूनपातम्, ऊतिभिः जेतारम् अपराजितम्।
इन्द्रम् देवम् स्वर्विदम्, पथिभिः मधुमत्तमैः,
नराशंसेन तेजसा, वेतु आज्यस्य होतः यज ॥2॥

होता यक्षत् इडाभिः इन्द्रम्, ईडितम् आजुह्वानम् अमर्त्यम्।
देवो देवैः सवीर्यो, वज्रहस्तः पुरन्दरो,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥3॥

होता यक्षत् बर्हिषि इन्द्रम्, निषद्वरम् वृषभम् नर्यापसम्।
वसुभी रुद्रैः आदित्यैः सयुग्भिः, बर्हिः आ असदत् वेतु,
आज्यस्य होतः यज ॥4॥

होता यक्षत् ओजो न वीर्यम्, सहो द्वारः इन्द्रम् अवर्द्धयन्।
सुप्रायणा अस्मिन् यज्ञे, वि श्रयन्ताम् ऋतावृधो,
द्वारः इन्द्राय मीढुषे, व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥5॥

आज्यस्य होतः यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 2)

होता यक्षत् उषे इन्द्रस्य, धेनू सुदुघे मातरा मही।
सवातरौ न तेजसा, वत्सम् इन्द्रम् अवर्द्धताम्,
वीताम् आज्यस्य होतः यज ॥6॥

होता यक्षत् दैव्या होतारा भिषजा, सखाया हविषा इन्द्रम् भिषज्यतः।
कवी देवौ प्रचेतसौ, इन्द्राय धत्त इन्द्रियम्,
वीताम् आज्यस्य होतः यज ॥7॥

होता यक्षत् तिस्रो देवीः न भेषजम्, त्रयः त्रिधातवो अपसः,
इडा सरस्वती भारती महीः।
इन्द्रपत्नीः हविष्मतीः, व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥8॥

होता यक्षत् त्वष्टारम् इन्द्रम् देवम्, भिषजम् सुयजम् घृतश्रियम्।
पुरु-रूपम् सुरेतसम् मघोनम्, इन्द्राय त्वष्टा दधत् इन्द्रियाणि,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥9॥

होता यक्षत् वनस्पतिम् शमितारम्, शतक्रतुम् धियो जोष्टारम् इन्द्रियम्।
मध्वा समञ्जन् पथिभिः सुगेभिः, स्वदाति यज्ञम् मधुना घृतेन,
वेतु आज्यस्य होतः यज॥10॥

यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 3)

होता यक्षत् इन्द्रम् स्वाहा, आज्यस्य मेदसः स्वाहा,
स्तोकानाम् स्वाहा स्वाहा, कृतीनाम् स्वाहा हव्यसूक्तीनाम्।
स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणाः, इन्द्र आज्यस्य, व्यन्तु होतः यज॥11॥

देवम् बर्हिः इन्द्रम्, सुदेवम् देवैः वीरवत्,
स्तीर्णम् वेद्याम् अवर्द्धयत्।
वस्तोः वृतम् प्र अक्तोः, भृतम् राया बर्हिष्मतो,
अति अगात् वसुवने, वसुधेयस्य वेतु यज॥12॥

देवीः द्वारः इन्द्रम् सङ्घाते, वीड्वीः यामन् अवर्द्धयन्।
आ वत्सेन तरुणेन, कुमारेण च, मीवता अप अर्वाणम् रेणु ककाटम्,
नुदन्ताम् वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥13॥

देवी उषासा-नक्ता इन्द्रम्, यज्ञे प्रयति अह्वेताम्।
दैवीः विशः प्र अयासिष्टाम्, सुप्रीते सुधिते वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥14॥

देवी ज्योष्ट्री वसुधिती, देवम् इन्द्रम् अवर्धताम्।
अयावि अन्या अघा, द्वेषांसि आ अन्या वक्षत्,
वसु वार्याणि यजमानाय शिक्षिते वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥15॥

यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 4)

देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघे, पयसा इन्द्रम् अवर्द्धताम्।
इषम् ऊर्जम् अन्या वक्षत्, सग्धिम् सपीतिम् अन्या नवेन,
पूर्वम् दयमाने, पुराणेन नवम्, अधाताम् ऊर्जम् ऊर्जाहुती ऊर्जयमाने,
वसु वार्याणि यजमानाय, शिक्षिते वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज॥16॥

देवा दैव्या होतारा, देवम् इन्द्रम् अवर्द्धताम्।
हताघशंसौ आ अभार्ष्टाम्, वसु वार्याणि यजमानाय,
शिक्षितौ वसुवने, वसुधेयस्य वीताम् यज॥17॥

देवीः तिस्रः तिस्रो देवीः, पतिम् इन्द्रम् अवर्धयन्।
अस्पृक्षत् भारती दिवम् रुद्रैः यज्ञम् सरस्वती इडा,

वसुमती गृहान् वसुवने, वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥18॥

देवः इन्द्रो नराशंसः त्रिवरूथः,त्रिबन्धुरो देवम् इन्द्रम् अवर्धयन्।
शतेन शितिपृष्ठानाम्, आहितः सहस्रेण प्र वर्तते,
मित्रावरुणा इत् अस्य, होत्रम् अर्हतो बृहस्पतिः स्तोत्रम्,
अश्विना अध्वर्यवम् वसुवने, वसुधेयस्य वेतु यज ॥19॥

देवो देवैः वनस्पतिः, हिरण्यपर्णो मधुशाखः सुपिप्पलो,
देवम् इन्द्रम् अवर्धयत्।
दिवम् अग्रेण अस्पृक्षत्, आ अन्तरिक्षम् पृथिवीम्,
अदृंहीत् वसुवने, वसुधेयस्य वेतु यज ॥20॥

वसुधेयस्य वेतु यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 5)

देवम् बर्हिः वारितीनाम्, देवम् इन्द्रम् अवर्धयत्।
स्वासस्थम् इन्द्रेण आसन्नम्, अन्या बर्हींषि अभि अभूत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यजः ॥21॥

देवो अग्निः स्विष्टकृत, देव इन्द्रम् अवर्धयत्।
स्विष्टम् कुर्वन् स्विष्टकृत् स्विष्टम्, अद्य करोतु नो वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज ॥22॥

अग्निम् अद्य होतारम् अवृणीत, अयम् यजमानः,

पचन् पक्तीः, पचन् पुरोडाशम्, बध्नन् इन्द्राय छागम्।
सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिः, अभवत् इन्द्राय छागेन।
अद्यत् तम् मेदस्तः प्रति पचत्,
अग्रभीत् अवीवृधत्, पुरोडाशेन त्वाम् अद्य ऋषे ॥23॥

वेतु आज्यस्य होतः यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 6)

होता यक्षत् समिधानम् महत्, यशः सुसमिद्धम् वरेण्यम्,
अग्निम् इन्द्रम् वयोधसम्।
गायत्रीम् छन्दः इन्द्रियम्, त्रि अविम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥24॥

होता यक्षत् तनूनपातम् उद्भिदम्, यम् गर्भम् अदितिः दधे,
शुचिम् इन्द्रम् वयोधसम्।
उष्णिहम् छन्दः इन्द्रियम्, दित्यवाहम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥25॥

होता यक्षत् ईडेन्यम् ईडितम्, वृत्रहन्तमम् इडाभिः ईड्यम्,
सहः सोमम् इन्द्रम् वयोधसम्।
अनुष्टुभम् छन्दः इन्द्रियम्, पञ्चाविम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आजस्य होतः यज ॥26॥

आज्यस्य होतः यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 7)

होता यक्षत् सुबर्हिषम्, पूषण्वन्तम् अमर्त्यम्,
सीदन्तम् बर्हिषि प्रिये, अमृता इन्द्रम् वयोधसम्।
बृहतीम् छन्दः इन्द्रियम्, त्रिवत्सम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥27॥

होता यक्षत् व्यचस्वतीः, सुप्रायणा ऋतावृधो,
द्वारो देवीः हिरण्ययीः, ब्रह्माणम् इन्द्रम् वयोधसम्।
पंक्तिम् छन्दः इह इन्द्रियम्, तुर्य वाहम् गाम वयो दधत्,
व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥28॥

होता यक्षत् सुपेशसा, सुशिल्पे बृहती,
उभे नक्तोषासा न दर्शते, विश्वम् इन्द्रम् वयोधसम्।
त्रिष्टुभम् छन्दः इह इन्द्रियम्, पष्ठवाहम् गाम् वयो दधत्,
वीताम् आज्यस्य होतः यज ॥29॥

आज्यस्य होतः यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 8)

होता यक्षत् प्रचेतसा, देवानाम् उत्तमम्,
यशो होतारा दैव्या कवी, सयुजा इन्द्रम् वयोधसम्।
जगतीम् छन्दः इन्द्रियम्, अनड्वाहम् गाम् वयो दधत्,
वीताम् आज्यस्य होतः यज ॥30॥

होता यक्षत् पेशस्वतीः, तिस्रो देवीः हिरण्ययीः,
भारतीः बृहतीः महीः, पतिम् इन्द्रम् वयोधसम्।
विराजम् छन्दः इह इन्द्रियम्, धेनुम् गाम् न वयो दधत्,
व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥31॥

होता यक्षत् सुरेतसम्, त्वष्टारम् पुष्टिवर्द्धनम्,
रूपाणि बिभ्रतम् पृथक्, पुष्टिम् इन्द्रम् वयोधसम्।
द्विपदम् छन्दः इन्द्रियम्, उक्षाणम् गाम् न वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥32॥

आज्यस्य होतः यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 9)

होता यक्षत् वनस्पतिम्, शमितारम् शतक्रतुम्,
हिरण्यपर्णम् उक्थिनम्, रशनाम् बिभ्रतम् वशिम्,
भगम् इन्द्रम् वयोधसम्।
ककुभम् छन्दः इह इन्द्रियम्, वशाम् वेहतम् गाम् वयो दधत्,
वेतु आज्यस्य होतः यज ॥33॥

होता यक्षत् स्वाहाकृतीः, अग्निम् गृहपतिम्,
पृथक् वरुणम् भेषजम् कविम्, क्षत्रम् इन्द्रम् वयोधसम्।
अतिछन्दसम् छन्दः इन्द्रियम्, बृहत् ऋषभम् गाम् वयो दधत्,
व्यन्तु आज्यस्य होतः यज ॥34॥

देवम् बर्हिः वयोधसम्, देवम् इन्द्रम् अवर्धयत्।
गायत्र्या छन्दसा इन्द्रियम्, चक्षुः इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज ॥35॥

आज्यस्य होतः यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 10)

देवीः द्वारो वयोधसम्, शुचिम् इन्द्रम् अवर्धयत्।
उष्णिहा छन्दसा इन्द्रियम्, प्राणम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥36॥

देवी उषासानक्ता देवम् इन्द्रम्वयोधसम्,
देवी देवम् अवर्धताम्।
अनुष्टुभा छन्दसा इन्द्रियम्, बलम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज ॥37॥

देवी जोष्ट्री वसुधिती, देवम् इन्द्रम् वयोधसम्,
देवी देवम् अवर्धताम्।
बृहत्या छन्दसा इन्द्रियम्, श्रोत्रम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज ॥38॥

देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघे, पयसा इन्द्रम् वयोधसम्,
देवी देवम् अवर्धताम्।
पङ्क्त्या छन्दसा इन्द्रियम्, शुक्रम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,

वसुधेयस्य वीताम् यज ॥39॥

देवा दैव्या होतारा, देवम् इन्द्रम् वयोधसम्,
देवौ देवम् अवर्धताम्।
त्रिष्टुभा छन्दसा इन्द्रियम्, त्विषिम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वीताम् यज ॥40॥

वसुधेयस्य वेतु यज सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 11)

देवीः तिस्त्रः तिस्त्रो देवीः वयोधसम् पतिम् इन्द्रम् अवर्धयन्।
जगत्या छन्दसा इन्द्रियम्, शूषम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥41॥

देवो नराशंसो, देवम् इन्द्रम् वयोधसम्, देवो देवम् अवर्द्धयत्।
विराजा छन्दसा इन्द्रियम्, रूपम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज ॥42॥

देवो वनस्पतिः, देवम् इन्द्रम् वयोधसम्, देवो देवम् अवर्धयत्।
द्विपदा छन्दसा इन्द्रियम्, भगम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज ॥43॥

देवम् बर्हिः वारितीनाम्, देवम् इन्द्रम् वयोधसम्, देवम् देवम् अवर्धयत्।
ककुभा छन्दसा इन्द्रियम्, यश इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,

वसुधेयस्य वेतु यज ।।44।

देवो अग्निः स्विष्टकृत्, देवम् इन्द्रम् वयोधसम्, देवो देवम् अवर्धयत्।
अति छन्दसा छन्दसा इन्द्रियम्, क्षत्रम् इन्द्रे वयो दधत् वसुवने,
वसुधेयस्य वेतु यज ।।45।।

पेत्वः सूक्त

(यजुर्वेद, अष्टाविंशो अध्यायः, सूक्त 12)

आग्नेयः कृष्णग्रीवः, सारस्वती मेषी,
बभ्रुः सौम्यः, पौष्णः श्यामः,
शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः, शिल्पो वैश्वदेवः,
ऐन्द्रो अरुणो, मारुतः कल्माषः,
ऐन्द्राग्नः सम्हितो, अधोरामः सावित्रो,
वारुणः कृष्णः, एकशितिपात् पेत्वः ।।58।।

अग्नये अनीकवते रोहिताञ्जिः अनड्वान्,
अधोरामौ सावित्रौ, पौष्णौ रजतनाभी,
वैश्वदेवौ पिशङ्गौ, तूपरौ मारुतः कल्माषः,
आग्नेय कृष्णो अजः, सारस्वती मेषी, वारुणः पेत्वः ।।59।।

ॐ

अथ एकत्रिंशो अध्यायः

अजायत सूक्त

(यजुर्वेद, एकत्रिंशो अध्यायः, सूक्त 4)

ब्राह्मणो अस्य मुखम् आसीत्,बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तत् अस्य यत् वैश्यः, पद्भ्याम् शूद्रो अजायत ।।11।।

चन्द्रमा मनसो जातः, चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्रात् वायुः च प्राणः च, मुखात् अग्निः अजायत ।।12।।

ॐ

अथ द्वात्रिंशो अध्यायः

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, द्वात्रिंशो अध्यायः, सूक्त 4)

सदसः पतिम् अद्भुतम्, प्रियम् इन्द्रस्य काम्यम्।
सनिम् मेधाम् अयाषिम् स्वाहा ।।13।।

याम् मेधाम् देवगणाः, पितरः च उपासते।
तया माम् अद्य मेधया, अग्ने मेधाविनम् कुरु स्वाहा ।।14।।

मेधाम् मे वरुणो ददातु, मेधाम् अग्निः प्रजापतिः।
मेधाम् इन्द्रः च वायुः च, मेधाम् धाता ददातु मे स्वाहा॥15॥

इदम् मे ब्रह्म च क्षत्रम्, च उभे श्रियम् अश्नुताम्।
मयि देवा दधतु श्रियम्, उत्तमाम् तस्यै ते स्वाहा॥16॥

ॐ

अथ चतुस्त्रिंशो अध्यायः

शिवसंकल्पसूक्त

(यजुर्वेद, चतुस्त्रिंशो अध्यायः, सूक्त 1)

यत् जाग्रतो दूरम् उत् एति दैवम्,
तत् उ सुप्तस्य तथा एव एति।
दूरम् गमम् ज्योतिषाम् ज्योतिः एकम्,
तत् मे मनः शिव-संकल्पम् अस्तु॥1॥

येन कर्माणि अपसो मनीषिणो,
यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत् अपूर्वम् यक्षम् अन्तः प्रजानाम्,
तत् मे मनः शिव-संकल्पम् अस्तु॥2॥

यत् प्रज्ञानम् उत चेतो धृतिः च,
यत् ज्योतिः अन्तः अमृतम् प्रजासु।

यस्मात् न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते,
तत् मे मनः शिव-संकल्पम् अस्तु॥3॥

येन इदम् भूतम् भुवनम् भविष्यत्,
परिगृहीतम् अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञः तायते सप्तहोता,
तत् मे मनः शिव-संकल्पम् अस्तु॥4॥

यस्मिन् ऋचः साम यजूंषि यस्मिन्,
प्रतिष्ठिता रथनाभौ इव अराः।
यस्मिन् चित्तम् सर्वम् ओतम् प्रजानाम्,
तत् मे मनः शिव-संकल्पम् अस्तु॥5॥

सुषारथिः अश्वान् इव यत् मनुष्यान्,
नेनीयते अभीशुभिः वाजिनः इव।
हृत् प्रतिष्ठम् यत् अजिरम् जविष्ठम्,
तत् मे मनः शिव-संकल्पम् अस्तु॥6॥

स्याम सूक्त

(यजुर्वेद, चतुस्त्रिंशो अध्यायः, सूक्त 7)

भग प्रणेतः भग सत्यराधो, भग इमाम् धियम्ऋ
उत् अव आ ददत् नः।
भग प्र नो जनय गोभिः अश्वैः,

भग प्र नृभिः नृवन्तः स्याम ॥36॥

उत इदानीम् भगवन्तः स्याम,
उत प्रपित्वे उत मध्ये अह्नाम्,
उत उदिता मघवन् सूर्यस्य,
वयम् देवानाम् सुमतौ स्याम ॥37॥

ॐ

अथ पञ्चत्रिंशो अध्यायः

उस्त्रियाः सूक्त

(यजुर्वेद, पञ्चत्रिंशो अध्यायः, सूक्त 1)

सविता ते शरीरेभ्यः, पृथिव्याम् लोकम् इच्छतु।
तस्मै युज्यन्ताम् उस्त्रियाः ॥2॥

वायुः पुनातु सविता पुनातु,
अग्नेः भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा।
वि मुच्यन्ताम् उस्त्रियाः ॥3॥

ॐ

अथ सप्तत्रिंशो अध्यायः

मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तत्रिंशो अध्यायः, सूक्त 1)

देवी द्यावापृथिवी, मखस्य वाम् अद्य,
शिरो राध्यासम् देवयजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥3॥

देव्यो वम्र्यो भूतस्य प्रथमजा, मखस्य वो अद्य शिरो,
राध्यासम्, देवयजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥4॥

इयति अग्रे आसीत्, मखस्य ते अद्य शिरो,
राध्यासम् देवयजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥5॥

इन्द्रस्य ओजः स्थ, मखस्य वो अद्य शिरो,
राध्यासम् देवयजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥6॥

प्र एतु ब्रह्मणः पतिः, प्र देवी एतु सूनृता।
अच्छा वीरम् नर्य्यम् पङ्क्तिराधसम्, देवा यज्ञम् नयन्तु नः।

मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥7॥

मखस्य शिरो असि, मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे,
मखस्य शिरो असि, मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥8॥

अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना, धूपयामि देवयजने पृथिव्याः।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥9॥

ऋजवे त्वा साधवे त्वा सुक्षित्यै त्वा।
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥10॥

तपो असि सूक्त

(यजुर्वेद, सप्तत्रिंशो अध्यायः, सूक्त 2)

यमाय त्वा मखाय त्वा, सूर्यस्य त्वा तपसे।
देवः त्वा सविता मध्वा अनक्तु, पृथिव्याः सम् स्पृशः पाहि।
अर्चिः असि शोचिः असिः तपो असि ॥11॥

अनाधृष्टा पुरस्तात् अग्नेः आधिपत्य आयुः मे दाः।
पुत्रवती दक्षिणतः इन्द्रस्य आधिपत्ये प्रजाम् मे दाः।
सुषदा पश्चात् देवस्य सवितुः आधिपत्ये चक्षुः में दाः।
आश्रुतिः उत्तरतो धातुः आधिपत्ये रायस्पोषम् मे दाः।
विधृतिः उपरिष्टात् बृहस्पतेः आधिपत्ये ओजो मे दाः।
विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यः पाहि, मनोः अश्वा असि ॥12॥

ॐ

अथ एकोनचत्वारिंशो अध्यायः

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, एकोनचत्वारिंशो अध्यायः, सूक्त 1)

स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः।
पृथिव्यै स्वाहा अग्नये स्वाहा,
अन्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा।
दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥1॥

दिग्भ्यः स्वाहा, चन्द्राय स्वाहा,
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा, अद्भ्यः स्वाहा, वरुणाय स्वाहा।
नाभ्यै स्वाहा, पूताय स्वाहा ॥2॥

वाचे स्वाहा, प्राणाय स्वाहा, प्राणाय स्वाहा।
चक्षुषे स्वाहा, चक्षुषे स्वाहा,
श्रोत्राय स्वाहा, श्रोत्राय स्वाहा ॥3॥

मनसः कामम् आकूतिम्, वाचः सत्यम् अशीय।
पशूनाम् रूपम्, अन्नस्य रसो,
यशः श्रीः श्रयताम् मयि स्वाहा ॥4॥

स्वाहा सूक्त

(यजुर्वेद, एकोनचत्वारिंशो अध्यायः, सूक्त 3)

लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा, त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा,
लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा, मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा।
मांसेभ्यः स्वाहा, मांसेभ्यः स्वाहा, स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा,
अस्थभ्यः स्वाहा, अस्थभ्यः स्वाहा, मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा।
रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ।।10।।

आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा,
संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहा, उद्यासाय स्वाहा।
शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा,
शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ।।11।।

तपसे स्वाहा, तप्यते स्वाहा, तप्यमानाय स्वाहा,
तप्ताय स्वाहा, घर्माय स्वाहा।
निष्कृत्यै स्वाहा, प्रायश्चित्यै स्वाहा, भेषजाय स्वाहा ।।12।।

यमाय स्वाहा, अन्तकाय स्वाहा, मृत्यवे स्वाहा।
ब्रह्मणे स्वाहा, ब्रह्महत्यायै स्वाहा,
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, द्यावापृथिवीभ्याम् स्वाहा ।।13।।

ॐ

स्वामी शरण कृत साहित्य

मो. 9839105629, 8687849004

1. ऋग्वेद भाष्य :- ऋग्वेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण।

(बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

2. सामवेद भाष्य :- सामवेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद।

मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

3. अथर्ववेद भाष्य :- अथर्ववेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

4. यजुर्वेद भाष्य :- यजुर्वेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

5. वेदायन भाष्य :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

6. वेदायन प्रवचन :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। इसके साथ ही इन मन्त्रों पर विस्तृत प्रवचन भी इस पुस्तक में संकलित हैं। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है। सभी के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

7. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद, भावार्थ सहित):- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल

पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। रु. 100.00

8. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद) :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। वेदपाठ तथा उपासना के लिए। **रु. 100.00**

9. वेद सूक्तायन :- चारो वेदों से चुने हुए 15 प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ (छन्द पाठ), मन्त्रार्थ, विशेष भावार्थ-व्याख्या, व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। **रु. 100.00**

10. यजुर्वेद एकादशी :- यजुर्वेद के अन्तिम 11 अध्यायों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

11. चतुर्वेद सरल पाठ :- प्रथम बार प्रस्तुत सन्धियों से मुक्त चारों वेदों का सरल पाठ जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। (बृहद् आकार) **रु. 2500.00**

12. ऋग्वेद सरल पाठ :- ऋग्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। (बृहद आकार)**रु 900.00**

13. सामवेद सरल पाठ :- सामवेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 500.00**

14. अथर्ववेद सरल पाठ :- अथर्ववेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।

(बृहद आकार) **रु. 700.00**

15. यजुर्वेद सरल पाठ :- यजुर्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 700.00**

16. वैदिक धात्वादि कोश :- पाणिनि तथा काशकृत्स्न प्रोक्त धातुपाठों को समाहित कर सम्पूर्ण धातुकोश तैयार किया गया है। उपसर्ग, अव्यय, संख्या, सर्वनाम शब्द भी दिये गये हैं। इसकी सहायता से वेद सहित सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का अर्थ किया जा सकता है। अत्यन्त उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

17. वैदिक शब्दकोश :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश। (वृहद आकार) **रु. 900.00**

18. वैदिक शब्दकोश (लघु संस्करण) :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश। **रु. 200.00**

19. सरल संस्कृत व्याकरण :- व्याकरण के मूल तत्वों पर आधारित इस पद्धति से शब्द रूप, धातु रूप, पाणिनीय सूत्र रटे बिना एक मास में संस्कृत पढ़ना, लिखना, बोलना सीख सकते हैं। दशकों के अनुभव के बाद प्रस्तुत उपयोगी चमत्कारिक

व्याकरण प्रणाली। रु. 95.00

20. वैदिक इतिहास :- ब्रह्मा व मनु से आरम्भ कर बुद्ध तक का सम्पूर्ण क्रमबद्ध इतिहास एक पुस्तक में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है। सूर्यवंश की 128 पीढ़ियों का इतिहास प्रथम बार प्रस्तुत किया है। सूर्यवंश, चन्द्रवंश की शाखाओं सहित मनु से भोज तक सम्पूर्ण वंशावली भी दी गयी है। **रु. 200.00**

21. ओम् साधना :- ओम् साधना, वैदिक संस्कृति, वैदिक आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना। **रु. 200.00**

22. चिन्तन प्रवाह :- वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन सम्बन्धी चिन्तन। **रु. 500.00**

23. वैदिक विज्ञान :- वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना। **रु. 50.00**

24. युगबोध :- प्रबन्ध काव्य। **रु. 300.00**

25. चेतना :- काव्य संकलन। **रु. 100.00**

26. नवांकुर :- काव्य संकलन। **रु. 20.00**

❖❖ ❖ ❖❖

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म॥

आगामी प्रकाशन योजना

1. वैदिक व्याकरण : पंचपाठी व्याकरण का समयानुकूल प्रस्तुतीकरण। अष्टाध्यायी सूत्रों का अनुवृत्ति सहित प्रस्तुतीकरण, जिससे प्रत्येक सूत्र स्वयम् ही सम्पूर्ण अर्थ स्पष्ट कर सके। व्यापक प्रभाव वाले सूत्रों को महत्व देते हुए, अपवादों को स्पष्ट करना तथा उनकी सीमाओं का स्पष्टीकरण करना। पंचपाठी की अन्य पुस्तकों का भी इसी भाँति सम्पादन तथा उणादि कोष आदि का अकारादि क्रम से प्रस्तुतीकरण।

2. वैदिक महापुराण : पुराण विद्या का व्यापक शोधपरक अध्ययन कर पंच-लक्षणों के आधार पर सम्पादन।

3. वैदिक जीवन : वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन के साथ ही वैदिक साहित्य का सम्पूर्ण परिचय।

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म॥

❖❖ ❖ ❖❖